ॐ
श्री सत्नाम साक्षी
हिन्दी भाषा में श्री प्रेम प्रकाश सम्प्रदाय की एकमात्र अधिकृत
आध्यात्मिक जगत की मासिक पत्रिका

15 मार्च 2003

वार्षिक शुल्क : रु. 50 (भारतवर्ष में)
वार्षिक शुल्क : रु. 350 (विदेश में)

वर्ष 23 अंक 5

प्रेम प्रकाश संदेश

संस्थापक : सद्गुरु स्वामी शांतिप्रकाशजी महाराज



श्री रामनवमी
शुक्रवार, ११ अप्रैल २००३



भगवान झूलेलाल जयन्ती "चेट्री चण्ड"
गुरुवार, ३ अप्रैल २००३

स्नेही मित्रों का हितकारी वचन अवश्य मानना चाहिये

बहुत पहले की बात है, मगध देश में फुल्लोत्पल नामक एक सरोवर था। उसमें कम्बुग्रीव नामक एक कछुआ रहा करता था। उसकी मित्रता संकट और विकट नामके दो हंसों से हो गयी थी, जो नित्य जलाशय के तटपर आकर उसे देवर्षियों एवं महर्षियों के पावन चरित्र तथा आख्यान सुनाया करते थे। सायंकाल होने पर वे अपने निवास स्थान पर चले जाते थे। इस प्रकार तीनों मित्रों के दिन आनन्दपूर्वक बीत रहे थे। परन्तु समय सदैव एक–सा नहीं रहता। एक वर्ष वर्षा नहीं हुई, सरोवर में बहुत थोड़ा ही जल बचा। उस पर भी एक दिन कुछ धीवरों की कुदृष्टि उस सरोवर पर पड़ गयी। उन्होंने सलाह की कि कल प्रातः ही जाल आदि लगाकर मछली और कछुओं का शिकार किया जाय। कम्बुग्रीव उनकी बातें सुनकर भयभीत हो गया, उसने यह सब अपने दोनों मित्रों–संकट और विकट को बताया तथा उनसे कोई उपाय करने को कहा।

हंसों ने कहा– यहाँ से काफी दूरी पर एक सरोवर है, हम लोग प्रतिदिन वहाँ जाते हैं। कमल के सुन्दर फूलों से सुशोभित वह सरोवर अगाध जल से परिपूर्ण है, वहाँ आप प्रसन्नतापूर्वक रह सकते हैं और हम लोगों का सान्निध्य भी आपको मिलता रहेगा। परन्तु कठिनाई यह है कि आप अपनी मन्थर गति से वहाँ एक वर्ष में भी नहीं पहुँच सकेंगे। यह सुनकर कम्बुग्रीवने कहा कि मित्रों ! इसका एक उपाय है– मैं हलकी, किन्तु मजबूत लकड़ी को बीच में दाँतों से दबा लूँगा और आप दोनों उसके दोनों किनारों को पकड़कर सरोवर की ओर उड़ चलियेगा। इस प्रकार मैं भी वहाँ पहुँच जाऊँगा। हंसों ने कहा– मित्र कुम्बुग्रीव ! आपकी योजना तो बहुत ही अच्छी है, परन्तु इस विषय में हमारी एक सलाह है। आपको यहाँ से सरोवरतक पहुँचने के पहले मौन धारण करना होगा। यदि उसके पहले आपने अपना मुख कुछ भी बोलने के लिये खोला तो नीचे गिर पड़ेंगे। कम्बुग्रीव के सलाह स्वीकार करने पर हंस उसे लेकर सरोवर की ओर उड़ चले।

रास्ते में एक स्थान पर चरवाहे गौएँ चरा रहे थे, कछुए को आकाश मार्ग से इस प्रकार जाते देख वे चिल्लाने लगे कि अगर यह गिर जाय तो इसे पकड़कर घर ले जाना चाहिये। उनके इस प्रकार के शोर को सुनकर कम्बुग्रीव को क्रोध आ गया। वह मित्रों का हितकारी वचन भूल गया और चरवाहों को सम्बोधित कर कहने लगा–'तुम लोगों को धूल ही फाँकनी पड़ेगी।' इतना कहते ही लकड़ी छूट जाने के कारण वह गिरा और मर गया। इसीलिये नीति कहती है–

सुहृदां हितकामानां यो वाक्यं नाभिनन्दति।
स कूर्म इव दुर्बुद्धिः काष्ठाद्भ्रष्टो विनश्यति।।

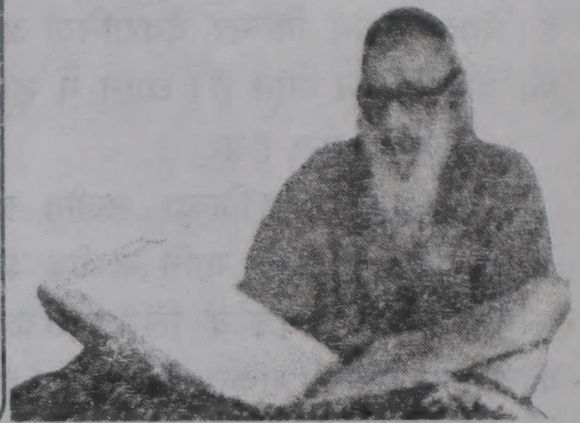
अर्थात् जो (मनुष्य) हितकारी मित्रों का वचन नहीं मानता, वह मूर्ख लकड़ी से गिरे हुए कछुए के समान मर जाता है। (हितोपदेश, संधिकथा)

धारावाहिक – 37

श्री प्रेमप्रकाश ग्रन्थ

राग प्रभाती भजन - 3

प्रात समय में जागी प्राणी, बोलो मुख से हरि का नाम।।टेक।।
प्रात काल उठ देव लोक में, सुर गण ध्यान लगाते हैं।
आपस में मिल हरि जस गावे, पीवत भरकर अमृत जाम।।
प्रात समय उठ सन्त सर्व ही, आतम देव ध्याते हैं।
मन चित्त लीन करे तिस माँही, देखत सब घट आतम राम।।
कहता टेऊँ प्रातकाल में, जागत को बड़भागी है।
जो जन जागे अमृत चाखे, पूर्ण हो सब तांके काम।।



व्याख्या :– श्री गुरु महाराज जी इस भजन में अमृत वेला, प्रातः काल की बड़ी महिमा गाते हैं। अमृत वेले की आध्यात्मिक दृष्टिकोण से काफी विशेषता है। वेदों में एक वचन है। **''अमृतस्य पुत्रः''**

तुम अमृत के पुत्र हो ! सारे दिन की भाग दौड़ के द तन से मन से थक कर शरीर चूर हो जाता है। रात क तो जैसे हमारे शरीर की हालत चुके हुये कारतूस तरह हो जाती है। खोखला, ऊर्जा विहीन, चारों ओर र गुल, भागमभाग, आपाधापी, इसमें परमात्मा को छोडो रीर की भी सुध रखना आसान नहीं लगता। तो फिर खिर साधक क्या करे। तो संत महापुरुष श्री गुरू हाराज राह सुझाते हैं, युक्ति बताते हैं, कि एक समय उस समय में बहुत कुछ किया जा सकता है। वो है ातः काल''। महापुरुष चौरासी लाख 88 हजार योनियों रात की उपमा देते हैं। पर मनुष्य योनि को दिन में भात की उपमा दी है, यही एक योनि है जिसमें जागा सकता है।

अमृत वेले में रात्रि के आखिरी पहर में जागकर जन करने वाले को भगवान श्री कृष्ण गीता में योगी की मा देते हैं।

संसार रूपी रात में परमात्मा प्रभात की तरह है। मनुष्य रूपी प्रभात, अमृत वेले की प्रभात में परमात्मा पी प्रभात से मिलन करे ! कर सकें ! इसलिये श्री गुरु हाराज जी ओजस्वी वाणी में फरमाते हैं कि– हे प्राणी, साधक, हे जिज्ञासु–जब प्रकृति परमात्मा के रस में भीगी हुई मदमस्त हवाओं के साथ नाच रही हो। तब तू भी उठ उस रस में अपनी साधना के रस को मिला, जब हरी हरी पत्तियों, हरे--भरे वृक्षों में ओस की बूंदों के साथ दमकते हुये चहुँ ओर हरियाली बिखेर रही हो। तब तू भी उठ उस हरियाली में उस श्री हरि को याद कर। जब मोर, पपीहा पियू–पियू की आवाज से अपने पिया को पुकारते हों। तब तू भी उठ ! जन्मों से बिछड़े अपने कृष्ण पिया को अपने प्राणों की पुकार का सन्देश भेज।

जब कोयल कुहूं–कुहूं की मीठी तान छेड़े। सारे आलम में अपना मधुर गान बिखेरे, कानों में मधुर रस का संचार करें। तब तू उठ, अपने हृदय में प्रेम का संचार कर अपने प्रेम की मधुरता का साथ लेकर गा–गा कर उस साहिब की महिमा में लीन हो जा। ऊर्जा का संचार कर।

प्रकृति के इस महोत्सव को देखने के लिये लालायित सूर्य नारायण अपनी लालिमा अपना तेज लेकर जब गगन पर विराजे। तब तू भी उठ अपने आसन पर विराज भजन सुमरन कर ताकि सूर्य की भाँति तेजोमय हो सकें। ज्ञान की किरणों से प्रदीप्तमान हो सके। हे जीव तू अमृत का पुत्र है। तो इस अमृत वेले में अपने अमृत मयी आत्मा से मिलन कर। अमृत वेले का शांत

वातावरण हृदय को आल्हादित करता है। और नीन्द में से उठते ही जो कार्य पहले किया जाये। उसकी स्मृति सारे दिन बनी रहती हैं सो चिंतन भी ना बिगड़े। केवल पृथ्वी पर ही नहीं स्वर्ग में भी अमृत वेले की बड़ी महिमा है। देवता गन्धर्व, किन्नर, देवरानियाँ आदि सभी परमात्मा की याद में डूब जाते हैं। ध्यान में डूब जाते हैं।

मृत – मरा हुआ

अ + मृत = जिन्दा, सजीव, प्राणों से भरा।

अमृत वेला = यानि सजीव, प्राणों से, ऊर्जा से भरा समय सो साधक के लिये प्रातःकाल से अच्छा और कौन–सा समय हो सकता है। साधना के लिये भीगी–भीगी ऋतु में, भीगे–भीगे मन से, उस प्यारे भगवान को कोई भाग्यवान ही पुकार सकता है।

इस समय को ब्रह्म महूर्त भी कहते हैं। जिज्ञासु, ब्रह्म हो जाने की जिज्ञासा वाले साधक के लिये, ब्रह्म को पाने का महूर्त है अमृत वेला ! इसलिये ये प्रातः काल का समय संतों को बड़ा ही प्यारा है।

हमारे प्यारे सद्गुरु स्वामी शांति प्रकाश जी महाराज शारीरिक दृष्टि से चाहे कितने भी बीमार हो जाते, पर अमृत वेले में उठने का उनका नियम कभी भंग नहीं हुआ! वर्ना जो खुद ब्रह्म हों ! उनके लिये क्या ब्रह्म महूर्त। वो जागे तब भी ब्रह्म वो सोये तब भी ब्रह्म, पर ब्रह्मवेत्ताओं की करुणा अथाह होती है। उनका सारा जीवन ही दूसरो को शिक्षा देने के लिये होता है। उनकी हर दैनिक क्रिय के पीछे साधकों को कुछ न कुछ सिखाना होता है इसलिये वे हर तकलीफ सहन कर लेते हैं। अमृत वेले में की गई प्रार्थना जरूर पूरी होती है।

तू भी दर्द रखी दिल अन्दर सत्गुरू खत पुका बन्दा अमृत वेले दर्द वन्दन जूँ दाहूँ सत्गुरु बुधन्द थी'' अमृत वेला समय ही है। जब भक्तों की पुकार क दर्द को सुना जाये। जब दीन होकर दुनिया से बेखब उस दाता को पुकारा जाये। तो वह सुने बिना रह ह नहीं सकता।

सो श्री गुरुमहाराज जी कहते हैं जिस बड़भाग को अमृत चखने की चाह हो वह अमृत वेले में अभ्या करे। वह अमृत वेले में भजन खास करे। अमृत वेले मैं ब्रह्म हूँ, मैं आत्मा हूँ। इसका अभ्यास करे। जो साध प्रेमी अमृत वेले में जागकर अभ्यास करेगा, प्रार्थना करेगा कीर्तन, शास्त्र का पठन–पाठन, पूजा आदि करेगा। उस के सारे कारज रास होंगे। मनोकामनायें पूर्ण होंगी।

सुबुह जा तूँ सांई, बेड़ा बनि लाईं।
पलव था त पायूँ, मुरादूँ पुजांई।।

इसी अरदास के साथ प्रार्थना के साथ हम जागें अमृत वेले में अमृत हो जायें।

प्रातःकालीन प्रार्थना

आशवन्दी गुरु तो दरि आई

आशवन्दी गुरु.............यह प्रार्थना प्रातः 7 बजे श्री गुरुधाम जयपुर में प्रतिदिन हुआ करती है साधकगण मनोइच्छित फल व शान्ति के लिये समय से पूर्व आकर इस प्रार्थना में शामिल होवें। स्वय अनुभव करके देखें कितना न अलौकिक सुख शान्ति व सारा दिन मन प्रसन्न चित रहता है।

प्रार्थना में अलौकिक शक्ति होती है। जिससे भगवान शीघ्र सुन लेते हैं। कैसा भी दुर्गम से दुर्गम कार्य हो अगर सच्ची श्रद्धा के साथ प्रार्थना की जाये तो भगवान उसके कार्य को सरल बना देते हैं। द्रोपदी ने भी राजसभ में भगवान को प्रार्थना की थी तभी भगवान ने स्वयं वस्त्र का रूप धारण करके द्रोपदी की रक्षा की। गज ने मा आधा नाम पुकारा, भगवान नंगे पांव दौड़कर आये और रक्षा की। ये सभी प्रार्थना की शक्ति है। जब–जब भी श्रद्ध भाव में जिन भी भक्तों ने भगवान से प्रार्थना की तब भगवान ने उनकी प्रार्थना सुनकर सदैव रक्षा की है।

कथा चूड़ाला शिखध्वज

आत्म तत्त्व की विविधता

धारावाहिक – 26

आत्मा का विषय एक अजीब सा विषय है, जो देखा तो गया नहीं सिर्फ सुना ही जाता है। सत्गुरु महाराज जी स्वयं अपने मुखारबिन्द से फरमाते थे कि किसी से पूछो कि भाई आत्मा देखा है बोले–कि देखा तो नहीं है सुना जरुर है। भाई जिससे सुना है उससे पूछो कि आपने आत्मा देखा है ? वो भी ये ही कहेगा की आत्मा देखा तो नहीं आत्मा के बारे में सुना ही है कोई विरला ही होगा जो आत्मा का अनुभव करता है। ऐसा कोई महापुरुष ही होगा जो आत्मा को अनुभव करके आत्मा में स्थित रहता है। आत्मा के जो विशेषण हैं, बहुत है और अपने जीवन में देखें तो वैसा कोई भी विशेषण हमारे जीवन में नहीं है जो आत्मा से मिलता हो।

अगर हम आत्मा में स्थित है तो हमें सदैव आनंदित होना चाहिए। हमारे जीवन से मृत्यु का भय निकल जाना चाहिए। परन्तु हम डरते भी हैं, भयभीत भी है और दुःखी भी रहते हैं। दोनों ही बातें रहती है हमारे अंदर अर्थात् अभय भी नहीं है और आनंदित भी नहीं है हम ! जबकि आत्मज्ञान हम अभय देने वाला है।

आत्मज्ञानी अभय पद की सेजा जिसकी आत्मा में स्थिति हो गई वो सदैव अभय रहता है। उसे किसी का भी भय नहीं रहता यहाँ तक मृत्यु भी पास आ जाए तो भी वह अपने अभय पद में स्थित रहता है।

सिकन्दर बादशाह भारत में आया। जब जाने लगा तो गुरु की बात याद आ गई। गुरु ने कहा था – एक तत्वज्ञ महान् पुरुष ले आना, गंगाजल ले आना, गीता ले आना ऐसी कई बातें कहीं थी गुरु ने। बात याद आते ही उसने खोजना करनी शुरू की। जगह–जगह खोजने लगा कोई महापुरुष रहता है क्या यहाँ पर ? खोजते–खोजते एक जगह पता चला कि इस जंगल में एक तत्त्वज्ञ महापुरुष रहता है सदैव आनंदित रहता है व प्रायः नग्न रहता है। ऐसा सुनते ही सिकन्दर उस तरफ चला। खोजते–खोजते उस महापुरुष पर नजर पड़ गई। सिकन्दर हाथ जोड़कर बोला – महाराज ! मेरे साथ यूनान चलो। महापुरुष कहते हैं – भाई ! मैं यूनान क्यों चलूं ? मुझे क्या जरुरत यूनान चलने की ? सिकन्दर बोला – आप जानते हो आप किससे बात कर रहे हो ? मैं सिकन्दर बादशाह हूँ, आपको मेरी बात माननी पड़ेगी। महापुरुष ने कहा – तू बादशाह होगा तो होगा इसमें कौन सी बड़ी बात है ? पर मेरे को यूनान नहीं चलना। सिकन्दर ने तलवार निकालकर कहा – चलते हो कि नहीं चलते। महापुरुष ने कहा–तू तलवार के बल पर मुझे यूनान ले चलेगा क्या ? मैं तो यूनान जाऊँगा ही नहीं। मेरी मर्जी मैं जाऊँ या नहीं। सिकन्दर ने कहा ये तलवार देखी है न इससे तुम्हारा सिर धड़ से अलग हो जाएगा। संत ने कहा – जैसे तू देखेगा मेरा सिर धड़ से अलग होता हुआ वैसे ही मैं भी देखूँगा। कोई फर्क नहीं हैं। सिकन्दर को बड़ा अजीब लगा – बोला मैं तो तेरा सिर उतरते देखूँगा पर तू अपना सिर उतरते कैसे देखेगा। संत बोला – हमारी प्रीत इस शरीर में नहीं है और ना ही मैं मरने वाला हूँ मैं तो इस शरीर में रहने वाला आत्म तत्व हूँ। ये शरीर चला जाए, कट जाए, मेरे को कोई फर्क पड़ने वाला नहीं है। सिकन्दर वहीं नतमस्तक हो गया तो महापुरुष भयमुक्त होते हैं और हर परिस्थिति में आनंदित रहते हैं, सदैव आनंदित रहना यही महापुरुषों का गुण है। जो तत्त्वज्ञ महापुरुष है, अर्थात् जिन्होंने इस आत्म तत्त्व का अनुभव किया है वे सदैव इस आत्म तत्त्व में स्थित रहते हुए अपने आप में आनन्दित रहते हैं और निर्भय रहते हैं।

निर्भय होय भजो भगवाना। आत्म ज्ञान आनन्द का हेतु निर्भय होकर ही भगवान का भजन करना चाहिए। श्रवण का फल है मनन। मनन का फल है निदिध्यासन, निदिध्यासन का फल है साक्षात्कार। साक्षात्कार का भी तो फल होना चाहिए। साक्षात्कार का फल है सदैव आनन्द, महा आनन्द परम आनन्द। सदैव आनन्द में मग्न रहना ये ही तत्त्वज्ञ महापुरुष की पहिचान है। कोई कहे कि मैंने परमात्मा को देखा है, मैंने आत्मतत्त्व को देखा है फिर दुःखी होवे। धन को प्राप्त करके कोई कहे कि मैं निर्धन हूँ। कंगाल हूँ। ये बात बनती नहीं है।

तो आत्मा की बात बड़ी अजीब है। जानते तो है परन्तु स्थिति होती नहीं हमारी। सुनते हैं परन्तु अनुभव में नहीं आता जब गुरु की कृपा हो जाए तो ये बात अनुभव में आ सकती है। पुरुषार्थ भी हो अपना और गुरु की कृपा भी हो।

तो वो आत्मा कैसा है राजा शिखरध्वज ने जब प्रश्न किया गुरु से कि मैं हूँ कौन ? जहाँ से आया तो गुरु ने उसे उत्तर दे दिया कि आत्मा ऐसा है और तू

आत्मस्वरूप है। आत्मा के विशेषण के बारे में समझाते हुए कहते हैं –

आत्म अखण्ड स्वयं प्रकाशी घट-घट तां उजियारा है।
अजर अमर अविचल अविनाशी साखी सृजणहारा है।
सत् चित् आनन्द ब्रह्म व्यापक, नाम रूप आधारा है।
मन, बुद्धि वाणी इन्द्रिय अगोचर, तीन गुणों से न्यारा है।

आत्म तत्व मन बुद्धि वाणी और इन्द्रियों का विषय है उनसे भी दूर है। यहाँ तक का प्रसंग होके आया है। आज के प्रसंग में याज्ञवलक्य मुनि कहते हैं। हे भारद्वाज ! मुनि वशिष्ठ कहते हैं– हे रामजी! सत्गुरु महाराज जी कहते हैं – हे जिज्ञासुओं मुमुक्षुओं! गुरु ने आगे बताया।

त्रिगुणातीत आत्मा

आत्मा तत्त्व तीनों गुणों से न्यारा है। तीन गुण उसमें है ही नहीं। सत्, रज, तम तीनों गुण से अलग वो आत्म तत्त्व है। सत् भी नहीं – सत् स्वरूप तो है आत्मा पर सतोगुण, यानि अच्छे–अच्छे गुण जैसे सत्संग में जाना, संतों की सेवा करना, नाम सिमरन करना भी आत्मा नहीं रजोगुण भी नहीं, तमोगुण भी नहीं तीनों गुणों से न्यारा वो आत्म स्वरूप है। तीनों गुणों से ऊपर है। तीन गुण वो नहीं क्योंकि वो निर्गुण है।

आत्मा शरीर करके सगुण नजर आता है परन्तु शरीर के अलावा, शरीर के बिना आत्मा निर्गुण निराकार है। शरीर के माध्यम से आत्मा की अभिव्यक्ति होती है। शरीर से सम्बन्धित होने के कारण हमारे को ऐसा लगता है कि तीनों गुण इसमें है। परन्तु इसमें गुण नहीं है गुणों से अतीत है ये। जिसको शास्त्रों में गुणातीत कहा है। और

अमल अलेपा अच्युत अनंता अमल है वो आत्मा।
ईश्वर अंश जीव अविनाशी। चेतन अमल सहज सुखराशी

विशुद्ध आत्मा

गोस्वामी तुलसीदास ने रामचरितमानस में लिखा है कि चेतन तत्त्व कैसा है ? अमल है। जिसमें मल का लेश भी नहीं मैल नहीं है इसके अंदर, कोई मिलावट नहीं इसके अंदर। अमल है अर्थात् सदैव स्वच्छ है निर्मल है खरा है। जैसे सोना खरा होता है न वैसे ही चेतन तत्त्व तो खरा ही है। परन्तु जैसे सोने के गहने बनाने के लिए उसमें मिलावट करनी पड़ती है। ऐसे ही जब जीव बनता है तो शरीर बनाने के लिए शुद्ध चेतन में अविद्या की मिलावट करनी पड़ती है। अर्थात् जब अविद्या का संयोग होता है तब जीव बनता है तो जीव शुद्ध नहीं है परन्तु वो आत्म अमल अर्थात् शुद्ध है और आत्म तत्त्व अलेपा अर्थात् लिप्त नहीं होता किसी भी कार्य में, शरीर लि होता है, शरीर कार्य करता है परन्तु आत्म तत्त्व सि सत्ता देता है, उससे लिपायमान नहीं होता जैसे क का फूल पानी में होता है पर जल में लिप्त नहीं ह सदैव अलग रहता है उसी प्रकार आत्म तत्त्व सब क से निर्लेप है। कर्मों के बंधन में बंधता नहीं। न कर्त्ता न भोक्ता है। जब कर्त्ता भोक्ता ही नहीं तो निर्लेप है

अमल अलेपा अच्युत अनंता

अच्युत है। अच्युत उसको कहते हैं जो अ स्थान से कभी गिरता नहीं है, गिरने से रहित है। अ आप में स्थित रहता है। एक जगह। जैसा है वैसा ही इसमें कम ज्यादा दोनों बातें नहीं हो सकती। अ स्थान से नीचे नहीं हो सकता तो अपने स्थान से ऊ भी नहीं हो सकता क्योंकि आत्म तत्त्व सर्वव्यापक ऊपर नीचे कुछ है ही नहीं इसके बाद अर्थात् गिरने कोई जगह ही नहीं है। तो आत्म तत्त्व अलेपा है, अ है, अनन्त है। अर्थात् जिसका अंत नहीं हो सकता व भी। गीता में भी बहुत समझाया गया है –

नैनं छिन्दन्ति शास्त्राणि नैनं दहति पावकः
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः।

हे अर्जुन ! ये आत्म तत्त्व मरने वाला नहीं। ये तू सोच रहा है कि ये मेरे सगे सम्बन्धी मर जायेंगे। श की दृष्टि को छोड़कर आत्म की दृष्टि से देख त मरने वाले हैं ही नहीं।

नाहन्यते हन्यमाने शरीरे। इनका अन्त होने वाला न

ये अन्त होने वाला तो इस शरीर का है, देह है। शरीर का नहीं, उस आत्मा का नहीं तो वो नि अर्थात् सदैव रहने वाला है, अवद्य है वो आत्मा। शरीर तो बीच की बात है, बस आए और चले ज परन्तु आत्म तत्त्व तो सदैव रहने वाला है।

पहले भी अवयक्त थे ये तेरे सब सम्बन्धी ब भी व्यक्त हो जाऐंगे। सिर्फ शरीर नहीं रहेगा, परन्तु रूप में तो सब रहेगें ही, सिर्फ तुझे नजर नहीं अ क्योंकि इनके शरीर नजर नहीं आयेगें। आत्म कर जन्म से पहले भी थे और जन्म के बाद भी रहेंगे। अ इस आत्म तत्त्व का अन्त नहीं होगा। ब्रह्म तत्त्व का नहीं होगा।

अनादि आत्मा

जो अनादि है वो ही अनंत है। याद रखन

नादि भी है अनंत भी है परन्तु माया अनादि तो है पर
त है। इतना ही फर्क है माया और ब्रह्म में। जब
क्ति उस तत्त्व की प्राप्ति कर लेता है तो माया का अंत
जाता है माया से अलग हो जाता है सिर्फ ब्रह्म तत्त्व
जाता है। वो ब्रह्म तत्व कैसा है **"अमल अलेपा
च्युत अनंता अतुल अनादि अडोला है।** कैसा है, अतुल
उसकी कोई माप नहीं। कई तरीके से माप की जाती
दाल आदि वस्तुएं तोल कर ली जाती है। फिर कपड़े
भी वस्तुएं उसकी माप ली जाती है। परन्तु आत्म तत्त्व
तोला नहीं जा सकता।

एक तो अतुल का अर्थ ये हुआ। दूसरा अतुल
ने तुलना से रहित है, किसी के साथ उसकी तुलना
ीं की जा सकती है। आत्म तत्त्व जैसा कोई और तत्त्व
ही नहीं, जो उसके साथ आत्मतत्त्व की तुलना की
ए। तुलना हमेशा बड़े के साथ की जाती है परन्तु
त्म तत्त्व से बड़ा कोई तत्त्व है नहीं। तो आत्म तत्त्व
ुल है अनादि है।

कुछ बातें जिनके आदि के बारे में पता नहीं होता
अनादि कहलाती है। जैसे ब्रह्म अनादि है, माया अनादि
ईश्वर अनादि है, जीव अनादि है, जगत अनादि है। ये
बाते अनादि मानी जाती हैं। परन्तु इनमें से कुछ
ंत है कुछ सांत है। ब्रह्म तत्त्व ही अनन्त है बाकी सारे
त है, उन सबका अंत हो जाता है। अनादि सब है,
ा नहीं कब बने ? कैसे बने ? किसने बनाया ? इनके
में इन प्रश्नों का उत्तर कोई नहीं खोज पाया। जैसे
ो कोई प्रश्न करे कि ब्रह्म तत्त्व कैसे बना ? तो इसका
र ढूंढ नहीं सकेंगे, इन प्रश्नों के उत्तर खोजने में पूरा
वन निकल जायेगा, परन्तु उत्तर मिलने वाला नहीं
रे को।

आज तक उत्तर नहीं मिला हमें कि अविकारी ब्रह्म
फुरना क्यों हुआ, कैसे माया बनी, कैसे अविधा बनी,
र बना, जीव बना, सृष्टि बनी। कैसे ये सब अनादि
ये आज तक हमारे को समझ नहीं आया। परन्तु
त्र कहते हैं महापुरुष कहते हैं।

सर्वव्यापी आत्मा

तस्मात् शास्त्र प्रमाणम्। शास्त्र की बात सदैव
ची होती है। ऐसा मानना चाहिए। वे उनका अनुभव
ते हैं।

तो वो ब्रह्म तत्त्व तो निर्गुण, निराकार अव्यक्त ब्रह्म है और वही ब्रह्म व्यक्त भी हो जाता है। ये सारी अभिव्यक्ति जो दिखती है वो भी ब्रह्म ही है और अव्यक्त भी वही ब्रह्म है। बस इतना ही कहा जा सकता है।

अतः आत्म अनादि है और अडोल है यानि अपने आप में स्थित है और कहीं नहीं। अलग चीज है ही नहीं तो कहाँ पर स्थित है और कहीं नहीं। जैसे कोई वस्तु किसी चीज पर स्थित होती है ये बाजा इस स्टेज पर स्थित है, हम पृथ्वी पर हैं, पृथ्वी जल पर है, तो ये एक दूसरे के ऊपर स्थित है परन्तु अपने आप में स्थित है। अपना आप ही स्वरूप है वो तो स्थित ही स्थित है। क्या कह सकते हैं ? चलना–फिरना तब होता है, अस्थिति तब होती है। जब परिछिन्नत हो। परिच्छिन्नता नहीं व्यापकता है तो स्थित ही स्थित है। आकाश को कैसे कहेंगे कहीं चल रहा है, फिर रहा है नहीं वो स्थित है। एक जगह पर ही है क्योंकि बहुत व्यापक है। व्यापकता में स्थिति रहती है, परिच्छिन्नता में क्रिया रहती है।

अपने आप में स्थित रहते अगम अगाध अबोला है। अगम है। अगम माने रहस्य भी होता है और गम माने पहुँचना भी होता है, जहाँ हम पहुँच नहीं सकते, जिसका रहस्य हम जान नहीं सकते उसे अगम कहते हैं। तो ये आत्म तत्त्व अगम है। अगाध है। अगाध माने जो बहुत गहरा होवे। जैसे अगाध जल है समुद्र के अन्दर। जिसका नीचे तल नहीं हो उसको बोलते हैं अगाध। उसकी गहराई के बारे में कुछ नहीं कह सकते।

तालाब की गहराई तो पता चल जाती है, कि यहाँ तक है परन्तु सागर कहाँ तक नीचे है ? कितने हजार फुट तक चलेगा ? चलते जाते हैं, पहुंच नहीं पाते, उसके तल तक। तल नजर आता है परन्तु आगे जाएं तो और भी गहरा है उससे। सागर इस प्रकार है। अगाध चारों तरफ फैला ही फैला है। इसी प्रकार आत्म तत्व भी अगाध है जितना गहरा इस तत्व में चलते चले जाते हैं उतने ही नित नूतन अनुभव नित नूतन बातें सामने आती हैं। और अबोला है:–

जिसके बारे में बोला नहीं जा सकता, हम कुछ पूरे तरीके से कह नहीं सकते। वो आत्म तत्व ऐसा है। उसी आत्म तत्व को अनुभव में लाना है। जब गुरू महाराज की कृपा होगी तो ही सब बात सम्भव हो सकती है।

स्वामी सर्वानन्द अमृतवाणी

अमर कथा

दोहा : वार वार वन्दन करूं – पूरण ब्रह्म अखण्ड।
जाके सत् प्रकाश ते – प्रकाशत ब्रह्मण्ड।।
हरि हर गौरि गणेश रवि – सब को है प्रणाम।
जिनकी कृपा दृष्टि से – होवे पूरण काम।।
धरहूं सद्गुरु देव के – चरण कमल का ध्यान।
कह टेऊँ जिस कृपा ते – ऊझा अनुभव भान।।

छन्द : कठ उपनिषद कविता माहीं करता हूँ वख्याना जी।
यजुर्वेद की कथा पुरातन-करो अमीरस पाना जी।।
सावधान हो बैठ श्रोता - पूरण मन विश्वास धरो।
यमराज नचिकेत कथा को - सुनकर सबहीं दुख हरो।।
जिसके श्रवण मनन आदि से-जीवन अमर हो जाता है।
कहता टेऊँ काल चक्कर में, फेर कभी नहीं आता है।।

प्रेम से बोलो हरे राम ! सभी प्रेमियों, सत्संगियों, गुरमुखों, पूजने योग्य महात्मा मण्डल अपने शरीर इन्द्रियों को सावधान करके हर एक जीव, हर एक मनुष्य अपने आप को स्वयं समझावें। प्रेम से बोलो हरे राम ! जो पहले से समझते हैं, जानते हैं। उसको समझाना बहुत कठिन है, तो ये मन जानता हैं पाप को, सच को, झूठ को, धर्म को, अधर्म को जानता हैं तो इसे समझाना बहुत कठिन है। प्रेम से बोलो हरे राम ! एक ये बात ! दूसरा ये ही भक्ति करनी है। मन को पवित्र शुद्ध करना। मन–इन्द्रियों को अपने बस में करना है। सत् शास्त्र महात्मा के वचनों में, भगवन्त के नाम में विश्वास बढ़ाना है। ये ही भक्ति करनी है। हम दो वारी पंक्ति कहे। पहले हम विश्वास को बढ़ायें, फिर सत् शास्त्र में अटल विश्वास बढ़ायेंगे। क्या करें ?

राम जपो हरवार - रे मन राम जपो
गज ने आधा राम उचारा - हरि ने आय ग्राह को मारा
होई जै जेकार।। मेरे मन राम................

गज के बोलो श्री रामचन्द्र भगवान की जय। हे मेरे मन। हाथी की पुकार सुनकर, भगवान ने रक्षा की। निराश होकर भगवान को पुकारा तू अभी निराश नहीं हुआ है।

दोहा : भिरीं भेनण वारियूं, उभियूं ओसारिन।
सजण जे साणिन से, पिटण में पधारियूं।।
श्लोक: भिरीं भेनण वारियूं, अची सिचायो कनि।
बियूं उहें हथ हणनि, रूअन्दियूं रूअण वारियूं।।

प्रेम से बोलो हरे राम। अगर घर का कोई मरत है तो वह दूर से ही पता लगता है। प्रेम से बोलो ह राम। हाथ लगाती है। हे मेरे मन। तेरे की मोह रूपी वा संसार में विषय रूपी भोगों में पाप कर्मों में छिक्के र है। तू कितना ही कहता है। मैं बाहर निकलूं। मोक्ष मैदान पर चढूं। पर ये मोह कहां छोड़ता है। बड़ा बलवान है। इतना बलवान है, ये मोह रूपी वागू। अर्जुन जैसे वीर को भी रणभूमि में पकड़ा। अर्जुन छु नहीं सका। रो पड़ा। हथियार छूट गये। ये गीता कि ने धर्म पर ज्ञान प्रेम पर बनायी है। परन्तु ये वास्तव गीता मोह पर बनी हुई हैं। प्रेम से बोलो हरे राम। हे मे मन। जब तू भी निराश होकर पुकार करेगा। तभी भगवान अन्तर्यामी इस मोह रूपी वागू से मारकर आजा कर देंगे। तेरी जय–जयकार होगी। लोक–परलोक ब जायेगा, जैसा नचकेता ने विश्वास रखा है जो यमरा को कहता है भगवान्। मेरे को आत्म ज्ञान का वर दे यमराज कहता है। वो बात कठिन है देव भी घबरा ग सूक्ष्म है। कोई–कोई करता है। कोई समझता है करते नहीं है। ये बात ऐसे कैसे होगी। प्रेम से बोलो राम।

और पदार्थ जितने चाहिए, उतने तुमको देता हूँ
मगर ज्ञान का वर तीसर, वापस तुमसे लेता है।

हे नचकेता ! दूसरे जितने पदार्थ चाहिए। वे स पदार्थ मन इच्छित ले ले। ये वर ज्ञान का मुझको वा दें। ये मेरे से मत पूछ। इतना कथा का प्रसंग होकर आया है। आज के प्रसंग में सत्गुरू महाराज कहते गुरमुखों, जिज्ञासुओं जब इतना यमराज कहने लगा

धर्मराज जब युं कहा, तीसर वर ये छोड़
नचकेता यम को तभी, कहन लगे कर जो

आप कहत उसी विषय में, देवन को संदेह हुआ।
यह सुन आत्म में अब मेरा, और अधिक सनेह हुआ।
यह भी तुमने कह समझाया, कठिन उसी को पाना है।
तुमको तजकर ऐसा वर में, और किसी से पाऊँगा।
सारी दुनिया खोज-खोजकर के, व्यर्था जन्म गंवाऊँगा।

धर्मराज नचकेता को कहने लगे। इस आत्मज्ञान के वर को छोड़ दे। तो यह जीव मरकर कहा जाता है। उसकी उधर गति क्या होती है। उधर है क्या ? **''नचकेता यम को कहन लगे कर जोड़''** नचकेता हाथ जोड़कर यमराज को कहने लगे– हे भगवन् ! आप कहते हैं उसी विषय में देवन को भी संदेह हुआ। आप ही कहते हो कि इसकी बात में देवों को भी संशय हो गया।

''यह सुन आत्म में अब मेरा और अधिक सनेह हुआ'' यह सुनकर उल्टा मुझे अधिक सनेह और निश्चय हुआ। प्रेम से बोलो रहे राम। यह बात समझी। कोई बात है जो देव भी समझ नहीं सके। और तू भी कहता है। ''यह भी तुमने कह समझाया, कठिन उसी को पाना है।'' तमाम कठिन बात है। कोई सुगम बात नहीं है।

''वैरागी तो उस देखन में हित जग में फिरत दीवाना है।'' वैरागी मुमुक्षी जिज्ञासी मस्त होकर आत्म दर्शन के लिए घूमते हैं। कोई जंगल में कोई नदी के किनारे बैठे हैं। हे यमराज। अब तो मुझको ज्यादा निश्चया हुआ है कि यह बात तो मेरे को जरूर सुननी है। **''तुमको तझकर ऐसा वर में, और किस से पाऊँगा।''** ये बात तेरे से छोड़कर कर मुझे कौन बतायेगा। **''सारी दुनिया खोज-खोज के व्यर्था जन्म गवाऊँगा।''** सारी दुनिया में भटकूंगा। कौन मुझे यह बात बतायेगा। वेदान्त की बात बहुत कठिन बात है। प्रेम से बोलो रहे राम।

''जो जन के बंधन हरे, सो साधु कोई एक।
क्रिया कर्म जो जोड़न विषे, जन समर्थ अनेक।।''

यह नीति शास्त्र कहते हैं–महात्मा तेरे बंधन तोड़े। मोह, आशा, मान, तितिक्षा, क्रोध के बंधन तोड़े वो कोई कोई है। बाकी क्रिया–कर्म जोड़ने में अनेक समर्थ है, जिस तरह :–

''दादर कर कुख चरण में, तत्पर नाग अनेक।
समर्थ धरनी धरण में, शेषनाग ही एक।।

मेंढ़क कहो, दादर कहो, मेंढ़कुली कहो। प्रेम से बोलो हरे राम। उसको खाने के लिए नाग बहुत है। समर्थ। परन्तु धरती को उठाने में शेषनाग एक ही है।

''उदर भरण तत्पर भये, बेखी संत अनन्त।
जगत जलधी केतरन में, विरला को इक सन्त।।

महात्मा अपने स्वार्थ, सुख, लालच के वास्ते अनन्त है। परन्तु संसार–सागर को तारने के लिए कोई–कोई महात्मा है। निष्कामी निर्मानी अभेद निरपक्षीय कोई–कोई महात्मा है।

''शैले-शैले न माणिकं, मोतिकं न गजे-गजे।
साधु नहीं सर्वत्र, चन्दनं न वने-वने।।

सभी वनों में चन्दन नहीं है, सभी हाथियों के मस्तक पर मोती नहीं होते। सभी पहाड़ों में माणक नहीं होते हैं। सभी शहरों में महात्मा नहीं होते हैं। कहीं–कहीं होते हैं। प्रेम से बोलो रहे राम। हे मेरे मन ! महात्माओं का संगकर। अभेदी महात्मा का भेदवादी का। संग ऐसा है जो आत्मा का ज्ञान साक्षात होवे, वह ही नास हो जावेगा क्योंकि खण्डन बहुत है। अगर खण्डन करे तो भगवान को नास कर दें। प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेरे मन। विश्वास निश्चय कर। जैसे–सदाशिव पार्वती को बोल रहा है। पार्वती विश्वास निश्चय कर। कौन–सा निश्चया कर।

भजन

अमर आत्मा देह अनात्म, आत्म रूप तुम्हारा।
आत्म दृष्टा देह दृश्य है, आत्म सब से न्यारा।।
जाग्रत स्वपन सुषोप्ति का, इक आत्म है आधारा।
इन्द्रिय अगोचर आत्म है जिहं, मन बुद्धि लखे न बानी।।
शंकर बोले पार्वती सुन, अमर कथा सुखदानी।
जांके श्रवण से कट जावे, कठिन काल की कानी।।

सदाशिव कहते हैं–हे पार्वती, आत्मा सच्चिदानंद रूप है। अमर है, अविनासी है। यह शरीर नासी है एक दिन शमशान में जल जायेगा, मिट्टी हो जायेगा। प्रेम से बोलो रहे राम। इतना कथा का प्रसंग करके आये हैं। **''आत्म दृष्टा देह नित है, आत्म सब से न्यारा।''** देह का दृष्टा है–साखी चेतन। यह देह अलग है आत्मा से। प्रेम से बोलो हरे राम। **''जाग्रत स्वपन सुषोप्ति का।''**

तीनों को जानते हैं। बुद्धि को भी जानता है जो बुद्धि को जानता है, उसको बुद्धि जानती है। जो दुनियाँ में देखते है सारा मेलाप का रंग फैला हुआ है। शरीर जड़ है। ये मेलाप है। सारा काम मेलाप का है। बुद्धि को तेज करना। जितने प्रेमी बैठे हो। प्रेम से बोलो रहे राम। कार्तिक की आरती करते हैं। गुरु-ग्रंथ की आरती करते हैं। प्रेम प्रकाश ग्रंथ की आरती करते हैं। तो तीन आरतियां बनाके लाते हैं। एक ही अगर आरती करें तो क्या बुझ जायेगी क्या ? एक किसी की आरती की तो वह झूठी हो गयी। बुद्धि को तेज करना। अगर किसी को भी इसमें शंका हो तो कल लिखके आना। कल आकर के पूछना। यह झूठी किसने की। शरीर आत्मा का सम्बन्ध है। यह सब आपस में सम्बन्ध है। शरीर साखी, चेतन का सम्बन्ध है। बुद्धि साखी चेतन को देखती है। साखी चेतन बुद्धि को देखता है। कहते हैं–बुद्धि भगवान है। व्यवहार का ज्ञान और परमार्थ का ज्ञान बुद्धि के अधीन है। **''अगम-अगोचर रूप तुम्हारा।''** यह स्वरूप है उसको पहचान, अगर नहीं पहचानोगे तो अन्तकाल में तेरे को रोना पड़ेगा। कि मैंने अन्तकाल में, कुछ भी नहीं किया। फिर अन्तकाल में रोयेगा। साहब कहते हैं –

सहस्रदान दे इन्द्र रो आया, परसराम रोई घर आया।
अजय सो रोये भिक्षा खाय, ऐसी दरगाह मिली सजाय।।
रोवे राम निकला भया, सीता लक्ष्मण बिछड़ गया।
दहसिर रोवे लंक गंवाय, सीता आंदी डंवरू वाय।।
रोवे जनमेजय खोय गया एके कारण पायी भया।
रोवे पाण्डव भये मजूर, जिनके स्वामी रहत हजूर।।
रोवे शेख मशायक पीर, अन्तकाल तम लागे भीर।।

फिर बाद में रोना पड़ेगा। अगर अपने को नहीं पहचानेगा, तो फिर रोना पड़ेगा। मैं हूँ कौन ? यह कथा कहां छोड़ी, याद है। स्त्री के कारण रोना पड़ा। प्रेम से बोलो रहे राम। भगवान् कैसे रोये कैसे मजदूरी की। साहब कहते हैं –

जुआ में युधिष्टर महाराज ने हराया। द्रोपता को दांव पर रखा। कोई भाई-माई जुआ मत करना।

जूप संग ते धर्म तात अति विपति सही बन।
मांस संग इक भूप भयो बक, श्राप दियो मुनि।।
यादव नन्दन नास भये, मधुपान करियो जब
क्रीचक थे शत भ्रात, काम कर नाश भये सब
मृगया कर परीक्षित हतियो, चोरी करी शिव भूप हति
पुनि पर नारी की प्रीति कर, शीश दिये दश लंकपति।

शराब पीने की आदत, जुआ खेलने की आदत सभी खराब आदतें हैं। ये सभी बंद करो। बहुत कह है– सतहं आती है। आज पत्ते को तो हाथ लगा, सगु तो कर। ताश को हाथ लगाया तो 2 महीने के कर्म सा नाश हो जायेगें। ये मौका है। मौके का दान, पाप क पुण्य ऐसे फूलते हैं जैसे–सभा में द्रोपदा के तीर फुले राजा चूड़ाला शिखरध्वज की कथा बहुत सुन्दर है। बाह रखी है उसमें चूड़ाला कहती है। हे राजन्। जब मंधराच वन में पहुँच गये। राजा को विश्वास बंधाकर बोली राजन्।

जो ही पूजने योग्य होवे, तिस निर आदर करते है
वो जन सुख कहीं न पावत, अन्त दुःखी हो मरते है

जो पूजने योग्य है। जैसे–बच्चों के लिए घर माता–पिता पूजने योग्य हैं। स्त्री के वास्ते पतिदे सांस–ससुर पूजने योग्य हैं। देवी–देवतायें भी पूज योग्य हैं। कभी भी जुआ नहीं करना। बासी रोटी म खाना। प्रेम से बोलो हरे राम। देवी की शीतला की पू करो, पाठ करो, हवन करो, सत्संग करो। अन्त में 12 व का वनवास मिला, पाण्डव को। फिर दस्तावेज लिख दस्तावेज लिखकर पाण्डव चले। पैर नंगे रोते–रोते गये अन्त में 12 साल वनवास भुक्ता। भूख–प्यास तकली सही। 1 वर्ष अज्ञात वास। कहां रहे। राजा विराट, रा में आया। मजदूरी की। द्रोपती बान्दी बनी। बर्तन मां झाडू लगायी। प्रेम से बोलो हरे राम। जिन्हें अनंत लो पूजते थे। वह भी झाडू लगाने लगी। ये सारा काम जु का है। भीमसेन रसोई बनाने लगा। इसी तरह क कहां, कोई कहां। मजदूरी करने लगा। कमाने ल एक दिन प्रभु की लीला एक क्रीचक राजा विराट साला सौ साला थे क्रीचक। एक क्रीचक जिसकी द्रो पर नजर। प्रेम से बोलो रहे राम। नजरबद। दृष्टि ब गई। प्रेम से बोलो रहे राम। द्रोपती ने कहा–खबरद द्रोपती के पाँच देवता, अगर उनको पता चला तो वे

मार डालेंगे। द्रोपती को इतना तंग किया। द्रोपती रात को रो पड़ी। युधिष्टर से कहा– सभी पाँच पाण्डव और द्रोपती रात को 12 बजे एक साथ होकर बैठे। द्रोपती ने सारी बात पाण्डवों को बतायी। उस समय सारे पाण्डव रोने लगे। साहब कहते हैं – **''रोये पाण्डव भये मजूर, जिनके स्वामी रहत हजूर।''** स्वामी कृष्ण भगवान जिनके ऊपर हाथ था। कथा बड़ी है। आखिर भीमसेन ने कहा–11 बजे पूरे नृत्यशाला में मैं बैठी रहूंगी, तू पूरे 11 बजे आना। उसको कह देना। प्रेम से बोलो रहे राम्। ऐसे बोलकर तू अपने मकान पर चली जाना। मैं अपने आप सम्भाल लूंगा। क्रीचक से द्रोपता ने बोला–कि बहुत दिन तुझे सताया है। हम तेरे मजूर है। 11 बजे पूरे नृत्यशाला में अर्जुन पढ़ता है वहाँ आ जाना।

शाम को पाठशाला बन्द हो जाती है मैं नृत्यशाला में बैठी रहती हूँ। कोई भी नहीं जाता है। मैं दरवाजा खोल दूंगी। बड़ा ही खुश हुआ। 10:30 बजे भीमसेन साड़ी बांधकर शाला में बैठ गया क्रीचक दरवाजा खोला। भीमसेन ने कहा–जहाँ पर चाहिए वहाँ पर बैठ जा। भीमसेन ने दरवाजा बन्द कर दिया। उसे गले से पकड़कर गला ऊपर करके उसको दबा दिया। इतना तो बलवान था। राजा के सौ साले उधर थे। भीमसेन ने क्या किया।

शमशान में घुसकर दरवाजा बन्द करके छुप करके खड़ा हो गया। जब जलाया, तब द्रोपता को उठाकर के सभी क्रीचकों को जला दिया। प्रेम से बोलो हरे राम। जितने प्रेमी बैठे हो। साहब कहते हैं उधर पाण्डव रोये हैं। प्रेम से बोलो हरे राम। फरीद साहब रोया कैसे ? जब योग तप किया। दर्शन नहीं हुआ, ऐसे शास्त्र कहते हैं–कौअे पास में आये। कौओं को कहने लगा।

कागा ये तन खाइयो चुन चुन खाईयो मांस।
पर दो नैना मत छूओ मुझे पिआ मिलन की आस।।

खा जाओ, पर मेरी आँखों को मत खाना। मैं भगवान का दर्शन करूं फिर भली मेरी आंखे खा जाना। प्रेम से बोलो रहे राम। कोई दु:ख में रोया, कोई प्रेम में रोया, कोई मर्यादा के कारण रोया है। पर सब रोये है। श्यालपीर भी रोया है। जब लय बन्द हुआ है। तब रोया है। आये महात्मा सन्यासी का संग श्यालपीर ने संग किया है। आजकल हिन्दू जाति उनको धर्म विद्या है ही नहीं। प्रेम से बोलो रहे राम। याद करना जिन्होंने पाया हैं। उन्होंने हिन्दू धर्म में से ही पाया है। सभी ने हिन्दू धर्म में से पाया है। प्रेम से बोलो हरे राम। श्यालपीर, गुजरानपुरी का चेला था। सन्यासी, गुजरानपुरी टण्डेआदम के पास में। उसका चेला है। हम छोटे थे। हमारे पिताजी बात बताते थे – अगर हमारे घर शादी या कोई बच्चा पैदा होता था तो वहां सभी पीर जाते थे, भेटा, पखर चढ़ाकर के प्रणाम करके शहीद फिर घर पर आते थे। गुजरानपुरी आकर साहबों के पास रहता था। फिर क्या करता था ? जिन्होंने देखा होगा उन्हें पता होगा। लकड़ियों का ढेर इकट्ठा करके, धूणी लगा के बैठता था महीने में साये शुक्रवार को उसको अग्नि देते थे। उस भूमि पर करते हैं। ओम् ओम्.........। वह भूमि अभी तक है। जिन्होंने पाया है। उन्होंने हिन्दू धर्म में से पाया है। प्रेम से बोलो हरे राम। आकर सन्यासी को कहने लगे। स्वामी आप क्यों रो रहे हो –

तती रोये सब का तूं रती रोइं छो।
कि पहुंती आया प्रियन ड्रे, मतां कटर पये न कोय।।

श्यादों को बोला तूं क्यों रो रहा है ? मैं भगवान से मिला हूँ। परन्तु माया का चक्कर न लग जाय। माया की बात कोई थोड़ी नहीं है माया की बात ज्यादातर कल खोलेंगे। माया से डरना। जितने भाई–माई बैठे हो। ये माया बड़ी प्रबल है। इसलिए रो रहा था। कहने लगे महाराज उधर भी रोयगें क्या ? बोला उधर भी रोना है। उधर रोना, नहीं तो अनेक जन्म तक रोना पड़ेगा। भली ब्रह्मज्ञान हो जाये। बहुत कठिन बात है। कबीर साहब ने कहा है :–

हद चले सब कोय, बेहद चले न कोय।
बेहद के मैदान में, खड़ा कबीरा रोय।।

साहब कहने लगे–मर्दाना शेखनपीर ऐसे रोये हैं।

''रोये राजे कन फड़ाय।''

गोपीचन्द्र भृत हरि के जब कान चीरे। तब कुमार राजा कान चीरा तो आंखों में से पानी आ गया। गोपीचन्द्र राणा के पास भिक्षा लेने राणा तो रोने लगा। परन्तु

गोपीचन्द भी रो पड़ा। प्रेम से बोलो हरे राम। हे मेरे मन। अगर रोने से छूटे तो अपने निज स्वरूप को जान। आत्मा को जान, तो रोने से छूटे। नहीं, तो रोना पड़ेगा। अनन्त जन्मों में भी रोना पड़ेगा। आत्मा को पहचान। महाराज कहने लगे वो है कहाँ –

ब्रह्म आत्मा स्थित है, नित अपने महिमा माहीं।
बन्ध मोक्ष ते असंग आत्मा, आत जात कहं नाहीं।।
पांच भूत प्रकृति सारी स्पर्श करत न ताहीं।
अगम अरूप अनूप अनादी वेदनि गति नहिं जानी।।

हे पार्वती आत्मा ब्रह्म एक तो ब्रह्म नाम है, व्यापक का, और आत्मा नाम है अपने आप का। ब्रह्म मतलब समष्टि। अपने आप में स्थित है। बंधन मोक्ष से असंग है। पांच प्रकृति माया में रहता है पर उसको समरस नहीं होता है। प्रेम से बोलो हरे राम। जैसे – कमल फूल जल में रहता है वैसे यह रहता है। प्रेम से बोलो हरे राम। जैसे–महात्मा ज्ञानवान रहते हैं। कैसे रहते हैं ?

कमल सीप जल जुदा वसे, मणि ज्यूं अहि मुख माहीं।
बड़वानल पुन बीज, वारि मध भीजे नाहीं।।
दर्पण माहिं प्रतिबिम्ब, सून सबही घट न्यारी।
लोई रंगे न सूत, देख अचरज यह भारी।।
अठारह भार अग्नि इक, सूर सलिल ले दे जुदा।
रज्जब त्यूं साधू संगति, मिले अमल पाया मुदा।।

जो ब्रह्मज्ञानी – भगवान एक रूप है। वो कैसे रहते हैं। जैसे–कमल जल में रहता है। जितना जल डलेगा। कमल डूबेगा नहीं ! कमल सीप रहे खारे समुद्र में जल पीता नहीं है। बरसात का पीता है। विषय भोगों का पाप का पानी नहीं पीते हैं। सच का, प्रेम का ग्रंथों का पानी पीते हैं। प्रेम का पानी पीते हैं। **''मरज अह मुख माही।''**

अह नाम है सर्प का भुजंग कहो, नाग कहो। उसमें रहता है। जहर होता है। उसके मुख में, लेकिन वो स्पर्श नहीं करता है। मणी उल्टा नाग को खाये तो उल्टा मणी रखकर जहर पी जाता है। परन्तु वह स्पर्श नहीं करता है। उसी तरह महात्मा संसार में भोग–विषयों में रहते हैं। लेकिन मणी की तरह उन पर असर होता नहीं। बड़ विग्न अग्नि सागर में रहती है। लेकिन सागर अग्नि को बुझा नहीं सकता है। प्रेम से बोलो रहे राम। बि बादलों में होती है तो बरसात पड़ती है, पर जैसे–जो चमकती है तो बरसात भी जोर से पड़ती है। तो बि भी जोर से चमकती है पानी बिजली को बुझा सके अग्नि, परन्तु, बुझा नहीं सकता। इसी तरह महात्मा काम, लोभ, मोह, अहंकार विकार रूपी संसार के ज ज्ञान रूपी अग्नि का चिमकार देते हैं। जिसको हम नहीं सकते हैं। जैसे–**''दर्पण माही प्रतिबिम्ब''**। अ में पाछूला दिखायी देता है प्रतिबिम्ब। वो कोई आर फंसा हुआ है क्या ? लेकिन नहीं। **''सुन सबही न्यारी।''** आकाश सभी घटों में है। पर न्यारा है।
''लोई रंगे न सूत देख अचरज ये भारी।''

उसकी ये लोई में अगर सूत की तंद होती है सारे अन्दर में रंग चढ़ जायेगा। पर सूत की तंद दिखेगी। वैसे संसार में भोगी विषयों का रंग अ जीवों पर चढ़ जाता है। वो महात्माओं पर ये रंग चढ़ता है। प्रेम से बोलो हरे राम। सूरज पानी को भ रूप में ऊपर ले जाये।

''सूर सलिल लेदे जुदा।''

क्या उसमें सूरज फंसा हुआ है। इस तरह में भगवान संत महात्मा रहते हैं।
''पांच तत्वों प्रकृति सारी, परस सके नहिं ताहीं
एको रूप जिसकी उपमा नहीं कही जाती है। **''वेद नहीं जानी।''**

वेद भी कह–कह कर चुप हो जाते हैं आगे नहीं सकता है। निर्वाण हो जाता है। प्रेम से बोल राम। साक्षी में लीन हो जाता है।

एक घर दोइ घर तीन घर चार घर
पांचो घर तजे तब छठा घर पाइये
एक-एक करके आधार एक-एक घर
एक घर निदाधार आप ही दिखाइये।
सो तो घर साक्षी रूप घर-घर में अनू
तहां पर मध्य कोई दिन न ठहराइये
तहां आगे साक्षी न असाक्षी हूं सुन्दर कह
वचन अतीत कहूं आथ नहिं जाइये
तहां घर मध्य कोई दिन न ठहराइये

तहां आगे साक्षी न असाक्षी ही सुन्दर कछु वचन अतीत कहूं आय नहीं जाइये वो तो घर साखी रूप घर-घर में अनूप साखी भी। प्रेम से बोलो हरे राम। साखी भी गुम है।

गाथा सुनते पार्वती को, आ गई निद्रा वाही।
सावधान हो हूँ हूँ करके तोते सुन लई ताहीं।।
मर्म न जाना महादेव था मस्त मौज के माहीं।
शंकर पूछा गिरिजा बोली मैं निद्रा उरझानी।।

शंकर बोले पार्वती.........।

गाथा सुनते–सुनते पार्वती को निद्रा आ गयी। घोंसले में बैठा तोता पार्वती हूं हूं करके तोते ने कथा सुनली। जैसे बाग में मैना बोलती है। **''ये मर्म न जाना महादेव था मस्त मौज के माहीं।''** ये मर्मज्ञ, महादेव को पता था कि पार्वती हूं हूं कर रही है, तोते का पता नहीं था। जब पांच साढ़े पांच बजे का शुमार हुआ तब प्रातः हुई। कथा पूरी हुई सदा शिव ने कहा – नेत्र खोलकर पार्वती कथा सुनी। देखा तो आँखों में अभी भी नींद भरी पड़ी है। कथा सुनी, बोली–मेरे को नींद आ गई। बोला किस समय बोलती है जब तुमने कहा– **''अमर आत्मा देह अनित, आत्म रूप तुम्हारा।''** ये बात मुझे समझ में नहीं आयी और थकावट भी हुई। उस समय सो गई। बोला–उस समय तो 1 बजे का शुमार था 12 बजे तो कथा शुरू हुई। बस 1 घंटा। फिर बाद पांच घण्टे जो कथा हुई। उसमें हूं हूं की वो किसने की, मुझे मालूम नहीं। ये कौन था। सदाशिव ने देखा क्या कहें ?

कह टेऊँ शुक गाथा सुन ली, भेद शम्भू ने पाया।
तोते के तब मारन कारन डण्डा ले उठ धाया।।
उड़के तोता वेद व्यास के त्रिया बदन समाया।
व्यास वचन सुन तोते को तज चले शंभू सैलानी।।

कह टेऊँ शुक गाथा सुन लई। सत्गुरु महाराज ने कहा–तोते ने कथा सुनी। भेद शंभू ये पाया। तोते ने आलड़े में बैठा। इसी ने हूं हूं की है। वह समझ गया। **तोते को तब मारण कारण डण्डा उठ ले धाया।** डण्डा लेकर तोते को कहने लगे। डाकू चोर खबरदार अमरकथा तूने सुनी है। हूं हूं जी जी की है। तोता आलड़े में से उड़कर आकाश में कहता चले शिवोहम् शिवोहम्। आगे तोता पीछे सदाशिव और पार्वती पीछे भागने लगे। प्रेम से बोलो रहे राम। सदाशिव कहने लगे, चोर तूं कहाँ जायेगा। चलते–चलते प्रभु की लीला वेद–व्यास महाराज उपनिषद की कथा कर रहा है, सभा लगी पड़ी है। तोता वहां जाकर पहुंचा। तोते ने विचार किया, सदाशिव पास में आ गया है। अब में कहाँ जाऊँ। सूक्ष्म रूप धारण करके वेद व्यास की पत्नी बैठी थी। उसके पेट में चला गया। सदाशिव आया डण्डा लेकर। प्रभु ने कहा– बैठो। उन्होंने कथा बंद करी तो देख तो कहाँ बैठा है चोर, चोर को निकालो बाहर। बोला कहाँ – तेरे स्त्री के पेट में है निकाल, नहीं तो तोता भी मर जायेगा। तेरी स्त्री भी मर जायेगी। दोनों का सत्नाम साक्षी। निकाल बाहर। प्रभु ने कहा बात तो बता – सारी बात नारद से लेकर बता दी। सारी हकीकत बताने के बाद वेद–व्यास हंसकर कहने लगे कि अमर कथा तो कई महात्मा बताते हैं। मैं भी अमर कथा कह रहा हूँ। निज तत्व वेदान्त की। तूने बताई तो क्या हुआ। अमर कथा कोई सुनता ही नहीं है। सदाशिव ने कहा – चुपकर। तुम्हारी कथा कोई मेरी जैसी है क्या ? वेद व्यास कहने लगा – कि प्रभु आपकी कथा कौन–सी है। सदाशिव ने कहा – मेरी कथा जो सुनेगा वह अमर हो जायेगा। वो मरेगा नहीं। किसी की ताकत नहीं है कि वो तीनों लोकों में मार सके। बोला – सच्ची बात है। बोला – क्या मैं तुमसे झूठ बोल रहा हूँ। सच्ची कह रहा हूँ कि मेरी कथा जो सुनेगा वह मरेगा नहीं, फिर उस तोते को मार रह हो तो कैसे मरेगा। **''व्यास वचन सुन तोते को तज, चले शंभु सैलानी।''** शम्भू सदा सैलानी था। पार्वती को कैलाश पर लेकर जाता रहा। प्रेम से बोलो रहे राम। पुराण कहते हैं 12 साल तोता माता के उदर में रहा है एक दिन वेद व्यास महाराज कहते हैं कि हे पुत्र जन्म ले तो मैं एक बार दर्शन तो करूं। ये मोह दर्शन तो करूं। तोता तब अपने पिछले जन्म की बात सुनाता है– कि हे पिता मैंने बहुत दुःख पाया है। चल नहीं सकता। दांत टूट गये, बीमार हो गया। मैं जंगल में था खाना मिले तो खाता हूँ, नहीं तो भूखा। पानी मिलता नहीं तो पी नहीं सकता। मेरे पीठ पर फुन्सी होने लगे। काग मेरे को आकर खाने लगे। जैसे मैं भागूं तो काग भी मेरे पीछे भागने लगे। प्रेम से

बोलो हरे राम। एक दिन मुझे प्यास लगी। कागो ने भगाया। तो एक नदी दिखायी दी। थोड़ी वहां पर कीचड़ थी। वहां पर दल-दल भी था तो उसमें फंस गया। पेट आकर कीचड़ में लग गया। वहां पर काग आकर मुझे मार दिया। मैंने बहुत दुःख पाये। ये प्रभु की माया ने भुलाया है। सभी ने दुःख पाया है। वेद व्यास ने कहा- आज्ञा नहीं मानेगा। तू जन्म तो ले मैं दर्शन तो करूं, पिता की बात तो सच्ची है क्यों कि नीति शास्त्र, धर्म शास्त्र कहते हैं।

सिर धर आयुस करहूँ तुम्हारा।
परम-धर्म यही नाथ हमारा।।

हे पिता ! मेरा धर्म है माता-पिता की आज्ञा में रहना, स्त्री का धर्म है - अपने पतिदेव की आज्ञा में रहना। कभी भी उल्लंघन नहीं करना चाहिए। शिष्य का धर्म है गुरु की आज्ञा को मानना, अगर उल्लंघन किया तो उसका उद्धार होना कठिन है बहुत कठिन है। यमराज परीक्षा ले रहा है। नचकेता की। बहुत कठिन बात है परन्तु इसके बिना उद्धार भी नहीं होगा। जन्म-मरण चक्कर भी नहीं मिटेगा। कठिन बात है। यमराज कहते है। नचकेता ये बात बहुत कठिन है, छोड़ दे। तेरे क छोड़ दूँ तो ये बात कौन बतायेगा। ये बात मेरे को जरू सुननी है। यमराज कहते हैं उसको कोई लोभ दिय जाये तो मन उसको छोड़ दे। तो कल लोभ-लाल नचकेता को देगा और दिखायेगा। आप भाई-माई अप मन पर साखी होना, कागज और पैन लेकर आन लिखना या याद करना फिर मन से पूछना कि महात्मा ये पदार्थ ले कि आत्मा का ज्ञान लें। ये कथा इधर रख हैं। ये भजन उधर रख देता हूँ। तोता कहता है, ते आज्ञा तो मानूँगा। परन्तु मेरी एक अर्दास है कबूल प तो मैं जन्म लूं। तेरी आज्ञा मानूंगा अगर तेरी आज्ञा तो मैं एक बात बताऊँ। पुत्र बता जो बात है। वह ब मैं करने के लिए तैयार हूँ। यह इधर अमर कथा रख है। जो चार वचन सुने हैं वह अपने मन को बतान इसमें भगवान की आशीर्वाद होगी।

ज्योति खत्री, जय

जीवन-दर्शन

सिद्धपुरुष महर्षि रमण का आश्रम, प्रकृति के सान्निध्य में मनोरम शांति का साम्राज्य, भक्तजन महर्षि के प्रवचन की तैयारी में व्यस्त है। आश्रम में पालथी लगाकर शांत चित्त बैठने का नियम है। एक अंग्रेज महिला भी महर्षि को सुनने आई है। वह पालथी लगाने में असमर्थ, पैर फैलाकर बैठ जाती है। भक्तजन और प्रबंधन उसे टोकते हैं कि यहाँ इस प्रकार बैठना वर्जित है, इसलिए वह पालथी लगाकर बैठे। उक्त महिला बड़ी परेशानी में पड़ जाती है। महर्षि रमण प्रवचन-स्थल पर आते हैं, तो उन्हें यह दृश्य दीख पड़ता है, वे कुछ बोलते नहीं। उनके पैर में भयंकर गठिया का दर्द है, फिर भी आज वे दर्द को पीकर पालथी लगाकर बैठने का प्रयास करते हैं। प्रबंधक उन्हें ऐसा करने से रोकते हैं कि वे पैर फैलाकर ही बैठे रहें, शरीर को अनावश्यक कष्ट न दें। महर्षि किसी ओर ध्यान न देकर बलपूर्वक पालथी लगाते हैं। बार-बार प्रबंधकों द्वारा ऐसा करने से रोके जाने पर वे कहते हैं-'क्या मुझमें और उस महिला में आत्मा का कोई भिन्न रूप हैं ? जो नियम उसके लिए है, वह मेरे लिए भी है। प्राणीमात्र की पीड़ा एक समान है।' भक्त, प्रबंधकगण ग्लानि से विचलित हो उठे। उन्हें अपनी भूल का अहसास हो चुका था। उन्होंने तुरन्त उस भद्र महिला से सुविधापूर्वक बैठ जाने की प्रार्थना की। इसके बाद महर्षि से निवेदन किया कि वे अब अपने शरीर को अनावश्यक कष्ट न दें। अब महर्षि के मुखमण्डल पर सरल मुस्कान थी। कोरी ज्ञान चर्चा या प्रवचनों द्वारा लोगों के हृदय को स्पर्श नहीं किया जा सकता। ऐसे महानुभाव लोकमानस पर राज किया करते हैं, जो प्राणीमात्र के साथ तादात्म्य स्थापित कर लेते हैं और उनके सुख मे प्रसन्न तथा दुख में कष्ट अनुभव करते हैं।

गुरूजनों के वचनों पर श्रद्धा रखनी चाहिये

किसी नगर में ब्रह्मदत्त नामक एक ब्राह्मण रहता था। एक बार कुछ कार्यवश वह दूसरे ग्राम जाने लगा तो उसकी माँ ने कहा– बेटा ! अकेले क्यों जा रहे हो, किसी साथी को साथ ले लो। ब्रह्मदत्त ने उत्तर दिया। माँ ! तुम डरो नहीं, यह रास्ता निर्विघ्न है। साथी की आवश्यकता नहीं है।

माँ उसके इस दृढ़ निश्चय को जानकर पास की बावली से एक कर्कटक (केकड़े) को पकड़ लायी और उसे देते हुए बोली – वत्स ! यदि तुम्हारा वहाँ जाना आवश्यक है ही तो इस केकड़े को ही साथ ले लो। यह तुम्हारा सहायक होगा। पहले तो ब्रह्मदत्त को केकड़े को साथ ले जाना अच्छा नहीं लगा, वह सोचने लगा यह मेरी क्या सहायता कर सकता है ? लेकिन फिर माँ की बात को आज्ञारूप मानकर उसने केकड़े को एक कपूर की डिबिया में रखकर अपने झोले में डाल लिया और अपने गन्तव्य की ओर चल पड़ा।

कुछ दूर जाने के बाद गर्मी और धूप से व्याकुल हो वह एक वृक्ष के नीचे विश्राम करने लगा। वृक्ष की शीतल छाया में शीघ्र ही उसे नींद भी आ गयी। उस वृक्ष के खोखले में एक सर्प का निवास था। ब्रह्मदत्त को सोता देख वह उसे डँसने के लिये कोटर से बाहर निकला, पर कपूर की सुगन्ध से आकृष्ट हो वह झोले में रखी डिबिया को निगलने लगा। सर्प के दन्त–प्रहार से डिबिया टूट गयी और उसमें से निकलकर केकड़े ने साँप को अपनी तीखे नाखूनों से विदीर्ण कर डाला। इस प्रकार साँप को अपनी दुष्टता का फल मिल गया।

उधर नींद खुलने पर ब्रह्मदत्त ने देखा कि पास में ही एक साँप मरा पड़ा है। उसके मुँह में डिबिया देखकर वह समझ गया कि इसे केंकड़े ने ही मारा है। वह सोचने लगा कि माँ की आज्ञा को श्रद्धापूर्वक मान लेने के कारण आज मेरे प्राणों की रक्षा हो गयी, अन्यथा यह सर्प मुझे जिन्दा न छोड़ता।

माता, पिता गुरु तथा श्रेष्ठजन–सभी पूज्य तथा वन्द्य हैं, आदरणीय हैं, उनकी कल्याणकारिणी आज्ञा बिना विचार मान्य हैं, उनमें भी माता का स्थान सर्वोपरि है– इसलिये उसे 'अतिगुरु' कहा गया है। अतः माता आदि के वचनों को आज्ञारूप समझकर मानना चाहिये, इससे कल्याण ही होता है। नीतिशास्त्र में भी कहा गया है–

मन्त्रे तीर्थे द्विज़े दैवे दैवज्ञे भेषजे गुरौ।
यादृशी भावना यस्य सिद्धिर्भवति तादृशी।।

अर्थात् मन्त्र की साधना में, तीर्थयात्रा एवं तीर्थस्थान में, ब्राह्मणों की सेवा आदि में, देवताओं के विषय में, ज्योतिषियों में, औषधियों तथा गुरु में जिस व्यक्ति की जैसी श्रद्धा होती है, उसके अनुसार ही उसे फल मिलता है।

(पञ्चतन्त्र, अपरीक्षितकारक)

भक्त वत्सल भगवान

जो भी भक्त भगवान को सर्वस्व अर्पण कर देता है तो भगवान भी उनका सारा भार अपने ऊपर ले लेते हैं। उनसे फिर भक्त का कष्ट सहन नहीं होता। भक्त के ऊपर कैसा भी दुख–कष्ट आये, भगवान उस भक्त की रक्षा अवश्य करते हैं। चाहे भगवान को इस कार्य के लिये कैसा भी रूप धारण करना पड़े। भगवान सदैव उनका भार अपने ऊपर ले लेते हैं।

भक्त एक नाथ जी थे। बड़ी ही भगवद् प्रेमी, सारा दिन सेवा में लगे रहते थे। संसार का कोई भी कार्य नहीं करते। मात्र जीवन का लक्ष्य केवल भगवान की सेवा। नियम पूर्वक प्रातः से रात्रीकालीन तक भगवान की पूजा–अर्चना भोग लगाना – आरती आदि सेवा कार्य में तत्पर रहते थे। सारे दिन सेवा कार्य से थक जाते थे।

एक दिन भगवान ने सोचा कि मरे भक्त भगवान की सेवा करते थक जाते हैं क्यों न मैं इनकी सेवा कार्य में मदद करूँ। भगवान एक बालक का रूप बनाकर एक नाथ जी के घर पहुँचे। बोले भक्त जी। मुझे नौकरी पर रख लो, एक नाथ जी ने कहा, भाई मुझे आवश्यकता नहीं है पर भगवान के बार–बार कहनेपर नाथ जी ने उन्हें नौकरी पर रख लिया। अब भगवान नौकर बनकर भक्त के घर झाडू लगा रहे हैं बर्तन मांझ रहे हैं, रोटी बना रहे हैं आदि तुच्छ कार्य अपने भक्त के लिये कर रहे हैं। ऐसे भक्त वत्सल भगवान।

संत दर्शन की महिमा

अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण से पूछा कि हे प्रभु संत दर्शन की महिमा क्या होती है। तब भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा– हे अर्जुन ! अमुख बन में अमुख पेड़ पर एक कौआ बैठा होगा, तुम उससे यह प्रश्न पूछना ! अर्जुन उस अमुख जगह पर जाकर उस कौए से पूछा कि हे कौए मुझे बता कि संत दर्शन की महिमा क्या होती है ? तब वह कौआ काऔ–काऔ करके मर गया। उसके बाद अर्जुन श्री कृष्ण जी के पास गया और उनसे कहा–कि मैने जैसे ही कौए से यह प्रश्न पूछा तो कौए ने तो अपने प्राण ही त्याग दिए। तब भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा–कि हे अर्जुन ! अमुख सरोवर पर एक बगुला बैठा होगा, उससे जाकर पूछो। अर्जुन उस सरोवर पर गया और उससे पूछा कि हे बगुले मुझे बता कि संत दर्शन की महिमा क्या होती है ? वह बगुला भी अपनी चौंच को इधर–उधर हिलाकर मर गया। अर्जुन चिंतित होकर भगवान श्री कृष्ण के पास गया और उन्हें सारा वृतान्त सुनाया। भगवान श्री कृष्ण थोड़ी देर शांत रहकर अर्जुन से कहा–"हे अर्जुन ! अमुख मानसरोवर के किनारे एक हंस बैठा होगा। उससे जाकर पूछो। अर्जुन उस मानसरोवर पर गया और हंस से पूछा हे हंस मुझे बता कि संत दर्शन की क्या महिमा होती है ? हंस ने भी अपने सिर को इधर–उधर हिलाया और वहीं अपने प्राण त्याग दिए। घबराया हुआ अर्जुन श्री कृष्ण से जाकर कहता है कि स्वामी मेरे प्रश्न पूछने पर तो हंस ने भी प्राण त्याग दिया। तब भगवान श्री कृष्ण बोले हे अर्जुन ! चिंतित मत हो अमुख स्थान पर एक गाय अपने बछड़े को जन्म देने वाली है तुम उस गाय के बछड़े से जाकर पूछो, अर्जुन उस स्थान पर गया जहाँ गाय ने उस बछड़े को जन्म दिया था और उस बछड़े से भी वही प्रश्न पूछा तो गाय के उस छोटे बछड़े ने भी अपने प्राण त्याग दिए। अर्जुन दौड़ा–दौड़ा भगवान श्री कृष्ण जी के पास आया और उन्हें बताया कि किस प्रकार प्रश्न पूछने पर वह गाय का बछड़ा भी मर गया।

कुछ समय पश्चात् फिर अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण जी से पूछा कि हे प्रभु मुझे बताइए कि संत दर्शन की महिमा क्या होती है। कृष्ण ने कहा हे अर्जुन ! अमुख राजा को कुछ समय पश्चात् एक पुत्र रूपी संतान की प्राप्ति होगी। तुम उसके पुत्र से पूछना तब अर्जुन उस राजा के पास गया कुछ समय बाद रानी ने एक पुत्र को जन्म दिया तब अर्जुन ने उस छोटे से बालक से भी यही प्रश्न पूछा। तब उस बालक ने भी थोड़ी देर इधर–उधर देखा और अपने अपने प्राण त्याग दिए। अर्जुन बहुत चिंतित हो गया और वह तुरन्त भगवान श्री कृष्ण के पास गया और उनसे कहा कि हे कृष्ण मैने इससे भी यही प्रश्न पूछा और यह भी मर गया, ये क्या हो गया मुझसे कितने सारे पाप हो गए हैं। मेरी वजह से पहले तो उस कौए फिर हंस, बगुला, गाय का बछड़ा और ये छोटा सा लड़का जिसने अभी–अभी जन्म लिया था और मेरी वजह से इन सब की मृत्यु हो गई ये मेरे द्वारा क्या हो गया। हां श्री कृष्ण भगवान जी मौन धारण करते हुए खड़े रहे।

कुछ अरसे बाद फिर अर्जुन ने भगवान श्री कृष्ण जी से पूछा – कि हे नाथ ! कृपया कर मुझे बताइए कि संत दर्शन की महिमा क्या होती है। तब फिर भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन से कहा–कि अमुख जंगल में एक 12 वर्षीय बाल संत बैठा होगा। उससे जाकर पूछो। अर्जुन उस जंगल में गया। जहाँ वह बाल संत बैठा हुआ था। अर्जुन ने बाल संत से फिर वही प्रश्न पूछा तो उस बालक ने अर्जुन को उत्तर दिया कि–हे अर्जुन तुम अभी भी नहीं समझे कि संत दर्शन की महिमा क्या होती है। देखो जब मैं कौए की यौनी में था। तब तुम मेरे पास आए और तुम्हारे दर्शन के बाद मरकर मुझे बगुले की योनी मिली। बगुले के बाद हंस, फिर गाय के बछड़े के रूप में फिर राजा के पुत्र और फिर इस बाल संत रूपी यौनी में जन्म लिया। बस संत दर्शन की महिमा यही होती है। मनुष्य के बुरे कर्म (पाप कर्म) नष्ट होते जाते हैं और सत् कर्मो में वृद्धि होती है।

नर तन पाए यतन कर ऐसा, जिसमें वो करतार मिले।
ऐसी उत्तम योनि पदारथ, फिर नहीं बारंबार मिले।।

दीपक माखीजा,
सिवनी (म.प्र.)

लीला दर्शन

नटराज



कन्हाई से पूछो कि 'तू अमुक काम कर सकता है?' इसका एक ही उत्तर है – 'कर दूँ ?' इसको 'ना' करना हीं आता। आज वन में आकर जब भद्रकी दृष्टि बंदरों के थपतिपर पड़ी तो वह पूछा बैठा–'कनूँ ! तू उस मोटे बंदर को वैसे नचा सकता है, जैसा कल मदारी अपने बन्दर को चाता था ?'

'उससे अच्छा नचाऊँ। नचाऊँ ?' कन्हाई ताली बजाकर सन्न हो गया। 'कैसे नचावेगा ? तेरे पास डमरू कहाँ है ?' धुमङ्गल ने छेड़ा।

'डमरू ? उसे तू ला।' कृष्णा ने समाधान निकाला–'नहीं मैं तेरी तोंद बजाऊँगा।'

'अरे, नहीं !' मधुमङ्गल चौंककर दो पद पीछे हटा और पने उदर की ओर देखने लगा। इस नटखट का क्या ठीक ? ह उसके पेट पर ताल पीटने लगेगा।

'डमरू मैं लाऊँ ?' तोक कूदा और उत्तर की अपेक्षा किये ना दौड़ गया। इसे पता कि आज अंशु एक छोटा डमरू लाया ।

कल सायंकाल बालक गोचारण से लौटे तो नन्दद्वार पर क मदारी अपना बंदर लिये उन्हीं की प्रतीक्षा कर रहा था। वह ध्याह्न के पश्चात् आया होगा। बाबा ने उसे रोक लिया होगा के उसके बंदर की कुलाचें देखकर बालक प्रसन्न होंगे।

मदारी का डमरू बजा। बालक एकत्र हो गये। उसका दर नाचता रहा। घर जाकर अंशु मचल गया कि वह डमरू गा। उसके पिता ने एक छोटा डमरू उसके लिये कहीं से रात ही ढूँढा, क्योंकि अंशु की हठ पूरी न करो तो वह ब्रजराज के स उसी समय जाकर अपनी हठ पूरी कर ही लेता और बाबा तो प्रत्येक बालक अपना लगता है। तब अंशु के पिता को लाहना सुनना पड़े।

'कनूँ मोटे बंदर को नचावेगा। तू उसे अपना डमरू दे दे।' कने दोड़कर अंशु से कहा। अंशु तो सबेरे से चाहता है कि नूँ ही पहले उसका डमरू बजाये, किन्तु बालक में क्या धैर्य ता है ? अब वह डमरू बजाते–बजाते दौड़ा आया, किन्तु मरू बजाना आता नहीं नन्हे अंशु को। वह अटपटे शब्द मात्र र पाता है।

'ले, तू मदारी जैसा बजा पायेगा ?' अंशु का पूछना व्यर्थ । कन्हाई ने हाथ में लिया तो ऐसे बजाने लगा जैसे मदारी ने डमरू बजाना इसी से सीखा होगा।

श्याम सुन्दर हाथ की अंगुलियाँ हिलाकर बुलाये तो आकाश का उड़ता पंछी भी उतर आता है, वृक्ष पर बैठे समीप आने को उत्सुक बंदर को आने में क्या देर लगती।

'इसे बाँध,' मण्डली भद्रने अपने कन्धे से रज्जु को उतारकर फेंका।

'तुझे बाँधूँ ?' नन्द नन्दन ने रज्जु ले ली। उसे खोला। एक सिरा भी पकड़ा और बंदर की ओर देखकर बोला, किन्तु फिर रज्जु फेंक दी। इसे किसी को बाँधना नहीं रुचता। यह तो बाँधे को खोलकर प्रसन्न होता है।

'मदारी ने तो अपने बंदर को सिखलाया था।' श्रीदास बोला–'तू कैसे नचायेगा ?'

'मैं इसे सिखाऊँगा।' कृष्ण को हारना कहाँ आता है। कपि से बोला–'तू मैं जैसे नचाता हूँ, नाच ! नहीं तो तेरे कान दादा पकड़ेगा।

सचमुच संकेत पाते ही वह भूरा लाल मुख का मोटा बंदर अपने दोनों पैरों पर खड़ा हो गया। श्याम ने संकेत किया और उसने भद्रके हाथ का लकुट झपट लिया। मधुमङ्गलको दाँत दिखाकर डरा आया। लकुटको दोनों कर टिका कन्धे पर धर लिया।

अब कृष्ण के करों में डिम–डिम डमरू बजने लगा और ब्रजराज कुमार के सुकुमार चरण हरित दूर्वापर ताण्डव की गति से फुदकने लगे। बंदर कूदने लगा, नाचने लगा कन्हाई के अनुकरण पर और जहाँ अनुकरण में असमर्थ होता है वहाँ छलाँग ले लेता है अथवा सिर पृथ्वी पर टिकाकर उलटे–सीधे कलाबाजी दिखाने लगता है।

सब गोप कुमार ने मण्डली बना ली है। उनके मण्डल के बाहर गायों–वृषभों, बछड़े–बछड़ियों में मिले मृग, नीलगाय, केहरी आदि वन–पशुओं का ठट्ट लगा है। समीप वृक्षों पर सम्पूर्ण वन के पक्षी लदे पड़े हैं। हंस, सारस जैसे जल–पक्षी भी वृक्षों पर बैठे हैं। सब निष्कम्प, नीरव, एकटक देख रहे हैं।

डिम–डिम, डिम–डिम डमरू बोलता जा रहा है। मोटा लाल मुखका बंदर नाच रहा है, कूद रहा है, कुलाचें ले रहा है। कन्हाई को देख–देखकर नाच रहा है।

मयूरपिच्छ हिल रहा है। अलकें उछल रही है। कुण्डल, वनमाला उछल रही है। पटुका फहरा रहा है। ब्रज का नटवर नटराज बन गया है। ललित ताण्डव की गति से इसके चरण उछल रहे हैं। कभी पहला, कभी दूसरा चरण ऊपर उठता है और दोनों कर ऊपर-नीचे हो रहे हैं। यह प्रेम में निमग्न होकर डमरू बजाता ताण्डव नृत्य नाच रहा है।

पर्व महिमा

श्री राम-नवमी (रामावतार-रहस्य)

श्री राम का अवतार एक कल्प (चार अरब ..त्तीस करोड़ वर्ष) में होता है, जो ब्रह्मा का एक दिन क..लाता है। इस प्रकार ब्रह्मा की पूरी उम्र में छत्तीस हजा.. बार रामावतार होता है।

इस बारह–कल्प वाले राम–अवतार को साढ़े नौ लाख वर्ष हो चुके हैं, किन्तु फिर भी आज ..क उनकी जयन्ती राम–नौमी के रूप में बड़े ही उत्साह ..े मनाई जाती है। इसका कारण उनका आदर्श चरित्र .. है। वे ही केवल मर्यादा पुरुषोत्तम कहे जाते हैं और कोई नहीं।

श्री राम का प्राकट्य चैत्र–मास शुक्ल–पक्ष, नौमी–तिथि, पुनर्वसु नक्षत्र, कर्क–लग्न, सुकर्मा–योग, अभिजित–मुहूर्त में मंगलवार को हुआ था। उनके जन्म के समय जोग, लग्न, ग्रह, वार तिथि सभी अनुकूल हो गये थे। चराचर हर्ष से भर गया था, क्योंकि राम–जन्म सभी के लिए सुख मूल है।

जन्म में तिथि ही मुख्य है, क्योंकि वहीं जयन्ती कहलाती है। तिथि को व्रत होता है व्रत का अर्थ संकल्प होता है कि हम भी आज से श्री राम के आदर्श–चरित्रों पर ही चलेंगे। जिससे मेरा, समाज का और संसार का कल्याण होगा। मानवता का विकास होते हुये सर्वत्र सुख–शान्ति का साम्राज्य फैलेगा।

नौमी तिथि का रहस्य

'अंक अवधि नौमी तिथि जैसे, अवतारनिपति रामहुँ तैसे। नवम अंक सम समरस रहते, उस अनन्य चिद विद सब कहते।।

जैसे नौमी – तिथि अंकों की सीमा है, वैसे ही श्री राम जी भी अवतारों के पति (स्वामी) हैं। वे नौ के अंक के समान सदा ही समरस (एकरस) रहते हैं। ऐसा सभी अनन्य आत्मवेत्ता कहते हैं मानस में योगीराज जनक जी का कथन भी है कि **''जो तिहुँकाल एक रस रहई''**। नौ का पहाड़ा आधन्त समरस रहता है। कहीं भी घटता–बढ़ता नहीं है। मानसकार ने इसी आशय से नव–अंक सम्बन्धी प्रसंग त्रेसट दिये हैं। क्योंकि त्रेसट का अंक भगवत्सन्मुखता का प्रतीक है 'यथा **जग से रहु छत्तीस हुइ, राम चरन छै तीन'** इत्यादि नव–अंक की तरह निर्भय (समरस रहते हुये) भजन करने का उदबोधन भी दिया गया है **'तुलसी अपने राम को भजन करहुं निस्संक। आदि अन्त निरवाहि है, जैसे नौ को अंक''।**



श्री राम का इतना उदात्त चरित्र है कि **''बेरिउराम बड़ाई कहीं बोलनि मिलन विनय मन हरहीं।'** उदाहरण है कि सचिवों के रोकने पर भी रावण ने श्री राम के चरित्र की बड़ाई करके अपनी पुत्र–वधु सुलोचना को मेघनाथ का सिर लेने के लिए राम के पास भेजा था।

मानस पढ़ने से पता चलता है कि श्री राम .. मातृ–पितृ–गुरू भक्ति की कितनी उदात भावना थी.. भ्रातृ–स्नेह, पत्नी–प्रेम, प्रजा–प्रेम, एक पत्नी–व्रतधर्म कैस.. था। यज्ञ के समय गुरू के कहने पर भी श्री राम .. दूसरा विवाह नहीं किया, बल्कि अनूठी युक्ति से कहा कि.. **'लीक-लीक गाड़ी चलै, लीकहि चलै कपूत। लीक.. छोड़ितीनों चलैं, सायर, सिंह, सपूत'' आदि** वे अप.. कुल की कुरीति बहु–विवाह प्रथा की रूढ़ि पर नहीं चले.. बल्कि एक पत्नी व्रत धर्म का उच्चादर्श स्थापन कर.. वाले हुए। सामाजिक कुरीतियों का बहिष्कार कर.. परिमार्जित आदर्श जीवन के निर्वाहक हुये। उनके मर्याद.. पुरुषोत्तम कहलाने का यही राज है।

श्री राम ने सम्पूर्ण संतों के आश्रमों में जा–जा क.. सुख दिया था। यथा **'सकल मुनिनि के आश्रमनि जा.. जाइ सुखदीन।'** इसीलिये तो कहा गया है कि **'रा.. सरिस नहिं तीनहुँ काला'** तीनों कालों (भूत, भविष्.. वर्तमान) में राम के समान और कोई नहीं है। आजक.. तो संत कथित 'भूप प्रजाशन' (प्रजा–भक्षक शासक.. वाली बात चरितार्थित है। माली, भानु, किसान स.. नीति–निपुण रक्षक शासक कहाँ है ?

श्री राम ने निषाद के हाथ का जल पीकर औ.. शबरी के बेर खाकर अछूतोद्धार का अभूतपूर्व साम्यव..

का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। खर–दूषण, त्रिसरा, विराध और कबन्ध को मार कर भक्तों को सुख दिया। बाली को मार कर सुग्रीव को शरण में लिया। विभीषण को लंकेश बनाया। रावण का कुल सहित संहार कर आतंकवाद मिटाया। इस प्रकार **'निसिचर हीन करहुँ महि'** वाले संकल्प को पूर्ण किया। देवताओं को दिये गये आश्वासन **'जनि डरपहुमुनि सिद्ध सुरेसा'** का निर्वाहन किया ! श्री राम राज्य के भूखे नहीं थे। उन्होंने अपने भाई के लिये अवध का राज्य त्याग दिया था। **'भायप भलि चहुँ बन्धु की जल माधुरी सुवास'** वाली कहावत आज तक प्रसिद्ध है।

चौदह–वर्षीय वनवास से लौटने पर भरत जी ने सहर्ष श्री रामजी को राज्य लौटाकर सम्मान पूर्वक उनका राज्य अभिषेक किया ! श्री राम नें स्वभावतः लोक हित का संकल्प लिया। श्रीराम जी के राज्य पद पर आसीन होते ही तीनों लोक हर्षित हुये। सभी के दुख मिट गये। कोई किसी से बैर नहीं करता। राम–प्रताप से विषमता खो गई। सभी सदाचारी होने से भय, शोक और रोग मुक्त हो गये, सभी लोग परस्पर प्रेम करते हैं। कोई भी दरिद्री, दुखी और दीन नहीं रहा। सभी सदगुणी हो गये। मानस में उल्लेख है कि **''दैहिक दैविक भौतिक तापा - राम राज नहिं काहुहिं व्यापा।''** सभी तीनों दुखों से रहित हो गये। श्रीराम राज के वैभव का वर्णन शेष और शारदा भी नहीं कर सकते हैं। उस समय समस्त भू–मंडल पर एक ही राम राजा थे। सभी मनुष्य एक नारि व्रतधारी थे और स्त्रियाँ मन, कर्म, वचन से अपने–अपने पतियों का हित करने वालीं पतिव्रतायें थीं। श्रीसीता जी आदर्श गृहिणी के रूप में अपने हाथों से ही घर के सब कार्य करती थीं और पति के रुख को रखकर आज्ञा में चलतीं थीं। मायके और ससुराल के वैभव के अहं को भुलाकर निपुण सेवक–सेविकाओं के होते हुये भी पति की सेवा स्वयं ही करती थीं। उनकी तत्सुखसुखित्म वाली भावना थी मिथ्या मान, मद को त्याग कर सम्पूर्ण सासुओं की सादर सेवा करती थीं।

सभी भाई राम–भक्ति करते हुये श्री राम की सेवा करते थे। श्री रामाज्ञा के लिये विनीत भाव से उनकी ओर देखते रहते थे। श्रीराम भी भाइयों से प्रेम करते हुये उन्हें नाना प्रकार की सुन्दर समुचित नीति सिखाते रहते थे। इस प्रकार सभी लोग सुर दुर्लभ सुख–भोग करते हुये श्रीराम–भक्ति की भी याचना करते रहते थे।

राजा के आचरणों का जनता पर प्रभाव पड़ता रहता है। कहावत भी है कि 'यथा राजा तथा प्रजा' इत्यादि राजा ही काल का कारण होता है, काल राजा का कारण नहीं होता। उदाहरण है कि राजा राम ने त्रेतायुग में भी सतयुग की करनी करके दिखादी और रावण ने त्रेतायुग में कलियुग का विषाक्त धर्म फैला दिया। इसी से महाभारत में कहा गया है कि **'राजा हि कालस्य कारणं'** इत्यादि। श्री राम ने ग्यारह हजार वर्ष राज्य किया। इतने दीर्घ–काल में उनके दो ही पुत्र हुये। वह संयम – परिपालन द्वारा परिवार–नियोजन का आदर्श–सूत्र समाज के सामने रखा। इस प्रकार भगवान श्रीराम के अनन्त गुण, कर्म हैं। हमें उनके गुण, कर्मों को अपनाना चाहिये, तभी उनका जन्म–दिन मनाना सार्थक है। हम राम को मानें, पर राम की न मानें तो इससे वे कैसे खुश हो सकते हैं क्योंकि उनकी घोषणा है कि **''सोइ सेवक प्रियतम मम सोई–मम अनुशासन मानै जोई।''** जो मेरी आज्ञा को मानता है, वही मेरा सेवक है, वही मेरा प्यारा है। अतः हमें अपना चरित्र सुधारना चाहिये, तभी उनकी भक्ति करना सार्थक होगा। चरित्र हीन मानव का सब कुछ लुट जाता है यथा

''धन यदि गया गया नहिं कुछ भी स्वास्थ्य गये कुछ जाता है।''
चरित्र हीन मानव का जग में, सब कुछ ही लुट जाता है।

आज देश को शुभ चरित्र की बहुत आवश्यकता है। सदाचार पूर्ण चरित्र के बिना आज अनेकों समस्यायें खड़ी हो रही हैं। उनका निराकरण श्रीराम के ही आदर्श जीवन पर चलने से ही सम्भव होगा, अन्यथा नहीं। हम रामायण को पढ़ते हैं, पर महाभारत की रीति पर चलते हैं यथा **'रामायण को पढ़त सब, महँभारत की रीति'** हम कुचालों से प्रीति कर रहे हैं। इसी से हमारे देश का पतन हो रहा है। भुक्त–भोगी इसका अनुभव कर रहे हैं।

अतः हमें भविष्य में आने वाले संकटों से बचने के लिये राम–नौमी के पावन पर्व पर श्रीराम के आदर्श चरित्रों पर चलने का दृढ़ संकल्प लेना चाहिये, यही मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम की जयन्ती मनाने का सही उद्देश्य है। इति शुभम्।

सुरेश (साँवल) प्रेम-प्रकाशी
प्रेम–प्रकाश आश्रम, मुरैना (म.प्र.)

भगवान झूलेलाल का अवतार क्यों ?

हर वर्ष की तरह आ गया सिन्धी समाज का महापर्व चेटीचण्ड। पूरे भारत वर्ष में जोर–शोर से तैयारियाँ, पखवाड़ों के मध्य विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम।

क्या, कभी सोचा ! इष्टदेव का जन्म दिवस या पर्व क्यों मानते हैं। क्या कारण था अवतार लेने का। विचार करके देखो। क्या हम जो ये पर्व मना रहे हैं, उनसे भगवान प्रसन्न हो जायेंगे। जिस कारण उन्होंने अवतार लिया था। क्या हम उस धर्म को निभा रहे हैं।

हर मनुष्य जानता है कि हमें अपने धर्म पर स्थित रहना चाहिये। धर्म के अनुसार चलना चाहिये। धर्म अनुसार जाति व संस्कृति का पालन करना चाहिए। पर करता नहीं ! क्यों ? क्योंकि उसे अपने जाति धर्म से प्रेम नहीं ! मात्र दिखावे के लिये बड़े–बड़े आयोजन कर लेगा। त्योहार उत्सव पर्व आदि मना लेगा। किन्तु उसके इतिहास व महत्व को जानने का प्रयास ही नहीं करता।

परम श्रद्धेय सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज चेटीचण्ड महापर्व पर एक बात का विशेष जोर देते थे। वे सभी से पूछते थे कि भगवान झूलेलाल ने अवतार क्यों लिया ? सभी का कहना होता था। हिन्दू जाति धर्म की रक्षा हेतु। हिन्दू धर्म क्या ? चोटी व जनेऊ (हिन्दू धर्म की रक्षा के दो मुख्य चिन्ह) तो भगवान ने अवतार लिया हिन्दू धर्म की रक्षा हेतु अर्थात चोटी व जनेऊ की रक्षा।

पहले तो मिर्खशाह द्वारा धर्म पतित किया जा रहा था। पर अब हमारे ऊपर कौन अत्याचार कर रहा है ? कौन हमारे जनेऊ व चोटी काट रहे हैं। विचार करो। स्वयं अपने धर्म की रक्षा नहीं कर पा रहे हो तो पर्व उत्सव मनाने से क्या लाग। सत्य क्या है ? विचार करना।

पुराना इतिहास दोहराने पर मालूम पड़ता है कि वरूणावतार भगवान श्री झूलेलाल ने हिन्दुओं की धर्म रक्षार्थ हेतु अवतार लिया था। मुसलमानों द्वारा हिन्दुओं पर अत्याचार हो रहे थे, अपने धर्म में मिलाने के लिये चोटी व जनेऊ को काटकर धर्म से पतित किया ज़ा रहा था। हमारा धर्म नष्ट कर रहे था। तब हिन्दुओं ने अपने धर्म की रक्षा के हित भगवान से करूणा भरी पुकार की। हे भगवान ! हमारी रक्षा करो। हमारे धर्म की रक्षा करो। तब वरूणावतार भगवान श्री झूलेलाल जी ने इस धरा धाम पर अवतार धारण किया। धर्म की रक्षा की। धर्म को पुनः स्थापित किया। दूसरे के धर्म जाने से रक्षा की। जिस प्रकार गीता में भगवान द्वारा बता गया है कि :–

"स्वधर्मे निधनं श्रेयः पर धर्मे भयावह"

अपने धर्म में तो मरना भी कल्याण कारक है और दू का धर्म भय को देने वाला है। जैसे मछली का पानी जीवन है वैसे ही धर्म भी मनुष्य का जीवन है। अतः स अपने धर्म पर स्थिर रहना चाहिये। अब विचार करना हो कि क्या हम अपने धर्म का पालन कर रहे हैं ? क्या ह जनेऊ व शिखा धारण कर रखी है ? नहीं ! तो फिर अपने इष्टदेव का अपमान कर रहे हैं। जिन्होंने कष्ट करके अवतार लिया। दूख दूर किया। पर हम उस धर्म निभा नहीं रहे।

पहले तो दूसरों के द्वारा अत्याचार हो रहा था, धर्म विमुक्त किया जा रहा था। पर अब ! हमारे ऊपर क अत्याचार कर रहा है ? हम स्वतंत्र होते हुए भी परतंत्र अपने ही पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं। स्वयं अपने आप पंगु बना रहे हैं अत्याचार कर रहे हैं। स्वयं अपने धर्म पतित हो रहे हैं। अतः अपने धर्म को बचाना होगा।

धर्म अपने माहीं हरदम प्यार कर नटना नहिं।
सीस जावे जान पर धर्म से हटना नहिं।।

धर्म के खातिर ही कई सन्तों–ऋषियों, मुनियों और ने अपने प्राणों तक आहुतियाँ दे दी थी। धर्म रक्षा के खा ही उस पर ब्रह्म परमात्मा को बार–बार इस भारत भूमि अवतारित होना पड़ता है। अतः मनुष्य को चाहे कितनी भयंकर यातनाएं क्यों न भुगतनी पड़े, पर अपने धर्म पर स्थित रहना चाहिये। स्वधर्म को पर धर्म से उत्कृष्ट समझना चाहिये। स्वधर्म पालन हो जाये तो भी अपने महान भाग्यशाली समझना चाहिये।

अतः अपने धर्म की रक्षा हेतु हिन्दू भाइयों को स करो। अपने धर्म को कायम रखने के लिये जनेऊ व (शिखा) धारण करो। स्वयं धारण कर अन्य सभी को पुण्य कार्य के लिये प्रेरित करो। तभी अपना धर्म बचेग अपने इष्टदेव को प्रसन्न कर सकोगे। तब चेटीचण्ड म मनाना हमारा सार्थक होगा।

गुरुकृपा, अमरापुर स्थान ज

विहंगम दृष्टि

लेखा-जोखा जीवन यात्रा का

श्री प्रेम–प्रकाश मण्डल के महामण्डलेश्वर सद्गुरु स्वामी भगत–प्रकाश महाराज जी अपनी दिव्य वाणी में बताते हैं प्रत्येक प्राणी प्रतिदिन 21,600 स्वांस ग्रहण करता है। हमारे सत्शास्त्र वेदों में लिखा है मनुष्य की उम्र सतयुग में 400 वर्ष, त्रेतायुग में 300 वर्ष, द्वापर युग में 200 वर्ष कलयुग में 100 वर्ष है और वर्तमान में आज 60 वर्ष की लगभग मानी गयी है। हमें इस मूल्यवान समय में भगवान को प्राप्त करना परम पद को पाना है। जन्म से लेकर 5 वर्ष की उम्र में बालक अवस्था होती है। यह अनजान अवस्था होती है। 6 वर्ष से लेकर 60 वर्ष की उम्र सुजान अवस्था की होती है। 55 वर्ष की उम्र में ही सभी कुछ प्राप्त करना है। 55 वर्षों में 20,075 दिन होते हैं। यह समय काम्य कर्मों में किस प्रकार से गुजरता जा रहा है। आइये करें विश्लेषण–

नित्य काम्यकर्म दिन	प्रतिदिन कुल समय	घन्टों में,	कुल दिन
(1) सुबह उठकर ब्रुश, मंजन आदि	20,075 X 5 मिनट प्रतिदिन	1673	69 दिन।
(2) शौच आदि क्रिया	20075 X 20 मिनट प्रतिदिन	6692	279 दिन
(3) स्नान करना, कपड़े, पहनना, तैयार होना	20075 X 20 मिनट प्रतिदिन	6692	279 दिन
(4) चाय पीना, नाश्ता करना, अखबार पढ़ना	20075 X 25 मिनट प्रतिदिन	8365	349 दिन
(5) दोपहर को चाय, नाश्ता, फलाहार	20075 X 20 मिनट प्रतिदिन	6692	279 दिन
(6) दोपहर का भोजन, रात्रि का भोजन करना	20075 X 40 मिनट प्रतिदिन	13382	558 दिन
(7) विद्या अध्ययन करना, व्यापार करना, सर्विस करना	20075 X 7 घन्टे प्रतिदिन	140525	5855 दिन
(8) रात्रि में 10 बजे से प्रातः 7 बजे तक विश्राम करना	20075 X 9 घन्टे प्रतिदिन	180675	7528 दिन
(9) शादी उत्सव, सफर करना, परिवार में, अस्पतालों में, शमशानों में, रतिक्रिया में, संसार के अनेकों कार्यों में		17096	4879 दिन
	कुल घन्टे	481792	20075 दिन

इस प्रकार हमारे जीवन के 20075 दिन संसार के काम्य कर्मों में ही गुजर जाते हैं। संसारी जीव कहते हैं। यह नहीं करेंगे तो संसार का चक्र कैसे चलेगा। हमारे शास्त्र बताते हैं श्री कृष्ण ने कहा–हे अर्जुन संसार में रहकर कर्म तो करने ही पड़ेंगे, पर तू सारे कर्म आसक्ति ममता से रहित होकर और मेरी शरण में रहकर कर, तब तू कर्मोबन्धन में न पड़कर मुझे प्राप्त हो जाये हमारे गुरूदेव सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज बताते हैं कि अपने सारे कर्म कर्तव्य कर पर युक्ति से+जैसे गाँवों में स्त्री कुंए से पानी लाती है सिर पर एक मटका, मटके पर मटका तीन मटके हैं। हाथ में बच्चा है कंधे पर रस्सी है। साथ सहेली से वार्तालाप भी हो रहा है। पर सारा ध्यान कहाँ पर होता है। मटकों पर ऐसे ही कर्म करते हुये। परमात्मा में ध्यान होगा तो हमें निज धाम की प्राप्ति सम्भव है। मनुष्य जन्म सफल होगा। इति शुभम्

"श्री सदगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अन्तः प्रेरणासे निसृत..........."

सुरेश (साँवल) मुरैना (प्रेम प्रकाशी)
प्रेम प्रकाश आश्रम, मुरैना

काव्यांश

(1) हे प्रभु तेरे चरणों में प्रणाम करूँ बारम्बार
(2) तेरी वन्दना कर कर मैं दूर करूँ बुरे विचार
(3) हे प्रभु मैं तेरा भिखारी माँगू ज्ञान का दान
(4) नहीं किसी को कष्ट दूँ प्रभु दे वाणी में नम्रता
(5) ऐसा धीरज दे दो प्रभु मुझे कष्टों को सह पाँऊ
(6) ऐसी समझ मुझे दे दो प्रभु जी अपनी गलती जानूँ
(7) वैसी गलती दुबारा न कर पाँऊ ऐसी बुद्धि दे दो
(8) शुभ विचारों को प्रतिपल प्रति क्षण लाऊँ बारम्बार
(9) सच्चाई के पथ पर चलकर निर्भय सदा रहूँ
(10) विषय विकारों से दूर रहकर आपका ध्यान करूँ
(11) क्रोध भी आये तो हे प्रभु रहे जल पर रेखा समान
(12) लोभ किसी का न करूँ रहूँ सरल सदाचार
(13) मोह मैं तुझसे ही करूँ रखूँ दुनिया से व्यवहार
(14) अहंकार न आये मुझको कृपा करना प्रभुजी
(15) ईर्ष्या का बीज मन में ना फैले दया करना प्रभुजी
(16) हे प्रभु तेरे चरणों में प्रणाम करूँ बारम्बार
(17) तेरी वन्दना कर मैं दूर करूँ बुरे विचार

जेठानन्द लालवानी (ब्यावर)

तर्ज :- छोटी-छोटी गैंया, छोटे-छोटे ग्वाल

थलु :- स्वामी टेऊँराम आ राखो रखपालु,
पहिंजे प्रेमिनि जो रखंदो आ ख्यालु।

(1) स्वामी टेऊँराम जो आहे कमालु,
सर्वानन्द जी आ शक्ति विशालु।
पहिंजे प्रेमिनि जो रखंदो आ ख्यालु,
स्वामी टेऊँराम आ.........................

(2) शान्ति प्रकाशु कंदो सभ जी संभाल,
सुख सा गुज़िरंदो सजो हीउ सालु।
स्वामी टेऊँराम आ.........................

(3) हरिदासराम आहे दीननि दयालु,
नामु जपाए कंदो सभ खे निहालु।
स्वामी टेऊँराम आ.........................

(4) अंतरयामी ज़ाणे थो सभु हालु,
बाबलु सभ सां भलाईंदो भालु।
स्वामी टेऊँराम आ.........................

(5) गुरूअ ते चाढ़िया मां रेशमी रूमालु,
सारीअ संगति खे कंदो माला मालु।
स्वामी टेऊँराम आ.........................

(6) दासु हरिश आहे नंढिड़ो ॿालु
नंगु निभाईंदो अची नंगपालु।
स्वामी टेऊँराम आ.........................

हरीशकुमार वेडवानी, (गोन्दिया

तर्ज :- ये धोके प्यार के धोके

तर्ज :- मेरे देवा सत्गुरू देवा..............(2)

सारी उमर करू मैं तेरी सेवा कि जय–जय
सत्गुरू देव कि वो मेरे प्यारे गुरूदेव–गुरूदेव
देवा सत्गुरू.....................

प्रेमी सभी हरिगुण गाओ, और जीवन सफल बनाओ–2
कि जय–जय सत्गुरु देव कि वो मेरे प्यारे गुरू देव।
मेरे देवा..........................2

करूं सेवा साँई जी की सेवा
मिले प्रेमा भक्ति का मेवा
कि जय–जय सत्गुरू देव, कि वो मेरे प्यारे गुरू देव।
मेरे देवा..........................2

जिसकी सूरत चाँदी जैसी–2
जिसने भक्ति की हरि जैसी–2
वो मेरे प्यारे गुरूदेव–2
मेरे देवा..............................

जिसकी महिमा सबसे निराली–2
सारे देश में फैली हरियाली–2
कि वो मेरे प्यार गुरूदेव–2
मेरे देवा......................देवा

प्रेम प्रकाशी विमला पंजवानी
(रायपुर

गीत गुंजन

भजन

तर्ज :- मेरा जीवन कोरा कागज...............

दिल में है तस्वीर तेरी–होठों पे तेरा नाम।
मन मेरा तुझको तुकारे–स्वामी टेऊँराम।।

एक पलक भी मन ये मेरा–ना तुमको भूले
मुरझाएँ ना दुःख में मनुवा–सुख में ना फूले
याद में गुजरे मेरी, हर सुबह हर शाम।
दिल में है तस्वीर तेरी......

तेरे हाथों में सौंपी–अपनी जीवन डोर
गुरुवर है अब मर्जी तेरी ले जाओ जिस ओर।
तुम जहाँ सुख है वहाँ, तुम बिन नहीं आराम।।
दिल में है तस्वीर तेरी......

है भरा भरपूर तेरा करूणा का भण्डार
बूंद इक मिल जाए तो हो भव से बेड़ा पार।
राम तुम मेरे लिये हो–तुम ही हो घनश्याम।।
दिल में है तस्वीर तेरी......

पतझड़ का ये जीवन मेरा अवगुणों की खान
भोग विषयों को ही करता ले रहा विषपान
बन गया जीवन पिया जब प्रेम का भर जामा।।
दिल में है तस्वीर तेरी......

भजन

तर्ज :- घर आया मेरा परदेशी.................

थलु :– धनु–धनु स्वामी सर्वानन्द हुयो,
हर हंधि जहिं आनन्दु कयो।
(1) नंढपण खा वैराग्री बणी, नहिं सदो वियो नारो हणी
पातो जहिं ब्रह्मानंदु हुयो।
(2) मोह ममत जो त्यागु कयो, आत्म में अनुराग कयो,
जीवन मुक्ति स्वच्छंदु हुयो।
(3) प्रेम संदो प्रचार करे ब्रह्मज्ञान सां भरम हरे,
काटे सभु दुःख द्वन्द वयो।
(4) आखिर तांई गुरूभगति कई–भज़न गुरनि में प्रीति कई
नालो तहिंजो थी बुलंदु वयो

मीनू श्याम प्रेम प्रकाशी, जयपुर

भजन

तर्ज :- ये देश है वीर जवानों का.........

मेरे सांई की न्यारी हस्ती है
यहाँ मिलती प्रेम की मस्ती है
इस मस्ती की महिमा क्या बोलें
मेरे सांईं की गरिमा क्या बोलें
सत्‌नाम साक्षी बोल प्यारे
साक्षी शिवोहम् बोल

1. मेरे सत्‌गुरु प्राण पियारे जी,
मेरे प्रीतम प्राण आधारे जी
मेरे सांईं का जलवा........क्या बोलें.......
2. है शोभा अमरम्पार यहाँ
और प्रेम भरी बहार यहाँ
इस प्रेम की महिमा......क्या बोलें..........
3. यहाँ सुखड़े मिलते लासानी
जो जग में होते लाफानी
इन वचनों की महिमा......क्या बांलें.......
4. तू सारे जहाँ का वाली है
तेरी जग में शान निराली है
तेरी शान रूहानी..........क्या बोलें.......
5. मेरे भाग हुए हैं आज उदय
करूँ दिल से तेरी जय–जय
तेरी शान की महिमा........क्या बोलें......
6. सब कहते तुझे दयालु परम
तू सत्‌गुरु है, तेरे दास है हम
तेरी दया की महिमा......क्या बोलें......

विनोद साजनानी (आगरा)

जयपुर में चैत्र मेला है

तर्ज : है प्रीत जहाँ की रीत सदा, मैं गीत वहाँ के गाता हूँ
थलु : जयपुर में चैत्र मेला है, सब संतों का जहाँ टोला है,
मिलके चलो सब प्रेमी वहाँ, धुनि सत्‌नाम साक्षी लगाएगें।
हो–हो–हो–हो–
जहाँ सद्‌गुरु भगतप्रकाश में हम सांई टेऊँराम को पाते हैं,
सब संतजन मिलके वहाँ नित गीत सनातन गाते हैं,
इतने सुंदर गुरुदेव जहाँ–
ओ इतने सुंदर गुरूदेव जहाँ,
मैं नित नित – मैं नित नित शीश झुकाता हूँ
मिलके चलो सब प्रेमी वहाँ............(1)
सेवा करके तन मन की वहाँ जीवन को सफल बनाऐंगे,
और कुछ न आए हमको, हम धुनि शिवोहम् लगाएंगे,
मिलेगी गुरु की कृपा हमें
ओ मिलेगी गुरुकी कृपा हमें–
ओ मिलेगी गुरु की कृपा हमें, झोलियाँ भर–भर के लाएंगे।
मिलके चलो सब प्रेमी वहाँ...............(2)

पंकज लालवानी, *ग्वालियर*

होली उत्सव, क्या सन्देश देता है ?

(परम श्रद्धेय सत्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज)

सन्तों के संग, होरी खेलो खेलो, पीवो प्रेम प्याला रे।
जांके पीवत होय बहारी, दिन दिन बढ़ती जाय खुमारी होवे मन मतिवाला रे।।

प्रातः स्मरणीय परम श्रद्धेय सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपने जीवन में अपने ही मन को समझाने का भरसक प्रयास कर रहे हैं कि यदि तुम्हें संसार समुद्र से पार होना है तो प्राचीन समय से ही होली खेलने का जो उत्सव मनाया जा रहा है, वो होली का उत्सव हमारे जीवन में क्या सन्देश लेकर आता है ? यह उत्सव हमारे जीवन में यह पैगाम लेकर आता है कि भक्त प्रहलाद ने जिस तरह भगवान श्रीराम को प्राप्त किया एवं संसार समुद्र से पार हो गये, उसी तरह हम भी भगवान श्रीराम को प्राप्त करके उस अवस्था को पा सकते हैं।



हिरणाकश्यप जो भक्त प्रहलाद का पिता था, वह ज्ञानी, ध्यानी व तपस्वी था। उसने भारी तप किया था एवं उसी तप के बल से अपने आप को सारे जगत का भगवान मान लिया एवं दूसरों को भी स्वयं को भगवान मानने के लिये मजबूर कर दिया। और श्रीराम को भूल गया।

हिरणाकश्यप राम विसारियो,
नरसिंह तंहिजो पेट हो फाड़ियो प्रहलाद पातो राम।
घड़ी-घड़ी जप राम जो नालो, मतां विसारी राम।।

तप से उसे देवलोक का भी राज्य मिला। सभी देवता भी उसे भगवान मानने लगे कोई डर से, कोई ज्ञान से, कोई प्रेम से, तो कोई श्रद्धा से। कई मायने होते हैं मानने के। जब सभी मानने लगे, तो बेटा भी मानने लगा पर कब तक ? जब तक सच्चाई समाने न आ जाये।

प्रहलाद बालक तो था ही, एक दिन निकल गया नगर से बाहर, बाहर निकलते ही किसी घर के बाहर उसने माँ–बेटी का संवाद सुना, जिन्होंने मिट्टी के मटकों को पकाने के लिये आव जाला रखा था। उसी आव में बिल्ली के बच्चे चले गये। छोटी बच्ची ने अपनी माँ से आव बुझाने के लिये कहा, तब माँ ने कहा कि यदि आव बुझायेंगे तो मटके कच्चे रह जायेंगे तो हम भूखे रह जायेंगे, तो फिर हम खायेंगे क्या ?

बच्ची ने जिज्ञासापूर्ण होकर माँ से पूछा फिर इन्हें बचायेगा कौन ? माँ ने उत्तर दिया, भगवान श्रीराम जी आकर बचायेंगे इन्हें। माँ की बात प्रहलाद के कानों तक पहुँच गयी। भगवान श्रीराम तो मेरे पिता हैं मेरे पिताजी ही आकर बिल्ली के बच्चों को बचायेंगे। यह बात प्रहलाद ने नन्हीं बालिका से कही। बालिका ने कहा, तेरे पिता नहीं, तेरे पिता का जो पिता है श्रीराम–वो आकर बचायेंगे। समय आया तो आव को खोला गया। प्रहलाद देखने लगा कि मेरे पिताजी जो श्रीराम हैं, फिर तरफ से आयेंगे। पर किसी तरफ से न आकर देखने के पश्चात् भी बच्चे पूर्णतः सुरक्षित थे।

तत्काल बालक प्रहलाद का विश्वास बदल गया कि भगवान मेरे पिता नहीं अपितु कोई और हैं। किसी और की छाप बालक प्रहलाद के हृदय पर पड़ गयी। प्रहलाद ने अपने पिताजी को भगवान मानने से इन्कार कर दिया एवं सत्याग्रह करके अपने पिता का त्याग कर दिया।

बेटे द्वारा किया गया त्याग देखकर हिरणकश्यप की गद्दी खतरे में पड़ गयी एवं अपनी गद्दी को बचाने के लिये बाप बेटे द्वारा को मरवाये जाने के भरसक प्रयास किये गये।

शरण पड़यो छाड़ियो नहिं, बड़ी बड़नि की ओट।
ज्यों पहलाद गिरते गिरयो, गिरत न लागी चोट।।

उपरोक्त प्रसंग से हमें यह शिक्षा मिलती है कि भगवान को प्राप्त करने के लिये हमें अपने माँ–बाप आश्रम आदि सही मार्ग का दर्शन नहीं कराते हैं तो उनका त्याग धर्मानुसार उचित हैं। अतः हे गुरुदेव हमें ऐसे नाम रूपी रंग में रंग दो जिससे पुनः दूसरे किसी रंग की आवश्यकता न पड़े। नाम रूपी रंग में रंगे उस परम पद की प्राप्ति कर अपने जीवन को सार्थक बना सके।

संकलन–**अमरापुर स्थान, जयपुर**

स्वस्थ रहें

क़ब्ज़-कारण और निवारण

सामान्यतः ग्रहण किये गये आहार के पाचन एवं अवशोषण के बाद अवशिष्ट पदार्थ (मल) शरीर से बाहर निकल जाना चाहिये। यदि ऐसा नहीं हो तो अवरुद्ध मल क़ब्ज़ का कारण बन जाता है।

अव्यवस्थित तथा अनियमित आहार–विहार के परिणामस्वरूप आँतों की स्वाभाविक शक्ति नष्ट हो जाती है। वे दुर्बल हो जाती है और आहार के पाचन एवं मल–विसर्जन दोनों ही कार्यों में बाधा उत्पन्न होती है। बड़ी आँत को साफ रखने में सहयोगी साग–सब्जी तथा फलों का उपयोग न करना, अति अल्प उपयोग करना या विकृत करके उपयोग करना, आलू, धुली दालें, चर्बीयुक्त या मैदे के बने खाद्य–पदार्थ बिस्किट, ब्रेड आदि का सेवन, पकवान, मिठाई, चाय, कॉफी आदि का उपयोग, शारीरिक श्रमका अभाव, चिन्ता, भययुक्त जीवन, तिल्ली–लीवर का विकार, शौच की प्रेरणा को रोकना, अति आहार, इन्द्रियसंयम का अभाव, पानी की कमी, भोजन में जल्दबाजी, देर से सोना तथा जागना, अप्राकृतिक, संश्लेषित तथा अपरिशोधित आहार ग्रहण करना–आदि क़ब्ज़ पैदा करने वाले मुख्य हेतु हैं।

लक्षण - मलत्याग में कठिनाई, सिरदर्द, घबराहट, बेचैनी, पेट में वायु का प्रकोप, अपच भूख का कम हो जाना, शरीर में ठण्ड की अनुभूति, चक्कर आना, हमेशा थकान का अनुभव करना, सुस्ती, कमरदर्द, मुँह में छालों का पड़ना, कभी–कभी हृदय की धड़कन में अनियमितता आदि क़ब्ज़ के लक्षण हैं।

क़ब्ज़ के दुष्परिणाम - प्रायः अधिकांश रोगों का कारण आँतों में एकत्रित सड़ा मल है। इसमें स्त्रियों में होने वाले मासिक धर्म–सम्बन्धी रोग, पुरुषों में स्पप्नदोष से लेकर गम्भीर तथा घातक रोग गठिया, धमनीकाठिन्य तथा कालोनीक कैंसर आदि शामिल हैं।

गलत किये गये उपचार से हानियाँ - बड़ी आँत की सफाई के लिये विरेचक दवाइयों का प्रयोग लाभदायक होने की अपेक्षा हानिकारक अधिक है। ये विरेचक दवाइयाँ आँत की मांसपेशियों को कमजोर बना देती हैं तथा क़ब्ज़ पीछा नहीं छोड़ता।

चिकित्सा

1. **रोग निवारक आहार** - (क) प्रातः कालीन हलके भोजन के रूप में मौसमी फल–जैसे अमरूद, खीरा, ककड़ी, नाशपाती, पपीता, खरबूजा इत्यादि अथवा अंकुरित मूँग तथा मौसम की सब्जियों और सलाद का सेवन करना चाहिये या बीस मुनक्का, तीन सूखी अंजीर, तीन खुरमानी रात्रि में धोकर भिगोयी हुई प्रातः खायें और उसके पानी को नीबू रस मिलाकर पी लें।

(ख) दोपहर भोजन - मोटे आटे की रोटी तथा एक पाव उबली हरी सब्जी एवं सलाद लें।

(ग) रात्रि भोजन - मोटे आटे की रोटी तथा एकपाव उबली हुई हरी सब्जी एवं फल (यदि सम्भव हो तो) ग्रहण करें।

2. **यौगिक उपचार** - व्यायाम तथा योगासनों के यथोचित प्रयोग से भी क़ब्ज़ को दूर किया जा सकता है।

3. **आवश्यक सावधानियाँ तथा सुझाव** - (क) शौच की प्रेरणा या इच्छा न होने पर भी प्रातःकाल उठते ही पानी पीकर शौच अवश्य जायँ

(ख) दिन भर में दस–बारह गिलास पानी अवश्य पीयें। सुबह उठते ही, भोजन के आधे घंटे पहले, भोजन के दो घंटा बाद तथा शेष समय में प्रत्येक घंटा में एक–एक गिलास पानी पीयें।

(ग) खूब अच्छी तरह चबाते हुए धीरे–धीरे शान्ति से भोजन किया जाय। इसमें तीस–चालीस मिनट अवश्य लगना चाहिए।

(घ) आहार निर्धारित समय पर एवं उपयुक्त मात्रा में लिया जाय, जिससे अगले भोजन के समय में स्वाभाविक भूख लगने लगे।

(ङ) क़ब्ज़ के साथ ही यदि उच्च रक्तचाप हो तो यौगिक आसनों को न करें।

(च) भोजन के लिये गेहूँ के बारीक आटे (मैदा) के बदले मोटा आटा (सूजी के आकार का) पिसवायें तथा दो तीन घंटा पहले गुँथवाकर रोटी बनवायें। इससे रेशाकी मात्रा छः गुना, विटामिन–बी चार गुना तथा खनिज पदार्थ की मात्रा चार गुना से भी ज्यादा मिलती है। फलस्वरूप शरीर की सफाई एवं रोगप्रतिरोधक क्षमता पैदा करने में सहयोग मिलता है और कब्ज नहीं होने पाता।

डॉ. सीताराम जी साहू

सत्संग ज्ञान-चर्चा

यात्रा दर्शन



सदगुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज - सत मण्डली का देशाटन

महाराष्ट्र मध्यप्रदेश के विभिन्न नगरों में बही सत्संग की ज्ञान गंगा

ग्वालियर में स्वामी गणेशानन्द महोत्सव का महाआनंद

कामठी में भी पाया प्रेमियों ने सत्संगानन्द

(6, 7 फरवरी 2003)

अमरापुर दरबार जयपुर से 6 फरवरी को पूज्य गुरुवर कामठी में पधारे जहाँ कि पूर्व में श्री गुरु महाराज जी के कई प्रेमी भक्त रहते हैं स्वागत हेतु स्टेशन कामठी पर पधारे, तत्पश्चात् मंगवानी परिवार के घर पर निवास किया। श्री गुरु महाराज के साथ सन्त परसराम, सन्त हरीश, सन्त श्री मुक्त, सन्त दयाप्रकाश के साथ गुरमुख हरीश सेवक भी थे। द्वितीय दिवस पर दिल्ली से सन्त जयेदव जी महाराज व सन्त हरीओम भी नागपुर पहुँचकर कामठी पहुँचे। सायंकाल सत्संग में बड़ी भारी संख्या में प्रेमी सत्संग सभा में उपस्थित थे। सन्त श्री मुक्त जी ने अपने प्रवचनों द्वारा आचार्य सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जी के जनम साखी के साथ अनन्त गुणों का गान अपने मधुर भजनों को गाकर किया सन्त हरीओमलाल ने आचार्य जी की वाणी श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ का भजन **सत्गुरु पंहिजे चरननि जो डे ध्यानु आश रखी मां दर ते आयुसि नाम जो डे मूंखे दानु** भजन गाते हुये बताया कि **सत्गुरु की महिमा बेअन्ता सत्गुरू प्रकट है भगवन्ता** नाम की दीक्षा प्रारम्भ काल में प्राप्त करना सरल नहीं थी अपितु कहे समय सेवा करने के उपरान्त गुरुदेव द्वारा प्राप्त होती थी और वह नाम स्मरण जिज्ञासु के हृदय में वह प्रकाश जाग्रत करता है। कामठी शहर में पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने अपने प्रवचनों द्वारा प्रेमियों को उपदेश देते हुए बताया–

डेई लत न ब्रोरि मानुष देहि अमोल खे
जहिखे चाहिनि देवता टेटीह ही करोड़
मिली साध संगति सां मन जू वायू मोड़
जागी बन्धन छोड़ पहिजे हथे पंहिजा

पूर्व पुण्य ते पाइया मानुष का अवतार
कहे टेऊँ तिंह सफल कर सुमरे सृजणहार

सन्तों महापुरुषों ने इस मानव देह की कीमत को जानते हुए एकान्त में अपने मन को समझाया व संसार में फसी वृतियों को हटाकर नाम का सच्चा सुख पाया संसार के अन्दर जीव सदा सुख ही चाहता है, चाहे वह वस्तु से धन से, परिवार से, मकान से परन्तु वह सुख उसे कुछ क्षण के बाद बदल कर दुख को देने वाला हो जाता है। बचपन खेलने, जवानी संसार के भोगों व बूढ़ापन आशा, इच्छाओं, तृष्णाओं से फस कर जीव बैचेन हो कहता है मुझे शांति, सुख, आनन्द होवे –

तीनों वस्था यूं गयी तोहि न आई लाज
कहे टेऊँ सो ना किया करना था जो काज
जरा उपाय न हो सके जरा आयु के मांहि
भवसागर के तरन हित तरुण अवस्था आहि
मन के हारे हारिये मन के जीते जीत
पारब्रह्म को पाइये मन ही की परतीत।

सिवनी में नये आश्रम पर सत्संग

(8 से 10 फरवरी 2003)

कामठी से सिवनी पहुँचने पर बैण्ड व डांडिया के मधुर आवाज के साथ जयकार करते हुए प्रेमियों द्वारा सिवनी प्रेम प्रकाश आश्रम जो कि नया आश्रम अति विशाल बना हुआ है। जहाँ पर प्रातः व सायंकाल सत्संग का कार्यक्रम रहा। द्वितीय दिवस पर हवन व ध्वज वन्दन के उपरान्त सत्संग 10 से 12 बजे तक हुआ तत्पश्चात् आम भण्डारा किया गया। जहाँ सैकड़ों प्रेमियों ने प्रशादी का भोग पाया। प्रेमियों ने बताया कि प्रारम्भ में श्री गुरुदेव सतगुरु सर्वानन्द जी महाराज आये थे व उन प्रेमियों ने सेवा की आज उन पूर्वज गुरुदेव की कृपा

आश्रम बन कर तैयार होने वाला है। तृतीय दिवस पर श्री प्रेम प्रकाश ग्रंथ व भगवत् गीता के पाठों का भोग पारायण सन्त हरीओमलाल व सन्त प्रतापराय जी ने पाया। इसी तृतीय दिवस का सत्संग कार्यक्रम पूर्ण कर श्री गुरु महाराज स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज 11 फरवरी बालाघाट अमरापुर वाहन द्वारा पहुँचे। पूज्य सद्‌गुरु महाराज के श्री मुख से निःसृत सदुपदेश –

भगवान से अर्जुन कहते हैं कि आपका भजन करना चाहता हूँ सतमार्ग में चलना चाहता हूँ लेकिन न जाने क्यों संसार की माया जो मेरे मन मे प्रवेश कर जाती है वो तुम्हारे मार्ग से भटका देती है मन चंचल हो जाता है।

ये मन बड़ा चंचल है, कैसे तेरा भजन करूँ।
जितना इसे समझाऊँ, उतना ही मचल जाए।।
सत्‌गुरु तेरे चरणों की, गर धूल जो मिल जाए।
सच कहती है दुनिया किस्मत ही बदल जाए।।
सत्‌गुरु तेरे चरणों की.........

रामचरित मानस में रावण कहते हैं – **''होए भजन नहीं तामस देहा''** भजन के द्वारा, नाम सुमरण के द्वारा मेरा मन उस प्रभु की तरफ नहीं लगता।
''मन क्रम वचन मंत्र दृढ़ ऐहा।।''

तो रावण जैसा भी जिसको हम पापी कहते हैं। राक्षस कहते हैं। उसके हृदय में भी परमात्मा के लिए प्रेम था लेकिन पूर्व जन्मों की ऐसी श्राप और ऐसी उसको दशा मिली। जो राक्षस का वेश धारण करना पड़ा। अंत में कि कैसे उस भगवान के प्रति रावण कहता है। कि ''मन क्रम वचन मंत्र दृढ़ ऐहा'' भगवान को मैं कैसे प्राप्त करूँ। नाम नहीं जप सकता इसलिए मैं उस परमात्मा से वैर करके उसका मैं दर्शन करूँगा। तो वो भजन करना बहुत ही मुश्किल है। नाम जपना मुश्किल है। ये मन बड़ा चंचल है कैसे तेरा भजन करूँ। भगवान ने गीता में अर्जुन को जो उपाय बताए अभ्यास और वैराग्य दोनों उपायों के द्वारा मन को जिसने वश में कर लिया उन महापुरूषों के हम मेले लगाते हैं। उनका नाम गाते हैं उनकी महिमा जुगोजुग प्रगट है।

भगत करे पाताल में प्रकट होत आकाश।
''रजब'' तीनों लोक में छिपे न हरि का दास।।

जिन्होंने भक्ति की लेकिन दुनिया के लिए नहीं अपने मन के लिए।

लिकी छुप्पी हरि नाम जपिज, जिंए सुध न पवे संसार खे

संसार को दिखाने के लिए नहीं अपने सुख की प्राप्ति के लिए परम तत्व की प्राप्ति के लिए मन को जिन्होंने ईश्वर के चरणों में लगाया। और रात–रात जागकर उसके नाम का जिन्होंने जप किया। उनका नाम भी अमर हो गया। क्योंकि उस परमात्मा की भक्ति, **गुरु की भक्ति बहुत ही कठिन है, गुरु की भक्ति करन कठिन है। मुश्किल तोड़ निभाना है।। इक दो दिन का काम न होना। प्रीत लगाकर पल पल रोना।। सहन मान अपमाना है। गुरु की भक्ति करन कठिन है...........**
इक दो दिन का काम न होना। प्रीत लगाकर पल पल रोना
रोना किसे कहते हैं, बाहर का रोना नहीं। लेकिन जब उल्टी परिस्थितियाँ आ जाए। उस समय जो मन को संताप होता है। उस संताप में भी मन को स्थिर रखना है। निश्चल रखना।

हरि का मार्ग कठिन है ज्यो खांडे की धार।
डगमग हो तो गिर पड़े निश्चल उतरे पार।।

उन महापुरुषों ने उस मंजिल को प्राप्त किया। मंजिल को प्राप्त करने से पहले मन को उन्होंने शान्त बना दिया– ''मन को सृष्टि और ईश्वर की सृष्टि का मिलाप हो गया कि जो भगवान ने बनाया वही मुझे मंजूर है।

बालाघाट में नवीन आश्रम पर सत्संग की मौज

(11, 12 फरवरी 2003)

ए मन मेरे चल तू श्री अमरापुर दरबार।
बाबा टेऊँराम पल में कर देंगे बेड़ा पार।।
आकाश से बादल तो भरपूर बरसता है।
बर्तन उलटा जिसका पानी को तरसता है।।
मन मोड़ के माया से सत्‌गुरु से करले प्यार।
दो बातन को भूल मत जे चाहो कल्याण।।
नारायण एक मौत को दूजा श्री भगवान।।

मानव देहि के साथ नाम का महत्व आचार्य जी के उपदेशों का सार बताते हुए अपने प्रवचनों से तप्त दिलों को सकून देते हुए अमरापुर भजन द्वारा प्रेमियों को दर्शन

आशीर्वाद से आनन्द देते हुए छोटे–छोटे कस्बों गांवों में बसे प्रेमियों से मिलते हुए **कोचेवाही, बुदबुदा कंटकी** से होते हुए बालाघाट शहर में पहुँचे जहाँ पर प्रथम श्री गुरु महाराज के नवीनतम स्थान में चरण पखारते दर्शन करते हुए प्रेमियों के यहाँ पर निवास किया। प्रातः सांयकाल सत्संग का आनन्द देते हुए अनेक प्रेमियों के घर व प्रतिष्ठान पर आशीर्वाद करते हुए प्रेमियों को आश्वस्त किया कि यथासंभव आगामी कार्यक्रम में गोन्दिया, सिवनी व बालाघाट के नवनिर्मित आश्रमों का उद्घाटन महोत्सव व मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा समारोह आयोजित किया जावेगा।

हुआ उल्लासित गोन्दिया नगर, सद्‌गुरु महाराज के दिव्य सत्संग दर्शन से (13 से 16 फरवरी 2003)

तिरोड़ा से सड़क मार्ग द्वारा अमरापुर वाहन में दोपहर ठीक तीन बजे गोन्दिया वासियों की प्रतीक्षित अधीर हृदय को ठण्डक मिली। जब सद्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली का शुभागमन जय स्तम्भ चौक पर हुआ। गगन भेदी जयकारे व पुष्प वर्षा के साथ गोन्दिया का पूरा सिन्धी समाज पूज्य गुरु महाराज जी के स्वागतार्थ उपस्थिति था। स्वागत के पश्चात् भव्य शोभायात्रा में पूज्य स्वामी जी को सिन्धी कॉलोनी स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम लाया गया। लीलाधारी भगवान के विविध लीलाओं से सुसज्जित शोभायात्रा में पूज्य महाराज श्री को फूल–लताओं से सुसज्जित रथ पर बिठाया गया था। सन्त जयदेव जी, सन्त दयाप्रकाश जी भी रथ पर पूज्य स्वामी जी के साथ विराजमान थे। बैण्ड बाजों, शहनाई के मधुर गूंज के साथ हजारों प्रेमी नाचते गाते हरिनाम की धुनि लगाते हुए चल रहे थे। गाँधी पुलिया से नगर परिषद चौक, चान्दनी चौक, भवानीशंकर चौक से होते हुए सांय 5 बजे शोभा यात्रा का समापन आश्रम पर हुआ। स्वामी टेऊँराम जन कल्याण ट्रस्ट गोदिंया द्वारा पूज्य गुरुदेव भगवान की कृपा से नव निर्मित आश्रम में पूज्य स्वामी जी के सत्संग का आयोजन किया गया था। सांय 7 बजे तक सत्संगानन्द से सराबोर हुए गोन्दिया वासी। 14 से 16 फरवरी तक प्रातः 9 से 11 व सांय 4 से 6 बजे तक ज्ञान गंगा में डूबे रहे भाग्यशाली प्रेमी। चार दिनों तक अनवरत सद्‌गुरु महाराज के दर्शनानन्द से अभिभूत रहे स्थानीय जन। 16 फरवरी को आम भण्डारे में भी हजारों श्रद्धालुओं ने सद्‌गुरु महाराज का पावन परशाद सश्रद्धा ग्रहण किया।

पूज्य सद्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज के मुखारबिन्द से निःसृत पावन ज्ञान गंगा की एक झलक–

हर मेली है संतजन हरि से देत मिलाए।
कह टेऊँ छोड़त नहीं जो जन शरनी जाए।।
सिक सां शरण आया जे तुहिजीं तिन जा दर्द मिटाईं।
आहिन तुहिंजे आसरे जे, मोती तिन खे मिलाईं।।
मुहिजां सच्चा साईंराम
पंजईं जिन जे पादं में आहिन रग रग तिन जी रचाईं।
आहिन तुहिंजे आसरे.........
प्रेम से कहिये सत्‌नाम साक्षी–
हरि मेली है संतजन हरि से देत मिलाए।
कह टेऊँ छोड़त नहीं जो जन शरनी आए।।

सत्‌गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज अपनी अमृतवाणी में लिखते हैं कि उन संतों महापुरूषों के लक्षण कैसे हैं। हर मेली है संत जन.......... परमात्मा से मिलने वाले स्वयं भी मिलते हैं और दूसरों को भी मिलाते हैं। जो उनकी शरण में आते हैं उनको भी संसार सागर से पार करते हैं। आज पल्लव का दिन है, प्रार्थना का दिन है। गुरु महाराज जी ने अपनी अमृतमय वाणी में लिखा – प्रेम प्रकाश ग्रन्थ की भजनवाली में –

"आहिनि तुहिजें आसरे से मोती तिनखे मिलाईं" जिन्होंनें उनकी ओट ली है, जिन्होंने उनका आधार लिया है। जिन्होंने उनकी शरण ली है, उनके ऊपर हीरे मोतियों की बरसात होगी। पर दोनों बातें बहुत कठिन है। पहली बात संतों ने की– "आसरा" मानें सब तरफ से मन हट जाये।

जब लग गज बस अपनो बरतयो नेक सरियो नहीं काम।
निर्बल रे बलराम पुकारे आए आधे नाम।।

मन की परतों को खोलकर देखें। मन के दरवाजों को खोलकर देखें। तो अंदर से आवाज आती है कि मन को अनेक आसरे हैं। बाहर से हम गुरु की ओट लेते हैं परमात्मा को कहते हैं कि मैं आपकी शरण में हूँ परन्तु हमें दूसरे भी बहुत आसरे है। मुझे बचाने वाले, मेरी मदद

करने वाले अनेक है। हरि को हरिनाम, कहते हैं परमात्मा उसका है जो संसार से हारा गया हो। हारने का मतलब– निराश हो जाए–

चारों तरफ से निराश होकर चरण कमल तब आन गहे

संग सखा सब तज गए कोई न निभय साथ।
कह नानक इस विपत में टेक एक रघुनाथ।।

अपनी वाणी में खोलकर लिखा कि सब तरफ से निराश होना ये है शरण में जाने का पहला साधन। हाथी को जब मगरमच्छ पानी में खींचने लगा तो विचार किया कि मेरे साथी मेरे साथ खड़े हैं। वो मित्र काफी बलवान है, मुझे इस दुश्मन से बचायेंगे। परन्तु उन साथियों ने देखा कि मगरमच्छ उन्हें खींचते हुए ले जा रहा है। इसके साथ हमारा भी नाश हो जाएगा तो उनके साथ पीछे हट गए। विचार किया कि साथी चले गये चिन्ता नहीं अभी मेरे शरीर में बल है, मैं इस मगरमच्छ से मुकाबला करूँगा।

जिन जे बुल ते माणु कयूम थे से भी वया छद्दे।
बेवस हीणों थी माँ आयुस सतगुर तुंहिजे तद्दे।।
दया कयो महाराज - हा स्वामी.... ड्रोह न ड्रिसु तूं मुंहिजां
लखु तूं मुंहिजी लाज हो स्वामी.... ड्रोह न ड्रिसु तूं मुंहिजां
"एक भरोसा एक बल एक आस विश्वास"

गोस्वामी जी लिखते हैं– एक ही मुझे भरोसा है, एक ही मुझे बल है। सत्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज जी ने भी अपनी अमृतमयी वाणी में लिखा–

जैसे कागा बैठ जहाज पर जावत सागर माहीं
चारों तरफ है पानी-पानी, सूझत काहु न किनारा
सत्गुरु टेऊँराम के बिन और न कोई मुझे आधारा
जैसे उड़ जहाज को पंछी फिर जहाज पर आवे।
मेरो मन अनंत कहां सुख पावे।।

कहते हैं कि पानी के जहाज पर सवार जब समुद्र के अन्दर जाता है। बीच समुद्र में पहुँचकर विचार करता है कि मैं थोड़ा घूम आऊँ। चारों तरफ दिखता है। पानी–पानी। कहीं भी उसे सहारा नहीं मिलता है इसी तरह जिसने भी गुरु की ओट ली है – "आहिनि तुहिंजें पासरे जे मोती तिन खे मिलाईं" उनके ऊपर सत्गुरु की कृपा होती है। ईश्वर की कृपा होती है।

गुरुनानक धर्मशाला भण्डारा में सत्संगानन्द

(17 फरवरी)

दिनांक 17 फरवरी को पूज्य स्वामी जी ने गोंदिया से भण्डारा की ओर प्रस्थान किया। भण्डारा पहुँचने पर वहाँ के प्रेमियों ने पूज्य स्वामी जी का भव्य स्वागत किया सन्तों के ठहरने की व्यवस्था गुरुनानक धर्मशाला में की गई। स्वामी जी के भण्डारा आगमन पर प्रेमियों के हृदय अत्यन्त हर्षित हुये। सांयकालीन सत्संग का कार्यक्रम गुरूनानक धर्मशाला में रखा गया। जहाँ पर सभी सन्तों ने सुन्दर–सुन्दर भजन गाकर बताये तत्पश्चात पूज्य स्वामी जी ने अपने भजन के माध्यम से बताया :–

1. **मानुष चोला दुर्लभ पाया राम भजन बिन वृथा जाया**
ऐसा वेला हाथ आवे क्यों तुम मूर्ख पाप कमावे
पाप करे तन गंवा न देना ।

परमात्मा ने हमें मानुष का चोला दिया कि प्रभु का नाम स्मरण कर सर्व दुखों से निवृति हो जायें और जिस सुख की तलाश में हम भटक रहे है वह सुख हमें प्राप्त हो। इसलिए हम सम्भल जाये और इन श्वासों को वृथा न गंवाये। जिस प्रकार एक किसान को अमोलक लालों से भरी मटकी मिली और उसने उसका मूल्य न जानकर साधारण पत्थर समझा और उन लालों को नदी में फेंक दिये इसी दौरान उसका छोटा पुत्र उसके पास पहुँचा उन लालों में से उस बच्चे ने दो--तीन लाल उठा लिये। वह किसान अपने पुत्र को लेकर घर वापस जाने लगा। रास्ते में एक जौहरी किसान से कहने लगा कि आपके पुत्र के हाथ में जो लाल है आप मुझे दे दीजिये इसके बदले में आपको जितना धन चाहिए मुझसे लीजिये। जब किसान को पता चला कि जिन्हें मैंने साधांरण पत्थर समझा वह तो मूल्यवान लाल है। इसी प्रकार परमात्मा ने जो हमें इन अमोलक श्वासों का खजाना दिया इनको हमने परमात्मा के नाम सुमरन में न लगाकर संसार के विषय भोगों में लगा दिया। पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया।

अमरावती में सन्त मिलन

(18 फरवरी)

दिनांक 18–2–03 को प्रातः भण्डारा के प्रेमियों

को आशीर्वाद देकर अमरावती की ओर प्रस्थान। दोपहर 1 बजे अमरावती पहुँचे जहाँ पर श्री नारायणदास और अन्य प्रेमियों ने स्वागत किया। ठहरने की व्यवस्था श्री नारायणदास के यहाँ की गई थी। श्री नारायणदास जी के घर पर पूज्य सद्गुरु महाराज जी की अमर शहीद भगत कंवरराम जी के पौत्र श्री मनोहरलाल जी एवं संत श्री सतरामदास जी के नाती श्री सीरूराम जी से भेंट हुई एवं पूज्य स्वामी जी के साथ मिलकर सन्तो ने भण्डारे का प्रसाद ग्रहण किया।

सायंकालीन सत्संग का कार्यक्रम प्रेम प्रकाश आश्रम रामपुरी कॉलोनी में रखा गया। जहाँ पर पूज्य गुरूवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज ने प्रेमियों को समझाते हुये कहा:–

दोहा– **निद्रा भोजन भोग भय - ये पशु पुरूष समान**
नरन ज्ञान निज अधिकता ज्ञान बिना पशु जान

जो मनुष्य परमात्मा का भजन नहीं करता और संसार के कितने ही कार्यों में कुशल हो उस मनुष्य और पशु में कोई अन्तर नहीं। क्योंकि मनुष्य की सिर्फ यह भिन्नता है कि नाम सुमरन के द्वारा उस परमानन्द को प्राप्त हो सके। इसलिये हमें भी इस देह का मूल्य जानकर परमात्मा के चरणों से प्रीत रखनी चाहिए।

तत्पश्चात् 6 से 8 बजे तक सत्संग का आयोजन **शदाणी दरबार** में रखा गया जहाँ पर सन्त नामदेव व सन्त जयदेव ने भजन गाकर सतउपदेश दिया।

सन्तों के प्रवचन के बाद पूज्य स्वामी जी ने अपनी मधुर वाणी के द्वारा उस परम ज्ञान का अमृत पिलाते हुये बताया :

भजन- संभारे थो जो सत्गुरु खे, गुरु बि तहिं सम्भारीन्दो
अटल विश्वास आ जहिजों, न सत्गुरू तहिं विसारीन्दो

1. **दुनिया भलि धिकारे,ताननि सां मारे।**
जीअण करे मुश्किल, अन्दर भली साड़े।।
पर न सत्गुरु विसारे थे, प्रेम सां जो पुकारीन्दो

जो कोई भी हृदय में पूर्ण प्रेम और विश्वास रखकर सद्गुरु के आगे प्रार्थना करता है। सद्गुरू उसकी प्रार्थना अवश्य सुनते हैं क्योंकि सद्गुरु सन्त और परमात्मा के सिवा हमारी हृदय की पुकार कोई नहीं सुन सकता।

दोहा - सन्त गुरु परमात्मा, साचे संगी जान।
कहे टेऊँ इन तीन से करले प्रेम सुजान।।

स्वामी जी ने बताया कि कोई सुजान व्यक्ति ही इन से प्रेम कर सकता है। इसलिये हम भी गुरूदेव की कृपा प्राप्त करने के लिए पूर्ण हृदय से प्रार्थना करें। सत्संग समापन के बाद पूज्य स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली सहित भगत कंवरराम के मन्दिर देवरी साहिब पर गये। जहाँ पर श्री मनोहरलाल जी से भेंट हुई। आपस में ज्ञान चर्चा कर उसके बाद प्रेमियों के घर पर होते हुये। निवास स्थान पर पहुँचे।

नागपुर में सत्संग समागम

(19 से 21 फरवरी)

दिनांक 19–2–2003 को प्रातः 7 बजे पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज सन्त मण्डली समेत अमरावती से नागपुर की ओर प्रस्थान किया। दोपहर 1 बजे नागपुर शहर पहुँचने पर "कमल कुमार मनवानी" व अन्य प्रेमियों ने मिलकर स्वामी जी व सन्त मण्डली का स्वागत किया।

सांयकालीन सत्संग का आयोजन प्रेम प्रकाश आश्रम क्वेटा कॉलोनी में रखा गया। सर्वप्रथम अमरापुर स्थान के विद्यार्थी शंकरलाल जी ने सन्तों की महिमा का वर्णन किया, बताया कि किस प्रकार आचार्य सद्गुरू टेऊँराम जी महाराज नाम का सुमरन कर प्रभु परमात्मा की प्राप्ति की और प्रेम प्रकाश पंथ को चलाया एवं सत्नाम साक्षी मंत्र का जाप जपाया। उसके बाद सन्त जयदेव ने बताया कि हम जितना नाम का सुमरन करेंगे। उतनी हमें शान्ति की प्राप्ति होगी। आज प्रत्येक प्राणी शान्ति की तलाश में मन्दिरों में सन्तों के पास भटक रहा है परन्तु शान्ति की प्राप्ति नहीं हो रही है। शान्ति कहीं नहीं हमारे हृदय अन्दर ही निवास करती है। तत्पश्चात् पूज्य स्वामी जी ने अपने अमृत वचनों में बताया कि :–

सन्त राम में भेद नहीं, सन्तराम स्वरूप।
कहे टेऊँ रट राम को, भये राम के रूप।।
अहिड़ो सत्गुरु आहे, थो सभिनी जा दुख लाहे

जेको शरणि वटे थो तहिंजी, तंहिंखे राह रसाए।।टेक।।

1. **सद्‌गुरु दीन दयालू आ, प्रेमिनि जो रखिपालू आ।**
कद्‌हीं कीन विसारे थो, भोला भरम निवारे थो।।
ज्ञान ध्यान जी द्‌ई युक्ती, निज आत्म जी द्‌ई शक्ति।
ब्रोध संदे ब्रेड़े ते चाढ़े, पल में पारि पुज्राए।।1।।

गुरुदेव के द्वारा ही हम इस संसार सागर से पार हो सकते हैं। क्योंकि हमें सद्‌गुरु संसार में रहने की युक्ति बताते हैं। इस संसार में इस तरह से रहो जिस प्रकार से कमल का फूल पानी में रहते हुये भी पानी से अलग रहता है।

ना जग छोड़ो, ना हरि भूलो। कर्म करो जिन्दगानी में
इस दुनिया में ऐसे रहो, जेसे कमल रहता है पानी में

दिनांक 20–2–2003 सांयकालीन सत्संग का आयोजन कमल कुमार मनवानी के यहाँ पर हुआ।

21–2–2003 सत्संग का कार्यक्रम "झूलेलाल मन्दिर" में रखा गया। जहाँ पर स्वामी जी ने बताया कि जब हम शरीर की ओर दृष्टि डालते हैं तो एक तो यही पाते हैं कि यह शरीर निरन्तर परिवर्तनशील है, बदलता रहता है। शरीर एक जैसा नहीं रहता। पहले बालक है, फिर वह धीरे–धीरे युवक होता है, वृद्ध होता है और एक दिन शरीर क्षय को प्राप्त हो जाता है। तो यह जो शरीर की परिवर्तनशीलता है, यह स्वयं अपने आपमें एक सन्देश है। इतना बताकर पूज्य सद्‌गुरु महाराज जी ने पल्लव पाकर सत्संग का समापन किया।

अजमेर स्वामी ग्वालानन्द दरबार में
(23 फरवरी)

सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज एवं स्वामी ग्वालानन्द महाराज के परम शिष्य स्वामी ईश्वरानन्द महाराज के 10 वें वर्सी महोत्सव 23 फरवरी 2003 को स्वामी ग्वालानन्द आश्रम अजमेर में सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का संत मण्डली के साथ पधारने पर भव्य स्वागत किया गया। स्वामी चेतन कृष्ण स्वामी ग्वालानन्द आश्रम अजमेर, स्वामी रमेश प्रकाश (कटनी), श्री नारायणदास रतनानी (ट्रस्टी) प्रेम प्रकाश आश्रम आदर्श नगर अजमेर, भगत किशन, शंकर एवं ब्यावर से पधारे असंख्य प्रेमियों ने सद्‌गुरु महाराज एवं मण्डली का फूलों व माल्यापर्ण से स्वागत किया।

सद्‌गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज के साथ सन्त नामदेव (हांगकांग) संत श्रीमुक्त, संत हरीश प्रेम प्रकाशी, संत परसराम प्रेम प्रकाशी, भगतमूलंचन्द समस्त संतमण्डली ने अपनी अमृत रूपी वाणी से उपस्थिति प्रेमियों को सत्संग गंगा में ज्ञान की डुबकीयाँ लगवाकर मंत्र मुग्ध कर दिया।

संत नामदेव ने अपनी ओजस्वी वाणी में प्रेमियों को समझाया कि सद्‌गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज व स्वामी ग्वालानन्द महाराज मनुष्य जीवन के लक्ष्य को जानकर हमें उस लक्ष्य की सच्चाई के बारे में बताया। सद्‌गुरु महाराज ने अपनी सोलह शिक्षाओं में निम्न दोहे से हमें समझना है कि–

मौत अपना याद कर लें तिहं भुलावो ना कभी।
जान मन में मरण का दिन निकट आया है अभी।।

जब हमें मृत्यु का दिन व समय मालूम हो जाये या मृत्यु शब्द का सही ज्ञान मालूम हो जाये तो हमारा संसार के भौतिक सुखों, शरीर, माया से मोह टूट जाता है। जब मोह टूट जायेगा तो हमें प्रभु परमात्मा के दर्शन हो जाते हैं यह तब होता है जब हम पर सद्‌गुरू महाराज की कृपा हो। सद्‌गुरु महाराज की कृपा दृष्टि हमें गुरुदेव की शरण में जाकर गुरू द्वारा दिये गये नाम का सुमरन करने पर हमारे अन्दर से "मैं" का अभिमान निकल जाने पर दुख दूर हो जाते हैं। संत नामदेव ने एक दृष्टांत द्वारा समझाया कि एक बार सदगुरू स्वामी शान्ति प्रकाश महाराज के पास एक दम्पत्ति दर्शन करने आये थे स्वामी जी ने आदमी से पूछा कि तुम्हारा नाम क्या है :–

"आदमी ने जवाब दिया "सांई माण्हु चवनि पर मां न मंञा"

औरत से पूछा बेटी तुहिंजो नालो छा आहे :–

औरत ने जवाब दिया – सांई पकिड़यां–पकिड़यां पर हथि न अचे"

बहुत जोर देने पर आदमी ने कहा मुझे लोग हूंदो मल कहते हैं अर्थात् हूंदो (होगा)।

अंत में औरत ने बतलाया कि लोग उसे 'छाया' के नाम से पुकारते हैं अर्थात् परछाई।

इसका भावार्थ यहीं है कि जो शरीर हमने धारण

किया है वह मरण के बाद हूंदो (होगा) और जो धन सम्पत्ति भौतिक सुख है वो हमारे साथ छाया के समान है वह मरण के बाद हमारे साथ नहीं जायेगा। हमारे साथ हमारे सत्कर्म ही साथ जायेंगे।

तत्पश्चात् सद्गुरु स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज ने अपनी अमृतवाणी में समझाया कि स्वामी ईश्वरानन्द महाराज ने सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज व स्वामी ग्वालानन्द महाराज की शरण में रहकर तपस्या कर परोपकार त्याग की शिक्षा पाकर सद्गुरू महाराज के पद् चिन्हों पर चलकर आत्मज्ञान को प्राप्त किया।

सद्गुरु महाराज ने आगे अपनी निर्मल व अमृतवाणी वचनों में बताया कि :–

1. **सत्गुरु परमात्मा सांचे संगी जान।**
   कहे टेऊँ इन तीनों से करले प्रेम सुजान।।
2. **महापुरूष दुनियाँ में बड़े काम को आते हैं।**
   मिटाते खौफ मरने का अमर बनना सिखाते हैं।।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज ने हमें समझाया है कि इस संसार में जीवों का उत्थान करने के लिए संत महापुरुष अवतार धारण कर हमें "नाम मंत्र" द्वारा जीवन मृत्यु का अर्थ समझाकर उस सत् मार्ग पर चलने का ज्ञान शिक्षा देकर हमारे अन्दर से मृत्यु का भय दूर कर हमारा सांसारिक भौतिक सुखों से मोह तोड़कर हमें प्रभु परमात्मा को पाने का ज्ञानपदेश देते हैं। आगे स्वामी जी ने समझाया कि हमारे सांसारिक भौतिक सुख, शरीर, परिवार, माया आदि सच्चे साथी नहीं हैं जो हमें प्रभु परमात्मा को प्राप्त करवा सकें। हमारे सच्चे संगी संत गुरु परमात्मा ही हैं जो हमें ज्ञान भवसागर से पार करवाकर हमें दुखों से मुक्ति दिलवाकर मोक्ष की प्राप्ति करवाते हैं। आगे स्वामी जी ने समझाया है कि :–

भजन :–

पवनि याद पलि पलि प्रीतम प्यारा–प्यारा
- विसारिया न विसरनि सज्जण से सुहारा
जदुहिं खां जुदाई कई आहे जोगिनि
तदुहिं खां अखियुनि में वहनि नीर नाय

(2) दिसी दुनिया जा रंग तमाशा, लोभ लहरि में मतां लुढीं
दुनिया में सुख मिलणो नाहे, छोन दुनिया खां धार रहीं
स्मरण करि गुरू मंत्र जो स्मरण कष्ट मिटाईदों
धीरज धरि मन मुंहिजा सद्गुरू कष्ट मिटाईदों

दोहा– **देता था सो दे दिया दीनी मानुष देह।**
राम कुछ राखा नहीं हरि स्मरण कर लेह।।

सद्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज द्वारा दिये ग[...] उपदेशों से हमें समझना है कि प्रभु परमात्मा ने ह[...] अमोलक मनुष्य देह दी है जिसको हमें संसार के पदार्थ[...] माया, मोह, भौतिक सुखों के पीछे खत्म नहीं करन[...] चाहिये। हमें अभी भी वक्त है हम जो इस भौतिक सुखों [...] सोये हुए हैं उससे जागकर संतों महापुरूषों की शरण [...] जाकर उनके द्वारा दिये गये नाम मंत्र का जाप कर हरि [...] स्मरण कर प्रभु परमात्मा को प्राप्त करना चाहिये। संतों [...] संग से हमारा मोह टूट जाता है। हम त्यागी, बैरागी बनक[...] अपना चित्त प्रभु परमात्मा में लगाते हैं जिसके द्वारा ह[...] मोक्ष की प्राप्ति करते हैं। स्वामी जी ने बतलाया कि गीता [...] स्पष्ट लिखा है कि कोई भी प्राणी कितना भी ज्ञानी [...] उसका काल निश्चित है जो कभी टलता नहीं है। स[...] महात्मा हमें उस काल के भय से दूर कर अपनी कृपा दृ[...] कर हमारा ध्यान हरि के स्मरण में लगाकर प्रभु परमा[...] को प्राप्त करवाकर हमें इस भवसागर से पार करवाते [...] इसलिये हमें संसार के झूठे प्रपंच में नहीं पड़कर अ[...] आपको समझाकर सोये हुए मन, आत्मा को जगा[...] संसार के भौतिक सुखों का त्याग कर गुरुदेव की शरण[...] जाकर नाम मंत्र प्राप्त कर उसका स्मरण कर प्रभु परमा[...] की व मोक्ष की प्राप्ति करनी चाहिये। सद्गुरु महाराज [...] अपने अमृत वचनों के साथ पल्लव पाकर वर्सी महोत[...] सत्संग की समाप्ति कर हजारों श्रद्धालुओं, प्रेमियों [...] सत्संग ज्ञान गंगा में डुबकियाँ लगाकर अपने मनोह[...] दर्शनों से लाभान्वित किया।

फूल, पत्थर और बिजली

एक पुराने कस्बे में बहुत से मकान थे। उनमें अधि[...] तो एकमंजिले थे, काफी दुमंजिले थे तथा कुछ थे तिमंजले। [...] सबसे ऊँचे थे आकाश को छूते हुए जान पड़ते थे। लगता था [...] आषाढ़ के बादल उनकी छत पर तैरते हों। और जब साव[...] भादों में इन्द्र धनुष निकलता तो उन्हीं पर टिका हुआ दिख[...] कहते हैं कि एक दिन आकाश से फूल झड़ने लगे। जो इ[...] सबसे ऊँची थी उन सब पर फूल बरसे। जब मेघ बरसा तो [...] की बूँद भी पहले–पहल उन्हीं पर गिरी, यही नहीं ओले [...] बिजली ने भी सबसे पहले उन्हें ऊँची इमारतों को ध्वस्त कि[...]

इसलिए नेतृत्व करने वाले व्यक्ति को फूलों की सुखा[...] के साथ–साथ पत्थरों व बिजली की चोटों को सहने के लिए [...] तैयार रहना चाहिए। ***विनोद साजनानी*** (आ[...]

ग्वालियर में स्वामी गणेशानन्द जयन्ती महोत्सव

सद्गुरु महाराज के आगमन से उल्लासित हुए प्रेमी

(26 फरवरी से 2 मार्च 2003 तक)

श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाचार्य मंगलमूर्ति अनन्त श्री विभूषित योगीराज सद्गुरु श्री स्वामी टेऊँराम जी महाराज की सन्त मण्डली के प्रमुख सन्त परम वीतराग पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का 102 वां प्राकट्य महोत्सव 26 फरवरी से 2 मार्च तक पंचदिवसीय कार्यक्रमों के साथ, श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की पावन अध्यक्षता व पूज्य सन्त मण्डल की पावन उपस्थिति में बड़े ही भक्ति पूर्ण वातावरण में भव्य हर्षोत्साह के साथ मनाया गया। हजारों प्रेमी सद्गुरु महाराज के दर्शनानन्द व सत्संगामृत से कृतार्थ हुए।

महोत्सव के प्रथम दिन 26 फरवरी को प्रातः ठीक 5 बजे सन्त हरिओमप्रकाश जी, सन्त प्रतापराय जी, सन्त शम्भू प्रकाश जी के नेतृत्व में एक हरिनाम संकीर्तन प्रभात फेरी निकाली गयी। **''धनगुरु टेऊँराम सारा जग तारिया'' ''सत्नाम साक्षी बोल प्यारे तुझे हरी मिलेंगे ''शिवोऽम् शिवोऽम्''** की मधुरातिमधुर गूंज से पावन हो उठा नगर। हरिनाम की मस्ती में झूमते नगर वासी प्रातः 8 बजे वापिस आश्रम पर पहुँचे, जहाँ पर श्रीमद् भगवत् गीता व श्री प्रेम प्रकाश ग्रन्थ के पाठों का शुभारम्भ हुआ। और इसी के साथ शुरु हो गयी सद्गुरु महाराज के दिव्य दर्शनों को लिये तरसती इन चक्षुओं की उलटी गिनती। क्षण–प्रतिक्षण बड़ी ही व्याकुलता के साथ समय को पीछे छोड़ता चलायमान था। परम पूजनीय सद्गुरु महाराज जी सन्त मण्डली व कुछ प्रमुख प्रेमियों के साथ प्रातः 7:15 बजे अमरापुर स्थान से ग्वालियर नगरी को पावन करने के लिये चल पड़े थे। पूज्य स्वामी जी के ग्वालियर नगरी की दूरी संचार माध्यमों से थोड़ी–थोड़ी देर में अधीरता के साथ ज्ञात हो रही थी। कुछ प्रमुख प्रेमी सन्त हरीओम प्रकाश जी के साथ महाराज जी की आगवानी के लिये नगर प्रवेश द्वार पर सांय 4 बजे पहुँच चुके थे। 4:35 बजे पूज्य महाराज श्री के नगर प्रवेश पर स्वागत सत्कार करने के उपरान्त पूज्य स्वामी जी को मण्डली के साथ नगर के हृदय स्थल महाराज बाड़े के समीप ठीक 5:00 बज कर 5 मिनट पर लाया गया। मोर बाजार में उपस्थित हजारों–हजारों प्रेमी पूज्य सद्गुरु महाराज जी के दर्शन पाकर भावविभोर होकर हर्षावेग से शहनाई की धुन पर झूमने नाचने लगे। ''हरि बोल हरि बोल'' ''सद्गुरु भगवान की जय'' से सम्पूर्ण क्षेत्र गुंजित हो उठा, पुष्प वर्षा से सारा मार्ग पुष्पों से भर गया। पूज्य

सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज जयपुर से अमरापुर बस में यात्रा करते हुये जब गालव ऋषि की पावन तपोभूमि ग्वालियर पहुंचे तब वहाँ पर पूज्य स्वामी जी एवं सतं मण्डली के दर्शन स्वागत के लिये अपार जन समूह उपस्थित था। पूज्य स्वामी जी की मंद मनमोहक मुस्कान प्रेमीयों के मन में उत्साह का संचार कर रही थी। पूज्य गुरुदेव सत्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज प्रेम प्रकाश मण्डल के अद्भुत दिव्य रथ पर आरूढ़ हैं। जिसके शोर्य और धैर्य रूपी दो पहिये हैं। सत्य शील (सदाचार) जिसकी मजबूत ध्वजा एवं पताका है। बल विवेक दम परोपकार ये उसके घोड़े हैं। जो दया–क्षमा–और समतारूपी डोरी से रथ में जुड़े हुये हैं। ***गुरु मंत्र सत्नाम साक्षी भजन ही इस प्रेम प्रकाश मण्डल के रथ को चलाने वाला चतुर सारथि है।*** *जिसमें वैराग्य ढाल के समान है। संतोष इसकी तलवार हैं जिसका दान फरसे के समान है। इसमें बुद्धि प्रचंड़ शक्ति है। जिसमें श्रेष्ठ ज्ञान धनुष के समान है। यम–नियम रूपी बहुत से बाण हैं। प्रेम प्रकाश मण्डली के दिव्य धर्ममय रथ पर आरुढ़ सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज का अलौकिक ज्ञान प्रेमीयों के अन्तकरण को प्रकाशित कर रहा है।*

स्वामी जी को एक सुन्दर रथ में विराजित कर यहीं से शोभा यात्रा निकाली गयी, मात्र डेढ़ किलोमीटर का फासला तय करने में शोभायात्रा को दो घण्टे लग गये। राह में अनेक स्थानों पर माल्यार्पण व पुष्प वर्षा करके पूज्य स्वामी जी का अभिनन्दन किया जा रहा था। प्रेम प्रकाश नवयुवक मण्डली के नवयुवकों का दल तो पूरे रास्ते भर नाचता झूमता रहा। पूज्य महाराज श्री के शोभायात्रा के आनन्द को स्थानीय प्रमुख समाचार पत्र ''दैनिक भास्कर'' ने सचित्र इस तरह के शीर्षक से तीन कॉलम में प्रकाशित किया।

''भगतप्रकाश जी के आगमन से नाच उठे लोग''

एक लम्बे अर्से के पश्चात् प्रेम प्रकाशियों के चल समारोह ने श्रद्धालुओं में नवीन उत्साह का संचार कर दिया। 6:45 बजे आश्रम के बाहर वाले मार्ग पर सड़क के एक ओर प्रेम प्रकाश महिला मण्डली तो दूसरी ओर प्रेम प्रकाश नवयुवक मण्डल के सदस्य 25–25 की संख्या में हाथों में आरती की थाली लिये हुए जिसमें दीपक जल रहे थे। पुष्प, कुमकुम अक्षत लिये हुए कतार बद्ध स्वामी जी के स्वागतार्थ खड़े थे।

स्वामी जी का कुमकुम से तिलक कर अक्षत पुष्प वर्षा से अभिनन्दन किया गया। आश्रम प्रवेश के उपरान्त खचाखच भरे आश्रम परिसर में सन्त मण्डल व पूज्य स्वामी जी के संक्षिप्त प्रवचनों के उपरान्त पल्लव पाकर आज के कार्यक्रमों को विराम दिया गया।

27 फरवरी से 2 मार्च तक प्रतिदिन प्रातः 8 से 10 व सांय 4:30 से 7:30 तक सत्संगानंद की मौज में प्रेमी मगन रहे। सांय कालीन सत्संग सभा में तो नगर के हर मार्ग से आश्रम में प्रेमियों का सैलाब उमड़ पड़ता था। 1 मार्च को महाशिवरात्रि का पावन पर्व, उधर पूज्य स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का पावन प्रकट्य दिवस–आज प्रातः 7 बजे से 8:45 बजे तक हवन यज्ञ किया गया, सत्संग पश्चात् श्री प्रेम प्रकाशी ध्वजा वन्दन पूज्य स्वामी जी के कर कमलों से सम्पन्न हुआ, आश्रम का प्रत्येक क्षेत्र प्रेमियों से ध्वजावन्दन अवसर पर खचाखच भरा हुआ था। अन्य परसाद के साथ–साथ आज भोले बाबा की ढण्डाई भी वितरित की जा रही थी। आज ही सांयकालीन सत्संग में स्थानीय विधायक श्री अनूपमिश्रा जी (प्रधानमन्त्री श्री अटलविहारी वाजपेयी के भानजे) भी पूज्य महाराज श्री के दर्शन सत्संग का लाभ लेने के लिये सम्मिलित हुए। श्री अनूप मिश्रा द्वारा पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डल का अपने क्षेत्र की जनता की ओर से अभिनन्दन किया गया, अपने संक्षिप्त उद्‌बोधन में ''स्वामी शान्ति प्रकाश चेरीटेबल नेत्र चिकित्सालय ट्रस्ट'' को ढाई लाख रूपये लागत की आई स्केनिंग मशीन विधायक निधि से प्रदान करने की घोषणा भी की।

2 मार्च को प्रातः कालीन सत्संग के पश्चात् पाठों का पारायण हुआ, तत्पश्चात् स्वामी टेऊँराम धर्मशाला प्रेम प्रकाश आश्रम में संचालित **''स्वामी शान्ति प्रकाश धर्मार्थ नेत्र चिकित्सालय''** के अत्याधुनिक नवनिर्मित आपरेशन थियेटर का उद्‌घाटन पूज्य स्वामी जी के कर कमलों से किया गया। इसके साथ ही निष्काम रूप से सेवायें दे रहे नगर के सुप्रसिद्ध नेत्र विशेषज्ञ डॉ. आर. के. गुप्ता, डॉ. पी. के. सिंघल, डॉ. मोदी (डबरा) को पूज्य स्वामी जी द्वारा पाखर पहिना कर सम्मानित किया गया। आज ही प्रातः 11 बजे से दोपहर तीन बजे तक चले आम भण्डारे में छः हजार से भी अधिक श्रद्धालुओं ने पूज्य सद्‌गुरु महाराज का पावन प्रसाद श्रद्धापूर्वक ग्रहण किया। सांयकालीन सत्संग सभा में दीप प्रज्जवलन भी किया गया। रात्रि 7:30 बजे पूज्य गुरुदेव भगवान द्वारा पल्लव पाकर महोत्सव मेले का समापन किया गया। महोत्सव में स्वामी जयदेव जी, सन्त नामदेव जी, सन्त दयाप्रकाश जी, सन्त प्रतापराय जी, सन्त मुरलीधर जी, आदर्श नगर अजमेर आश्रम के ट्रस्टीगण, सन्त बुध प्रकाश जी, सन्त रमेश प्रकाश जी, सन्त, हरीश प्रेम प्रकाशी, सन्त परसराम प्रेम प्रकाशी, सन्त श्रीमुक्त के अतिरिक्त अनेक गायक भक्त विद्वान भी सम्मिलित हुए। स्पेन से खुशी–बिन्दू के अतिरिक्त जयपुर, आगरा, अलीगढ़, कानपुर, पिनगंवा, दिल्ली, पलवल, मुरैना, डबरा, दतिया, झांसी, भोपाल, गोदिंया, से भी अनेकों प्रेमी मेले में सम्मिलित हुए। मेले का सीधा प्रसारण सांई बाबा डिस्क द्वारा क्षेत्र में प्रसारित किया जा रहा था। इस अवसर पर सांई बाबा डिस्क द्वारा प्रतिदिन प्रातः 8:30 से 10:00 बजे तक व कोमल कम्बाईन नेटवर्क द्वारा प्रतिदिन प्रातः 8:30 से 9:3 तक पूज्य स्वामी जी के कार्यक्रमों का प्रसारण करने की

घोषणा की गयी। नगर की बहु प्रसारित समाचार एजेन्सी "आजकल" द्वारा सिंधी में पूज्य स्वामी जी का साक्षात्कार भी प्रसारित किया गया। पूज्य स्वामी जी के श्रीमुख से निःसृत ज्ञान गंगा में आइये हम भी डुबकी लगायें। सद्गुरू महाराज जी बताते हैं–

कि तालाब अपना जल आप नहीं पीते, नदियाँ अपना जल स्वयं नहीं पीतीं, वृक्ष अपने फल स्वयं नहीं खाते और सन्तों महापुरुषों का अवतार किस कारण होता है। परमार्थ के कार्यों के लिए ही सन्तों ने शरीर धारण किया है एक होता है स्वार्थ याने अपना भला करना इसके अलावा किसी दूसरी बात पर ध्यान ना जाए। दूसरा होता है परमार्थ अपने साथ–साथ दूसरों का भी भला कैसे हो यह संत सोचकर आते हैं। स्वामी गणेशानन्द जी महाराज का जन्म उत्सव चल रहा है उन सन्तों महापुरुषों ने आकर के भक्ति और साधना के द्वारा अपने मन को पवित्र बनाया। प्रभु परमात्मा के चरणों में प्रीत लगाई। क्योंकि प्रीत याने प्रेम लगा कर उसे निभाना बहुत कठिन है। संसार में प्रेम लगाना सरल है किन्तु उसे अन्त तक निभाना बहुत कठिन है। जिसमें बीच में कष्ट होते हैं, विघ्न आते हैं, उन विघ्नों सें पार उतरना बहुत कठिन बात है।

जैसी लिंव पहले लगी, तैती निभए तोड़।
कह कबीर सो संत जन, तारे पुरुष करोड़।।

कबीरदास जी लिखते हैं कि जो प्रेम तुमने शुरू में लगाया वह अन्त तक निभ जाए बीच में जो विघ्न और कष्ट आते हैं उन विघ्नों में भी तुम्हारा चंचल मन जिसमें विश्वास थोड़ा होता है। कहीं कोई उल्टी बात नजर में आई परिस्थितियाँ थोड़ी विपरीत हुई तो मन का विश्वास डगमग हो जाता है। परन्तु उन सन्तों महापुरुषों का ईश्वर में पूर्ण विश्वास रहा भले कुछ भी हो जाए, मैंने अपने जीवन की डोर जिसके हाथ में दी अब यह उसकी मर्जी वह जिधर भी ले चले।

अब सौंप दिया इस जीवन का, सब भार तुम्हारे हाथों में।

भक्ति में सबसे पहला साधन है भगवान श्री कृष्ण ने अर्जुन को गीता में सुनाया कि अपने मन को मुझमें लगा।

शरण किसको कहते हैं ? हम कहते हैं कि सांई मैं शरण में हूँ परन्तु शरण के लक्षण कौन से हैं ? मन से उस ईश्वर की या सद्गुरु की ओट लेकर उनका आधार लेकर बाकी दूसरे विषयों को संसार से हटा लेवें, उसे कहते हैं शरण।

चारों तरफ से निराश होकर चरण कमल तव आन गहे।
और आसरा छोड़ सभी इक दर तेरे पर देख रहे।।
जून चौरासी फिर फिर स्वामी जनम मरण बहु दुख सहे।
कहे टेऊँ गुरु पार करो अब भव सिन्धु में हम जात बहे।।

सद्गुरु टेऊँराम महाराज अपनी अमृतवाणी में सद्गुरु के आगे प्रार्थना करते हैं कि अब कोई दूसरा भरवासा नहीं है। एक होता है अपना बल (शरीर का बल) दूसरा होता है धन का बल और मैंने आपकी ओट ली है। चारों तरफ से निराश होकर आपके चरण कमल गहे, इसे कहते हैं शरण। उन सन्तों महापुरुषों ने ओट ली आधार लेकर अपने जीवन को उन्होंने सफल किया। उनकी याद में जयन्ती मेले हमें भी जगाने के लिए आते हैं, कि परमात्मा ने जो शरीर दिया है, वह हमेशा के लिए नहीं है वक्त आने पर शरीर से भी वियोग हो जाऐगा। इसलिये सन्तों ने मन को समझाया कि थोड़ा तुम्हें वक्त मिला है, और उस वक्त को तुम यूं ही गंवा रहे हो।

फिर पछताए क्या होत है जब चिड़िया चुग गई खेत।

3 मार्च को प्रातः 7 से 9:30 बजे तक सत्संग के उपरान्त प्रातः 10 बजे पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली सहित मुरैना के लिए रवाना हुए, जहाँ पर सन्त प्रतापराय जी की माताजी के अन्तिम यात्रा में भाग लेने के उपरांत अपने पूर्व निर्धारित कार्यक्रम में डबरा आश्रम पर दोपहर 2 बजे पहुँचे।

डबरा में भी वही सत्संगामृत की ज्ञान गंगा

(3, 4 मार्च 2003)

ढीमरपुरा स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में पूज्य गुरूदेव भगवान स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सन्त मण्डली के पहुँचने पर डबरा के सिन्धी समाज, पूज्य सिन्धी पंचायत व प्रेम प्रकाश मण्डली द्वारा स्वामी जी का भव्य स्वागत किया गया। डबरा आश्रम में प्रातः 8 से 10 व सांय 5 से 7 बजे तक सत्संगानन्द की मौज में श्रद्धालु भीने रहे। 4 मार्च को भण्डारा कार्यक्रम में भी स्थानीय सिन्धी समाज द्वारा बढ़–चढ़ कर हिस्सा लिया

गया। डबरा आश्रम पर पूज्य स्वामी जी के सदुपदेशः–
''पंजई जिनजे पांद में आहिन रग–रग तिन जी रचाई''
उनके ऊपर जिन्होंने विजय प्राप्त की, बाहर से दिखने में भले ही कमजोर लगते हैं और स्वयं को शक्तिहीन दर्शाते हैं। अन्दर से अनका मन परमात्मा से रमा हुआ है–

''अन्दर में से पारस आहिन, ब्राहिर लोह सद्राइन था।
संत सच्चा संसार में हरदमु मन जीते सुखु पाईन था।।''

सत्गुरु टेऊँराम जी महाराज जी ने ईश्वर की भक्ति की, परमात्मा की भक्ति की, शक्ति होते हुए भी अपनी शक्ति का प्रदर्शन नहीं किया। चमत्कारों से दूर रहे। उन्होंने उनके ऊपर विजय प्राप्त की, इसलिये उन संत महापुरूषों का आज नाम है। अकेले खुद शहर से निकले तपस्या करने के लिये, भक्ति करने के लिये और इतने मेले लग गये। यह सब उनकी भक्ति का प्रताप है। उनकी शक्ति है। उनके साथ कोई भी साथी नहीं था–

वञी जोग़ी वेठो को झंग में। संगी साथी न कोई संग में।
रूह रंगजी वयो राम रंग में, हुई ओहम सोहम् धुनि अंग में
भुली भास वयो ताम आराम जो मिठो नालो हो साई टेऊँराम जो
जंही जाप जपायो सत्नाम जो ब्रेड़ो पार उतारियो आम जो...

अकेले होते हुए भी उन संत महापुरुषों ने भक्ति के द्वारा ईश्वर, परमात्मा को राजी किया। हम भी उनकी ओट लें।

''तुलसी'' लोहा काठ संग फिरत जल माहिं।
बड़े न डूबन देत हैं, जिनकी पकड़ी बाहिं।।

क्या उनसे मागें – कौन सी बातें उनसे मागें

क्या मांगू कुछ थिर न रहाई। देखत लोक चलयो सब जाई।।

कबीरदास जी ने लिखा– चारों तरफ पदार्थो पर मैंने नजर डाली तो वह देने वाला स्वयं मेरे सामने है। उनसे मैं क्या मागूँ। उनके भण्डार भरे हुए हैं। परन्तु ऐसी चीज माँगू। जिसके मांगने के बाद फिर यह विचार न हो कि उसके बाद कोई और अच्छी चीज माँगू। देने वाला मेरे सामने हैं–

खाली न मोटियो कोई, सत्गुरु जी दरबार ताँ।
सत्गुरु जी दरबार ताँ, सांई जी दरबार ताँ।।
गूंगों घनश्याम आयो दुखिड़ो दिल जो बुधायो।
मनजी पुकार बुधी सत्गुरु हो अरजु ओनायो।।
सतनाम साक्षी चवदों खिलदों वयो हिन द्वार ताँ।
खिलदों वयो हिन द्वार ताँ, साईं जी दरबार ताँ।।
भारी थी आई खाली, झोली भरयो गुर खाली।
खिटपिट घर माँ हटाए, खावंद कई खुशहाली।।
जोड़ो लालन जो पाए, वेही सा दातार खाँ।
वेही सा दातार खाँ, सत्गुरु जी दरबार ताँ।।

तो उनके भण्डार से हमें क्या मांगना है –

जहाँ सुमति तहाँ सम्पत्ति नाना।
जहाँ कुमति तहाँ विपत्ति निधाना।।

संसार के पदार्थ भी प्राप्त होते हैं। बड़े से बड़ी चीज है सद्बुद्धि एवं सुमति। उनका दान प्राप्त हो जए तो दुनिया के सभी पदार्थ स्वयं आ जावेंगे। संसार के पदार्थ मिल जायें पर सुमति की जगह कुमति आ जावे, तो क्या हाल होगा। उन पदार्थों से सुख के बजाय दुख मिलेगा। पल्लव का वक्त, प्रार्थना करें–

सत्गुरु दीनदयाल सुमति दीजिये मुझे मन की शुभकामनायें सत्गुरु महाराज जानते हैं। वे पूरी करेंगे एवं साथों साथ सद्बुद्धि व सुमति का दान। उनके चरणों में बैठकर प्रार्थना करें।

दतिया में भी सत्संग दर्शन के लिये उमड़े श्रद्धालु
(5 मार्च 2003)

ठण्डी सड़क स्थित स्वामी टेऊँराम धर्मशाला में स्थापित प्रेम प्रकाश आश्रम में डबरा से अमरापुर वाहन में प्रातः 8 बजे पूज्य गुरुदेव भगवान के पहुँचने पर पूज्य स्वामी जी व सन्त मण्डली का दतिया के सिन्धी समाज व धर्मशाला ट्रस्ट द्वारा हार्दिक अभिनन्दन किया गया। सांय सतसंग उपरान्त आम भण्डारे में भी उपस्थित सैकड़ों श्रद्धालुओं ने प्रसाद पाया। दतिया में प्रेमियों को भगवान्नाम का अमृत पिलाते हुए 6 मार्च को प्रातः 6 बजे मुरैना आश्रम के लिये पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली के साथ रवाना हुए। ग्वालियर के प्रवेश द्वार (नाका चन्द्रवदनी पर पूज्य स्वामी जी का स्वागत ग्वालियर प्रेम प्रकाश मण्डली द्वारा किया गया।

दर्शन सत्संग सेवा की त्रिवेणी में मुरैना वासी हुए सराबो
(6 से 8 मार्च 2003)

सिन्धी कॉलोनी स्थित स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्यपाद सद्गु

श्री स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज व प्रेम प्रकाशी सन्त मण्डली के पहुँचने पर हार्दिक स्वागत किया गया। 6 से 8 मार्च तक प्रतिदिन प्रातः 7:30 से 9:30 तक व सांय 5 से 7 बजे तक पूज्य स्वामी जी के दिव्य सत्संग दर्शन के अमृत से मुरैना का जन–जन लाभान्वित हुआ। पूज्य स्वामी जी अपने अमृत वचनों में प्रेमियों को सम्बोधित करते हुए कह रहे हैं।

बैठने वाले बैठ ही जाते, चलने वाले मंजिल पाते।
चलते चलना बैठ न जाना, तुम भी मंजिल पाना धीरे-धीरे।।
धीरे-धीरे प्रेम पंथ में, गुरुमुख पाँव बढ़ाना।
मगर बीच में एक पलक भी कांहू बैठ न जाना धीरे-धीरे।।
धीरे-धीरे प्रेम पंथ.............

बैठना किसको कहते हैं, संसार में किसकी आसक्ति है, संसार की बातों का हृदय पर बोझ, उसको संतों ने कहा बैठना। संसार के कार्यों के बाद भी जिसके नाम में वृत्ति लगती है उसे महापुरुष कहते हैं चलना। **''वेहु न मुसाफिर वाट ते खुली बंदर जी व बाजार अथई''** इस वक्त तुम्हें सौदा मिलेगा। वक्त गुजरेगा। वो बाजार बंद हुई तो तुम्हें वह सोदा मिलने वाला नहीं है। इसलिए सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी अवतार धारण कर सिंध के छोटे शहर खन्डु में हुआ और उन महापुरुषों का जन्म, उनके कर्म अलौकिक होते हैं।

जन्म, कर्म, च दिव्यम्, एवं योवेती तत्व तः।

भगवान कहते हैं कि भले मैं इंसान रूप में दिखाई पड़ता हूँ पर मेरे कर्म दुनियाँ से अलग रहते हैं मेरा जन्म भी अलग रहता है। गुरु महाराज जी ने भी बचपन से अपना रास्ता चुन लिया। अपनी गुरु की शिक्षा को उन्होंने हृदय में धारण किया कि जो तुम देख रहे हो जैसे वशिष्ट मुनि श्री राम जी को उपदेश देते हैं कि जब तक तुमने संसार को सत्य माना है तब तक ''नाम'' की बातें तुम्हारे हृदय में नहीं बैठेगी। जब तुम्हारे मन को पक्का विश्वास होगा कि संसार झूठा है। उसी समय नाम से जुड़ जाएगा। क्योंकि झूठ से कैसा मन झूठ के कौन से विचार करूं। जो पीछे भी झूठ, आज भी झूठ और कल भी झूठ होगा। उस झूठ के पीछे मैं अपना समय गंवाऊँ। अपने स्वास गंवाऊँ। स्वयं भी मन इन बातों से दूर होता जाएगा। तुम्हें अमृत चाहिए। अमृत भी तुम्हारे अंदर है, परन्तु तुम्हें मिलेगा तब, जब तुम्हारा मन संसार विषयों से हटे। संसार को झूठ मानकर नाम सुमरन में मन लगा ले। गुरुमहाराज जी कहते हैं।

विषय रूपी विष मेटण खातिर नालो तुहिंजो अमृत आ।
नाम जपे जिन अमृत पीतो, तिनताँ माँ बलिहार वञां।
सत्गुरु तुहिजें नालेताँ माँ वार वार बलिहार वञां।

जहर मीरा देवी को मिला वह जहर से अमृत बन गया। हमारे भी जीवन में जहर है। कौन सा ? संसार के जो कष्ट एवं दुख आते हैं पर नाम सुमरन के द्वारा वह जहर बदली होकर अमृत हो जाता है।

9 मार्च को प्रतः 6 बजे पूज्य स्वामी जी सन्त मण्डली के साथ मुरैनावासियों से विदा होते हुए आगरा के लिए प्रस्थित हुए।

यात्रा से संत हरिओम प्रकाश (ग्वालियर), संत परसराम, संत हरीशकुमार (जयपुर), सांवल प्रेमप्रकाशी (मुरैना), मोहन शिवनानी (अजमेर) एवं कार्यालय डेस्क।

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के मुख्य पर्व

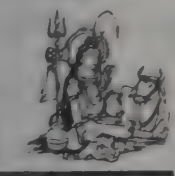
1. **सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज**
   जन्मोत्सव :– 1 जुलाई से 5 जुलाई 2003
   वर्सी उत्सव :– 12 मई से 16 मई 2003
2. **सद्गुरु स्वामी सर्वानन्द जी महाराज**
   जन्मोत्सव :– 5 अक्टूबर से 9 अक्टूबर 2003
   वर्सी उत्सव :– 30 जुलाई से 3 अगस्त 2003
3. **सद्गुरु स्वामी शान्ति प्रकाश जी महाराज**
   जन्मोत्सव :– 8 अगस्त से 12 अगस्त 2003
   वर्सी उत्सव :– 14 अगस्त 2003
4. **सद्गुरु स्वामी हरिदासराम जी महाराज**
   जन्मोत्सव :– 12 मई से 16 मई 2003
   वर्सी उत्सव :– 19 अगस्त से 23 अगस्त 2003

जयपुर चैत्र मेला
15 अप्रैल से 19 अप्रैल 2003

गुरु पूर्णिमा : 13 जुलाई 2003 (रविवार)
कार्तिकोत्सव : 27 अक्टूबर से 8 नवम्बर 2003

अमरापुर स्थान, जयपुर

श्री अमरापुर समाचार दर्शन



भोलेनाथ का प्रादुर्भाव

आचार्य श्री के जन्म दिवस के साथ महाशिवरात्रि महोत्सव सम्पन्न

भगवान शंकर जिसे भोले बाबा के नाम से भी जाना जाता है, का प्रिय दिवस शिवरात्रि जिसको कि हिन्दू धर्म के अनुयायीयों द्वारा श्रद्धा व उल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन सभी मन्दिरों में बम–बम भोले की जयजयकार गुंजयमान होती है।

सभी भक्तजन हाथ में बेलपत्र, कच्चादूध, फूल मालायें लिये शिवमन्दिर की ओर जाते दिखाई देते हैं। चारो ओर "जय भोले शंकर की" उद्घोष के स्वंर गुजति होते रहते हैं ऐसे ही महान शिवरात्रि को श्री अमरापुर स्थान की धरा धाम पर भी हर्षोल्लास के साथ मनाया गया।

1 मार्च एक तो आचार्य सद्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज के अवतरण का दिवस शनिवार व दूसरा शिवरात्रि का पवित्र दिवस आज तो श्री दरबार में प्रेमीगण अत्यधिक संख्या में आ रहे थे। प्रातः 7 बजे से बम–बम भोले की जयजयकार व प्रार्थना के स्वर के साथ महाशिवरात्रि उत्सव शुरु हुआ। श्री दरबार के शांत वातावरण में भोले शंकर की जयजयकार के स्वर उद्घोषित हो रहे थे।

सत्संग मचं पर एक अत्यधिक आकर्षक भोले बाबा की झांकी सजाई गई थी। चारों तरफ कपास के बने पहाड़ जिसमें भगवान शंकर विराजमान थे। और उन की जटाओं से जल की धारा प्रवाहित हो रही थी। चारों ओर पुष्पों की आकर्षक सजावट की गई थी। प्रेमीगण मंत्रमुग्ध होकर इस आकर्षक झांकी को देखकर मनमुग्ध से हो गये थे।

इस आकर्षक झांकी के दर्शन के पश्चात् श्री समाधि स्थल की सजावट भी आज कम नहीं थी। पूरा का पूरा समाधि स्थल पुष्पों की मनोहरकारी सजावट व सुगन्ध से प्रफुल्लित हो रहा था। वहीं श्री मन्दिर में भी आज गुरु महाराज की प्रतिमा की आभा देखकर प्रेमीगण मन मोहित हो उठे।

प्रार्थना के पश्चात् पुजारी प्रताप राय, भगत भोजराज, संत मोनूराम जी ने गुरु महाराज व भोले बाबा की महिमा का गुणानुवाद किया और बताया कि–

सभी को अपने अपने इष्टदेव प्रिय हैं

भजनः **किसे राम प्यारा, किसे प्यारा श्याम।**
हमें तो प्यारा लागे, बाबा टेऊँराम।।

हमारे आचार्य श्री भी भोलेबाबा के ही अवतार थे। माँ कृष्णा को उन्होंने स्वप्न में दर्शन दिये और कहा कि "मैं अशांवतार लेकर आपके पास आ रहा हूँ"

तब स्वयं भगवान ने अवतार लिया था तभी सन्तों ने भजन में बताया कि –

तोखे स्वामी टेऊँराम चवां या शंकर जो अवतार चवां।
तुहिंजी अमरापुर कैलाश चवां या स्वर्गपूरी जो द्वार चवां।।
सद्गुरू टेऊँराम स्वामी, शंकर जो अवतार हुयो........

इसी प्रकार सन्तों के अमृत सत्संग प्रवचन के पश्चात् श्री दरबार के परिसर में बने हवन कुण्ड पर 8 से 9 बजे तक सन्त श्री ने वैदिक मंत्रोच्चारण कर हवन किया। हवन कुण्ड में अन्तिम आहुति देकर सभी सन्तगण व प्रेमीगण श्री दरबार के बाहरी परिसर में बने अमरापुरेश्वर महादेव मन्दिर में एकत्रित हुए, मन्दिर में पुष्पों के द्वारा मनोहरकारी सजावट की गई थी।

वहीं पास में कपास के बर्फीले पहाड़ बनाये गये। जिसमें भगवान शंकर के परिवार को विराजित किया गया था। मरोहरकारी सजावट करके इतना आकर्षक बनाया गया कि सभी प्रेमीगण इसको देखने के लिये लालायित हो रहे थे।

संत श्री ने मन्दिर में ध्वजा वन्दन गाकर ध्वजा रोहित की और पंचामृत बिल्वपत्र दुग्ध आदि द्वारा अभिषेक कर नूतन वस्त्र पहनाये गये, तत्पश्चात् आरती बोलकर इस कार्यक्रम का समापन किया गया। इसके बाद सभी प्रेमीगण कतारबद्ध होकर भगवान शंकर का अभिषेक करने लगे दोपहर 11 से 1 बजे तक आम भण्डारा हुआ जिसमें श्रद्धालुओं ने प्रसाद ग्रहण किया।

इसी प्रकार सांय काल 4:30 से 6:30 बजे तक भक्ति संध्या सत्संग आचार्य श्री व भोलेनाथ की महिमा का त्याख्यान, आरती सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप आदि द्वारा महाशिवरात्रि महोत्सव का सम्पन्न हुआ।

गुड़िया भरत जेठवानी, जयपुर

ख़ास बातें

1. समाधि स्थल पर पुष्पों का श्रृंगार।
2. श्री मन्दिर में भोलेबाबा के जटाओं से गंगा की धार बहती हुई व आचार्य श्री की विशेष झांकी बनाई गई।
3. बर्फीले पहाड़ में विराजमान शिव परिवार आदि आर्कषण का केन्द्र थी।
4. रंगोली भी आकर्षण का केन्द्र रही।

सत्‌गुरु भजन मण्डली द्वारा विशाल सत्संग का आयोजन हुआ

सत्‌गुरु भजन मण्डली द्वारा गुरुनानक कॉलोनी जयपुर में विशाल सत्संग समागम का आयोजन 25 फरवरी 2003 को किया गया। इस शुभ अवसर पर परम पूज्य सत्‌गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज व सतं मण्डली का स्वागत, फूलों की बरसात से व बैंड बाजों से किया गया। तथा संत मण्डली के प्रवचनों के बाद सत्‌गुरु महाराज ने अपने प्रवचन किये–

मन में आ विश्वास त सत्‌गुरु हरदम तोसां साणी आ
ईहा सत् पुरुषनिन जी वाणी आ
द्रोपदीअ पुकारियो हो-सिक सां संभारियो हो नेणनि में नीरु भरे
किथि द्वारका नगरी झटि प्रघटु थ्यो हरी वग़ुनि जो वेसु धरे।
बुधु तूं ध्यान धरे मन हीअ कूड़ी कान कहाणी आ।
ड्रिसुहो सेनो नाई जहिं प्रीत पकी पाई।
सन्तनि जी ओट बरती।
सेवा में रंगजी व्यो नौकरी भुलिजी।
प्रभुअ तहिंजी पैज रखी।
नंगु पाले पहिंजो प्रभूअ जी रीत हीअ पुराणी आ।

उन्होंने बताया कि "इस जग के प्राणी ईश्वर (प्रभु) को भी स्वार्थ से मानते हैं। दुख आने पर तो वो ईश्वर को याद करते हैं और उनका स्मरण करते हैं तथा सुख में ईश्वर का ध्यान भी नहीं करते है। स्वामी जी ने यह भी बताया कि आजकल के बच्चों को टी.वी. व टेप से फुरसत ही नहीं मिलती है। परन्तु इन सत्‌गुरु भजन मण्डली के बच्चों ने तो सत्‌गुरु टेऊँराम महाराज की कृपा से कुछ कर दिखाया है" और गुरु महाराज ने आशीर्वाद का भजन गाया व धुनी लगाकर आरती की। सत्‌गुरु भजन मण्डली के सदस्यों : सुरेश (छोटू), हेमन्त, राहुल, राजेश, कमल, हरीश, अमित, भावेश, हेमन्त (हेमू), प्रदीप इन सभी को पाखर पहिना कर आशीर्वाद देकर आगे बढ़ने की कामना की। उसके बाद प्रसादी का वितरण हुआ।

सुरेश प्रेमचन्दानी, जयपुर

दादा आसूराम जी महाराज की वर्सी उत्सव सम्पन्न

खैरथल :- सद्‌गुरु स्वामीं टेऊँराम जी महाराज के गुरुवर पूज्य दादा आसूराम जी महाराज की वर्सी उत्सव खैरथल में स्थित प्रेम प्रकाश आश्रम पर सम्पन्न हुई।

19 फरवरी को प्रातः 7 से 10 तक प्रार्थना सत्संग आदि का आयोजन हुआ। सांय 5 से 6 बजे कॉलोनी में **"संकीर्तन यात्रा"** निकाली गई। जिसमें दादा आसूराम जी महाराज, सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज की प्रतिमाओं व संकीर्तन यात्रा के चौपहिया वाहनों को बड़े सुन्दर रूप से सजाया गया था।

संकीर्तन यात्रा में संत मुरलीधर (खैरथल), संत मोनूराम (जयपुर), संत राममुक्त, दादा तीर्थदास व खैरथल के आस–पास ग्रामीण क्षेत्रों के भक्तजनों ने भाग लिया। लगभग 1 घण्टे की संकीर्तन यात्रा की समाप्ति के पश्चात् सत्संग आरती का कार्यक्रम हुआ। इसी प्रकार 20 फरवरी गुरुवार को भी प्रातः 7 बजे प्रार्थना सत्संग का शुभारम्भ हुआ। जिसमें सन्तों द्वारा बताया गया कि–

"मन में आ विश्वास, सद्‌गुरु अंग संग तोसा साणी आ, ईहा संत पुरुषनि जी वाणी आ" जिसका गुरुदेव पर विश्वास है तो सदैव गुरुदेव उनकी रक्षा करते हैं। मन में पक्का विश्वास होना चाहिए।

सद्‌गुरु टेऊँराम जी महाराज ने भी गुरुदेव दादा आसूराम जी महाराज की सेवा की। उनकी सेवा के प्रताप से आज चहुँ ओर गुरुदव का नाम है।

"घर घर में तस्वीर ड्रिसा थो, स्वामी टेऊँराम जी।
टुकड़ी वेही कींअ अघामी, स्वामी टेऊँराम जी।।"

सत्संग के पश्चात् पाठ साहब का भोग–सोल्ह शिक्षाएं आरती एवं विशाल आम भण्डारे का आयोजन हुआ। जिसमें हजारों श्रद्धालुओं ने श्रद्धा पूर्वक प्रसाद ग्रहण किया। सांय काल 5 से 7 बजे तक सत्संग आरती व पल्लव पाकर उत्सव का समापन किया गया।

श्री अमरापुर स्थान जयपुर

सत्संग समय सारणी

प्रतिदिन सत्संग का समय

प्रातः 7 से :20 तक प्रार्थना-सत्संग प्रवचन
सांय 4:30 से 6 तक भक्तिसंध्या सत्संग

आरती

सांय 6 से 6:20 तक

प्रत्येक रविवार

प्रातः 7 से 9:30 प्रार्थना सत्संग-प्रवचन कैसेट
सांय 4:30 से 6:30 तक सत्संग-भजन-आरती

गुरूवार व शनिवार

प्रातः 7 से 8:30 तक सत्संग-गुरू प्रार्थनाष्टक का पाठ
सायं 4:30 से 6:30 तक भजन संध्या - सत्संग
आरती, सत्नाम साक्षी महामंत्र का जाप

प्रत्येक गुरूवार व शनिवार को सांय 5 से 8:30 तक समाधि स्थल पर पुष्पों की झाँकी का दर्शन करें।

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

जयपुर में
श्री प्रेम प्रकाश मण्डल का
82 वाँ चैत्र मेला

15 अप्रैल से 19 अप्रैल 2003 तक

मेला स्थल

श्री अमरापुर स्थान, एम.आई.रोड,
जयपुर-302 001

ॐ श्री सत्नाम साक्षी

श्री अमरापुर स्थान जयपुर में
होली महोत्सव
मंगलवार
18 मार्च 2003

प्रातः 7:00 से 10:00 तक

प्रार्थना - सत्संग - पूज्य महाराज श्री की होली महिमा प्रवचन कैसेट, गुरू महाराज की प्रतिमाओं की कूंगू-कैसर व गुलाल से पूजा-अर्चना एवं आरती आदि का आयोजन होगा।

प्रेम प्रकाश आश्रम इन्दौर में

पूज्य स्वामी मुरलीधर महाराज
पूज्य स्वामी गंगाराम जी महाराज
पूज्य स्वामी चेतन प्रकश जी महाराज
का

वार्षिक वर्सी उत्सव

25 अप्रैल से 29 अप्रैल तक

पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज की अध्यक्षता में

आयोजन स्थल

स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम,
काटजू कॉलोनी, इन्दौर (म.प्र.)
फोन : 0731-2468140, 2300140

शोक समाचार

मुरैना :– स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम सिन्धी कॉलोनी मुरैना के व्यवस्थापक सन्त प्रतापराय जी की माताजी सन्त जयदेवजी (दिल्ली) की बहिन, सन्त शंकर प्रेमप्रकाशी (जयपुर), सन्त दिलीप प्रेमप्रकाशी (बड़ौदा) की नानी जी श्रीमती हीरूलबाई लगभग 72 वर्ष की आयु पूर्ण कर 2 मार्च को सांय 6:45 बजे अमरापुर धाम सिधारीं। सन्त सेवी श्री गोविन्दराम जी की धर्मपत्नि श्री हीरूलबाई का पूरा परिवार धर्मयुक्त होकर सन्त सेवा में सदैव संलग्न है। श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष पूज्य गुरुवर स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज, सन्त जयदेव जी, सन्त नामदेव जी, सन्त दया प्रकाश जी, सन्त हरीओम प्रकाश जी भी माता हीरूलबाई की अन्तिम यात्रा (3 मार्च दोपहर 12 बजे) में सम्मिलित हुए।

ब्यावर :– दादी रूक्की माँ के नाम से ख्याति प्राप्त माता श्रीमती हेजीबाई धर्म पत्नी स्वर्गीय श्री नारायण दास जी 31 जनवरी 2003 शुक्रवार को श्री सद्गुरु महाराज के पावन श्री चरणों में श्री अमरापुर धाम सिधारीं। दादी रूक्की माँ महिला मण्डली साकेत नगर ब्यावर में काफी लम्बे अर्से से श्री गुरूदेव भगवान के भजन सत्संग कीर्तन का नित्य आयोजन रहता है।

ग्वालियर। स्थानीय स्वामी टेऊँराम प्रेम प्रकाश आश्रम में प्रेम प्रकाश महिला मण्डली की प्रमुख कीर्तनकार भजनीक पप्पीदेवी (लतादेवी) के पतिदेव श्री अशोक कुमार जी सिधवानी लगभग 40 वर्ष की अल्पायु में एक हृदय विदारक सड़क दुर्घटना में 6 मार्च 2003 को सांय 5:30 बजे अमरापुर धाम सिधारे, इस समचार से प्रेम प्रकाश आश्रम, ग्वालियर का पूरा परिवार स्तब्ध रह गया। 7 मार्च को दोपहर 1 बजे मुरैना से पूज्य सद्गुरु स्वामी भगत प्रकाश जी महाराज, सन्त हरीओम प्रकाश जी, सन्त दया प्रकाश जी, सन्त प्रतापराय जी भी सन्त मण्डली के साथ श्री अशोक कुमार जी के अन्तिम यात्रा में सम्मिलित हुए एवं शोकाकुल परिवार को ढाँढस बंधाया।

प्रेम प्रकाश संदेश परिवार दिवगत आत्माओं के प्रति शोक श्रद्धाजंलि व्यक्त करता है।

तीज-त्यौहार

17	मार्च	2003	सोमवार	होलिका दहन, पूर्णिमा, सत्यनारायण व्रत
18	मार्च	2003	मंगलवार	होली, धुरेण्डी, होलकाष्टक समाप्त, स्नान दान की पूर्णिमा
20	मार्च	2003	गुरूवार	भाईदूज
21	मार्च	2003	शुक्रवार	श्री गणेश चौथ व्रत
22	मार्च	2003	शनिवार	श्री रंगपंचमी
28	मार्च	2003	शुक्रवार	पापमोचिनी एकादशी व्रत
1	अप्रैल	2003	मंगलवार	स्नानदान-श्राद्ध की अमावस्या
2	अप्रैल	2003	बुद्धवार	बासंती नवरात्रारम्भ
3	अप्रैल	2003	गुरूवार	चन्द्र दर्शन, चेटी चण्ड, भगवान झूलेलाल जयन्ती
5	अप्रैल	2003	शनिवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत
7	अप्रैल	2003	सोमवार	चौथ, सतगुरू टेऊँराम जन्मदिवस (मासिक)
10	अप्रैल	2003	गुरूवार	श्री दुर्गाष्टमी व्रत
11	अप्रैल	2003	शुक्रवार	श्री रामनवमी
13	अप्रैल	2003	रविवार	कामदा एकादशी व्रत
14	अप्रैल	2003	सोमवार	मेष संक्रान्ति, वैशाखी
15	अप्रैल	2003	मंगलवार	चैत्र मेला आरम्भ जयपुर में
16	अप्रैल	2003	बुधवार	पूर्णिमा-सत्यनारायण व्रत, श्री हनुमान जयंती
19	अप्रैल	2003	शनिवार	श्री गणेश चतुर्थी व्रत, चैत्र मेला समापन
27	अप्रैल	2003	रविवार	वरूथिनी एकादशी व्रत





श्री प्रेम प्रकाश मण्डलाध्यक्ष

पूज्य गुरूवर स्वामी भगतप्रकाश जी महाराज का यात्रा कार्यक्रम

15 मार्च से 18 मार्च	2003	तक	हरिद्वार	☎ 01334-260144, 260815
19 मार्च	2003		दिल्ली से बरेली एक्सप्रेस में यात्रा	☎ 098290-14850
20 मार्च से 22 मार्च	2003	तक	गांधीधाम	☎ 02836-211001, 31612
23 मार्च से 24 मार्च	2003	तक	राजकोट	☎ 2455250, 098290-14850
25 मार्च से 26 मार्च	2003	तक	जामनगर	☎ 098290-14850
27 मार्च	2003		द्वारिका	☎ 02891-233215, 098290-14850
28 गार्च	2003		सोमनाथ, जेतपुर	☎ 098290-14850
29 मार्च	2003		भावनगर	☎ 0278-567920, 98252-05783
30 गार्च से 1 अप्रेल	2003	तक	अहगदाबाद	☎ 079-2863900, 2869816
2 अप्रेल से 3 अप्रेल	2003	तक	जयपुर	☎ 0141-2372423, 2372424
4 अप्रेल रो 6 अप्रेल	2003	तक	पाली, जोधपुर	☎ 098290-14850
7 अप्रेल से 22 अप्रेल	2003	तक	जयपुर (चैत्र मेला)	☎ 0141-2372423, 2372424
23 अप्रेल	2003		देवास	☎ 098290-14850
24 अप्रेल से 29 अप्रेल	2003	तक	इन्दौर (स्वामी मुरलीधर वर्सी)	☎ 0731-2468140, 2300140
30 अप्रेल से 1 मई	2003	तक	रतलाम	☎ 07412-240229
2 मई से 8 मई	2003	तक	दिल्ली (स्वामी जयप्रकाश वर्सी)	☎ 011-23969774, 23942126
9 मई से 10 मई	2003	तक	लखनऊ	☎ 0522-2211901, 2213819
11 मई से 16 मई	2003	तक	कानपुर (सद्गुरु हरिदासराम जयन्ती)	☎ 0512-2215747
17 मई से 19 मई	2003	तक	इलाहाबाद	☎ 0532-2655214
19 मई से 21 मई	2003	तक	वाराणसी, बनारस	☎ 0542-225585
22 मई से 23 मई	2003	तक	फैजाबाद	☎ 05278-246159
24 गई	2003	तक	बइराईच	☎ 098290-14850

प्रेम प्रकाश संदेश का

नाम महिमा

चैत्र मेला विशेषां

आचार्य श्री सदगुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज, सदगुरुओं व सन्तों, शास्त्रों ने नाम महिमा का अनन्त गुणगानुवाद किया नाम की नौका पर चढ़ कर इस भवसिन्धु की वैतरणी को अनेक भक्तों ने पार किया है **''नाम-महिमा''** द्वारा पूज्य सदगुरु गहारा पूज्य सन्त मण्डल, सत्शास्त्र हमें किस प्रकार मानुष देह के माध्यम से मुक्ति मार्ग की ओर ले जाने का प्रयास करते हैं। इस चैत्र अवसर पर आप प्रेम प्रकाश सन्देश के वार्षिकांक **''नाम-महिमा''** में पढ़ सकेंगे।

विशेष सूचना

जिन सदस्यों की वार्षिक शुल्क अवधि फरवरी, मार्च, अप्रैल 2003 में पूरी हो गयी है वे सदस्य चैत्र गेले के अ पर श्री अमरापुर स्थान, जयपुर में हमारे काउन्टर पर शुल्क जमा करा कर अपनी प्रति प्राप्त करें। *व्यवस्था*

पंजी-सिख्या

सर्व जीवों के करो हित, निन्दा किसकी ना करो।
ना बुरा चाहो किसी का, भाव शुद्ध हृदय धरो।।

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम जी महाराज जिनि पंजी सिख्या में चवनि था इन्सान खे सभनी जीवनि जो भलो करण घुरजे ऐं कंहिंजी बि निंदा न करण खपे। वीर रस, सिंगार रस, हास्य. रस ऐं ब़िया केतराई रस पैदा करण वास्ते कवियुनि खे कविताऊँ रचणियूं पवंदियूं आहिनि पर निंदा रस पैदा करण वास्ते न कंहिं कवीअ जी ज़रूरत आहे ऐं न ही कंहिं कविता जी। बस ब़ ज़णा पाण में गडु हुअण घुरजनि ब़ुधण वारे जे कन में निंदा जी माखी पवण शुरु थींदी आहे ऐं ब़ुधाइण वारे जे वात मां टपकण शुरू थींदी आहे। निंदा जे रस में एड़ी ताकत आहे जो ब़िन मां चार ऐं चइन मां चोदंह माण्हू गडजी विंहंदा पर न त को निंदा ब़ुधी थकंदो ऐं न ही को निंदा करे थकंदो। लगे थो त सभनी इंसाननि खे निंदा रस जी रचना करण ऐं उपयोग करण में महारत हासिलु आहे।

निंदा करण जो सबब छो थो पैदा थिए ? छो इंसान पाण खे ब़ियनि इंसाननि ऐं जीवनि खां अलग थो समझे ? अलग समझण जो सबब आहे, परिच्छिनता शरीर में सभेई अंग अलग–अलग आहिन छा, उहे पाण में हिक ब़िए खां अलग–अलग थी करे रही सघनि था ? जवाब आहे, न ! जीअं शरीर जा अंग अलग–अलग हूंदे बि हिकु ही आहिन। अगर पेर जी गलतीअ सबब माण्हू खदे में किरी पवे ऐं हुनजो मथो फाटी पवे, त छा ? माण्हू पेर खे सज़ा ड़ींदो ? सोचींदो त बीठल ही पेर ते आहियां पेर में ज़रुर का कमजोरी हूंदी ऐं माण्हू मथे सां गडु पेर जो बि इलाज कराईदो। पर संसार में इएं नाहे। संसार जे मथे तबके खे ख़बर ही नाहे त संसार जे हेठिएं तबके ते हू बीठल आहिनि।

शरीर खे हिक इकाई समझण वारो इंसान दुनिया खे हिक इकाई न समझण जी भुल करे वेठो आहे। इन करे धरतीअ ते कल्पना जूं रेखाऊं कढी करे द्वीप महाद्वीप, राष्ट्र, प्रांत ऐं राज्य रचिया विया आहिन। निंदा जो त ऐड़ो वड़ो असर आहे जो हिकु माण्हू–ब़िए माण्हूअ जी हिकु परिवार ब़िए परिवार जी, हिक राष्ट्र ब़िए राष्ट्र जी निंदा करे रहियो आहे।

सत्गुरु स्वामी टेऊँराम महाराज जिनि ब़ी सिट में चवनि था त कंहिंजो बुरो न सोचियो ऐं दिल में शुद्ध वीचार धारण करियो। शुद्ध वीचार वधण सां इंसान खे इहा ज़ाण पवंदी त मुंहिंजी का अलग हस्ती नाहे, मां जंहिंखे मां करे या मुंहिंजी करे समझां थो इएं हक़ीक़त कोन आहे। सभकुझ मां आहियां ऐं सभेई मूं में आहिनि।

आज़ादीअ जी लड़ाई हिन्दू मुसलमान इहोई शुद्ध वीचारु रखी करे लड़िया पर आज़ादी मिलण खां पोइ पाकिस्तान, हिन्दुस्तान ठाहे दुश्मन थी पिया। वरी पाकिस्तान जा बि ब़ टुकड़ा थिया। छो ? छो त मन शुद्ध वीचार धारण करण बदिरां बुड़ा वीचार धारण कया। संसार में हीउ जेकी परिच्छनता यानी भेद ड़िसण पियो अचे उहो फक्तु शुद्ध वीचार ऐं बुड़े वीचार करे ही आहे। अगर शरीर जे अंगनि में बुड़ा वीचार अची वञनि त सजो शरीर जंग जो मैदान बणिजी पवंदो ऐं ड़ाढो दुखी थी पवंदो। इंसान लाइ ड़ाढो दुखियो थींदो शरीर जे सभनी अंगन खे समझाइण त हू सभेई हिक इकाई आहिन।

अहिड़ीअ रीत हिन संसार खे बि ड़ाढी दुखाई आहे त हू सभनी जीवन खे कीअं समझाए त हीउ सजो संसार हिकु आहे। इनजो तरीको आहे त संसार में कुझ माण्हुनि जे मन में शुद्ध वीचार अचनि ऐं उहे शुद्ध वीचार फैलजनि जंहिंसां सभनी जीवनि में निंदा जी ऐं ब़िये जे बुरे चाहिण जी भावना खतम थिए इंसान जीवनि जो भलो सोचे मन में शुद्ध वीचार रखे। जिनि जे मन में रुगा शुद्ध वीचार अचनि था से सत्गुरु ऐं संत आहिनि उहे ही शुद्ध वीचार फैलाए कल्याण कनि पिया। उम्मेद आहे त असां सत्गुरु जी हिन सिख्या खे हंडाए मन में शुद्ध वीचार पैदा करे निंदा रस खे त्यागे सभनी जे भले जो सोचे पंहिंजे सही रूप जो साक्षात्कार हासिलु करण जी कोशिश कंदासूं। इनसां असांखे संसार जे दुखी जीवनि जो भलो करण जी भावना ऐं सघ बि मिलंदी छो जो शुद्ध वीचारनि जे अचण करे सजो संसार हिक शरीर वांगुर लगंदो ऐं महसूस थींदो त असां पंहिंजो पाण पंहिंजे शरीर जी सेवा करे रहिया आहियूं।

गोविन्दराम "माया" जयपुर

डाक रजि. ग्वालियर संभाग–161/2003-05 (R.M.S. Posting date 15th & 16th)

भा.शा.रजि.–29/18/81-II

क्रोध

(१) क्रोध मूर्खता से आरम्भ होता है और प्रायश्चित पर समाप्त होता है।

(२) क्रोध से वही इन्सान सबसे अच्छी तरह बचा रहता है, जो ध्यान रखता है। कि भगवान उसे देख रहा है।

(३) क्रोध में मनुष्य अपना ही मांस काटने लगता है।

(४) क्रोध के सिंहासन पर बैठते ही बुद्धि वहाँ से खिसक जाती है।

(५) जो मन की पीड़ा को स्पष्ट रूप में कह नहीं सकता, उसी को क्रोध अधिक आता है।

(६) क्रोधी व्यक्ति को एक बार पुनः अपने ऊपर क्रोध आता है, जब उसे समझ आती है।

(७) किसी के प्रति मन में क्रोध लिए हरने की अपेक्षा उसे तत्क्षण प्रकट कर देना चाहिए।

(८) क्रोध की सर्वोत्तम औषधि विलम्ब है।

(९) क्रोध दिमाग के दीप को बुझा देता है।

(१०) किसी के प्रति मन में क्रोध लिए रहने की अपेक्षा उसे तत्क्षण प्रकट कर देना अधिक अच्छा है जैसे क्षण भर में जल जाना देर तक सुलगने से अधिक अच्छा है। (वेद व्यास)

(११) क्रोध से मूढ़ता उत्पन्न होती है। मूढ़ता से स्मृति भ्रष्ट हो जाती है। स्मृति भ्रष्ट होने से बुद्धि का नामश होता है। और बुद्धि के नष्ट होने पर प्राणी नष्ट हो जाता है। (भगवान श्री कृष्ण)

(१२) जो मनुष्य अपने क्रोध को अपने ही ऊपर झेल लेता है वह दूसरों के क्रोध से बच जाता है। (सुकरात)

(१३) क्रोध एक प्रचंड अग्नि है जो मनुष्य इस अग्नि को वश में कर सकता है वह उसको बुझा देगा। जो मनुष्य अग्नि को वश में नहीं कर सकता वह स्वयं अपने को जला लेगा। (इंगरसोल)

(१४) क्रोध मस्तिष्क के दीप को बुझा देता है। (कन्फ्यूशियम)

(१५) जब क्रोध आए तो उसके परिणाम पर विचार करो।

(१६) बुद्धिमानों ने अपनी लौकिक उन्नति पारलौकिक सुख और मुक्ति प्राप्त करने के लिए क्रोध पर विजय प्राप्त की है।

अर्जुनदास दयानी, कोट

सूचना



समस्त सम्माननीय ... सूचनार्थ उनके प्रेषण पते के ऊपर सदस्यता क्रमांक रसीद संख्या व शुल्क अवधि लिखी हुई है, कृपया उसे अच्छी तरह देख कर अपनी सदस्यता शुल्क अवधि समाप्त होने से पहले ही अपनी सदस्यता का नवीनीकरण सदस्यों को करा लेना चाहिए। — व्यवस्थापक

सदस्यता क्र.

श्रीमान

PH 4832-15060-7/2004
श्री किशनचंद बूटानी
ई-19, मधुवन कॉलोनी, नाका मदार,
अजमेर, राजस्थान

श्री प्रेम प्रकाश मण्डल के लिये श्रीचंद पंजवानी द्वारा ओमनी व प्रिन्ट लेजर कॉम से सज्जा करवाकर ओंकार ऑफसेट, दौलतगंज, से मुद्रित करवाकर कार्यालय स्वामी सर्वानन्द सेवा समिति, प्रेम प्रकाश आश्रम, गाढवे की गोठ लश्कर, ग्वा. से प्रकाशित किया गया। **सम्पादक :** शंकरलाल सबनानी, फोन : 2327427, श्रीचंद पंजवानी, फोन : 245418